अक्तूबर 2008 ■ Rs.15/-

चन्दामामा

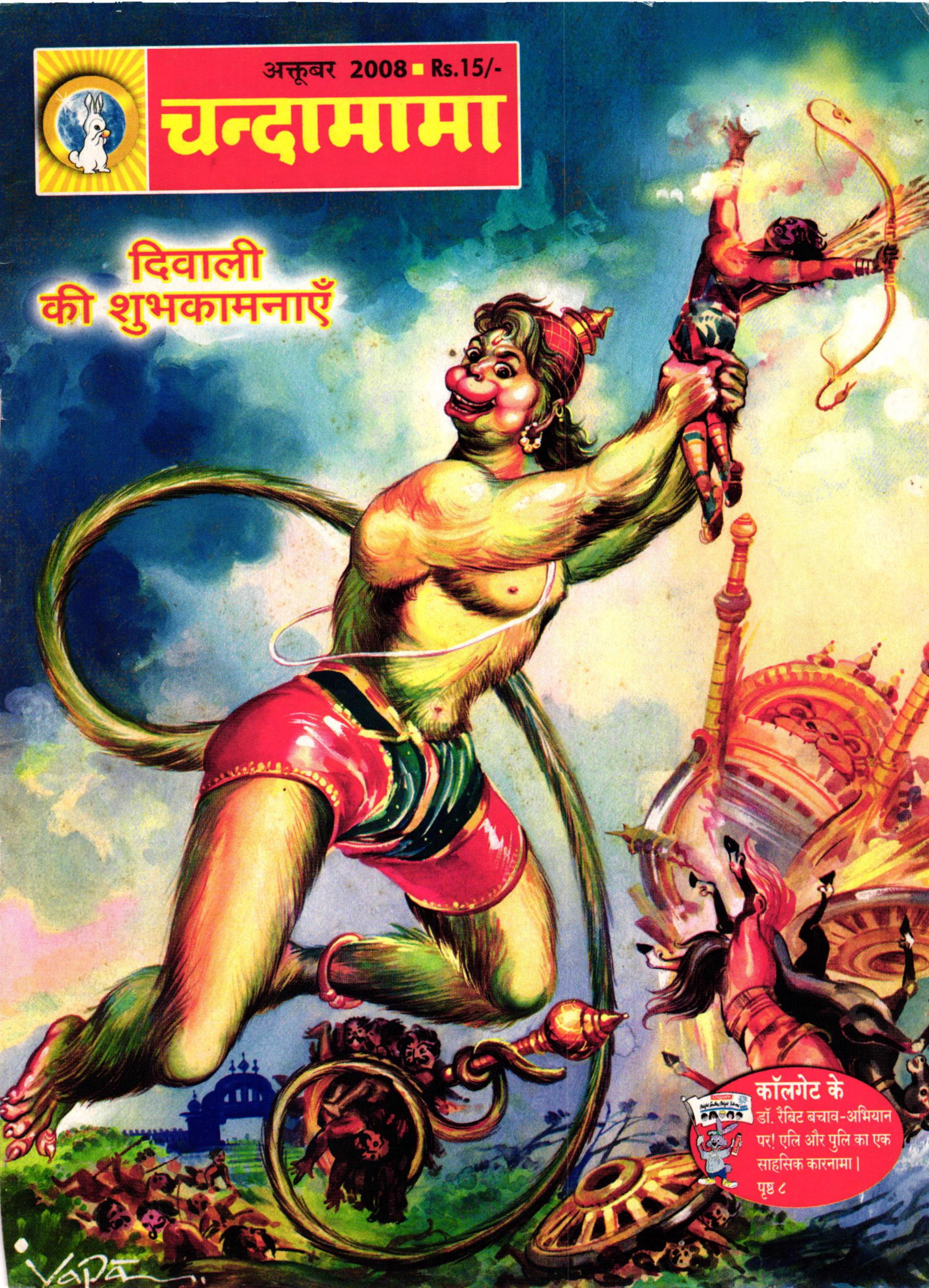

BRITANNIA
Eat Healthy, Think Better
Treat™
स्केरी टीथ + नेल्स
सभी 5 गेम्स जुटाइए
FREE*
BANO FUNTOON!!
GAMES INSIDE
मैजिक इंक
मैजिक बुक
Treat
Masti Orange

HERCULES MTB TURBODRIVE

RIDE YOUR PASSION

ATOM

GEARED FOR ACTION STYLED FOR FUN

Introducing Hercules Atom, the rugged new MTB with **an integrated carrier, front & rear shox, an 18 speed Shimano gear system and a low step-thru frame**. Don't settle for anything less.

Solve the puzzle below, complete the slogan and win amazing prizes!

1st prize : Hercules Atom bicycle for 3 winners
2nd prize : Football for 50 winners
3rd prize : Water sipper for 100 winners

Fill in the details below and send your entries to:
The Brand Manager, TI Cycles of India, Post Bag No. 5, Ambattur, Chennai – 600 053.

Gear up! Set those wheels in motion, and count the number of gears in the visual: ______

I love my Hercules MTB because ______

Name: ______ Age: ____ Date of Birth: ______
Address: ______
Tel: ______ Class & Section: ______
School & Branch: ______

To participate online, log on to **www.ticyclesindia.com**

Terms & conditions apply.

चन्दामामा सम्पुट-५९ अक्तूबर २००८ सञ्चिका-१०

विशेष आकर्षण

विचित्र प्रेम
(वेताल कथाएँ) ...१९

मध्यप्रदेश की
एक लोक कथा ...३५

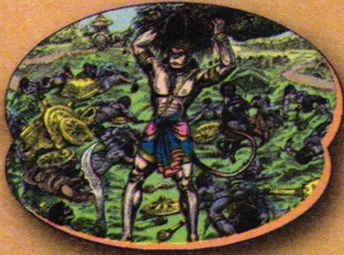

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक
घटनाएँ-१३ ...४२

रामायण
(सुन्दर काण्ड-५) ...५७

अंतरंग

* पाठकों का पन्ना ...०६
* लाइट्स ! कैमरा ! ऐक्शन! सी सी डी ओ ! ...१०
* पाताल दुर्ग-३ ...१३
* समाचार झलक ...२५
* इंद्रजित ...२६
* भारत दर्शक ...३०
* कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी-१६ ...३१
* महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-३४ ...३९
* भारत के ओलम्पिक पदकधारी ...४६
* बीरबल की कहानियाँ-१४ ...४८
* जातक कथा ...५३
* कठिन कार्य ...६३
* भारत के धरोहर स्थल ...६६
* असली सुंदरता ...६७
* चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-९ ...७१
* बच्चे अखबार की सुर्खियों में ...७२
* आप के पन्ने ...७३
* चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...७४

अमर वाणी

सब लोगों के द्वारा प्रशंसा करने योग्य शीलवान के लिए अग्नि पानी जैसा है, मेरुपर्वत शिलाखण्ड जैसा है, सिंह उसके लिए हिरण के समान, सर्प पुष्पमाला जैसा और विष अमृततुल्य है।

बुद्धिमान का अगर पतन हो जाता है, तो वह गेंद की तरह फिर ऊपर उछलता है, पर मूर्ख का पतन होता है तो मिट्टी के ढेले की भाँति वह वहीं पड़ा रहता है।

खेल-कूद में भारत का स्थान कहाँ है?

बीजिंग में २९ वें ओलम्पिक खेलों में १६ दिनों तक खेलकूद के शानदार प्रदर्शन के समापन के ठीक बाद हम यह लिख रहे हैं जिसमें चीन ने अमरीका, जर्मनी, रूस तथा ग्रेट ब्रिटेन जैसे देशों को, जो अधिकांश अन्तर्राष्ट्रीय खेलों में छाये रहते थे, श्रीहीन कर दिया। कुल ३०२ स्वर्णपदकों में से ५१ स्वर्ण पदक जीत कर चीन ने ८७ पदक विजेता देशों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कुल २०५ देशों ने बीजिंग खेलों में हिस्सा लिया था।

भारत की टीम में ५५ पुरुष और महिलाएँ थीं। हमलोगों ने सबसे पहली बार एक ही ओलम्पिक में निशानेबाजी, कुश्ती तथा बॉक्सिंग की व्यक्तिगत प्रतियोगिता में एक स्वर्णपदक, और २ कांस्य पदक जीते। हमें नहीं भूलना चाहिये कि विगत वर्षों के खेलों में रजत और कांस्य तथा १९२८ और १९७२ के मध्य की अवधि में हॉकी के आठ खेलों में स्वर्ण तथा अन्य तीन खेलों में एक रजत और २ कांस्य जीते थे।

बीजिंग में पदक विजेताओं की सूची में हमारे तीन पदकों ने हमें ५० वाँ स्थान दिलाया, जो यद्यपि प्रसन्नता की बात है, फिर भी इसे हमें यह सोचने के लिए विवश करना चाहिये कि विश्व खेलों में भारत कहाँ है। कभी हम हॉकी और क्रिकेट के चैम्पियन थे; शतरंज, बैड मिण्टन तथा बिलियर्ड्स में हमारे पास विश्व चैम्पियन्स हैं। हम चीन से केवल आबादी में पीछे हैं, पर छोटे देशों जैसे जमैका तथा केन्या की अपेक्षा हम बहुत दूर तक पिछड़े हैं जिनकी टीमों ने विश्व कीर्तिमान बना दिये। हमारे पदक विजेताओं को जिस चीज की प्रतीक्षा थी वह था उदारतापूर्वक दान, चाहे उनके जन्म स्थानों, अध्ययन या उनकी पसन्द के क्षेत्रों या विषयों के प्रशिक्षण से बहुत दूर के विभागों से भी क्यों न आये हों। निश्चित रूप से, यदि वे अप्रत्याशित धनराशि का कम से कम एक हिस्सा भी प्रशिक्षण के समय पा सकते तो वे भारत से कोच बहाल करने की सुविधाओं का लाभ उठा सकते थे और विदेशों में प्रशिक्षण ले सकते थे जिससे वे दूसरे देशों के अपने प्रतियोगियों की प्रतिभा के साथ बराबरी कर सकें। वित्तीय सुरक्षा का अभाव तथा आधुनिक उपकरणों की कमी ग्रामीण क्षेत्रों से आनेवाले हमारे बहुत खिलाड़ियों के मार्ग में बाधक बन गये हैं। अभिनव बिन्द्रा जैसे लोग अपवाद हैं।

यह समय है जब सरकार, खेल संस्थाएँ तथा कॉरपोरेट ईकाइयाँ जागें तथा खेलों को यथोचित महत्व दें। हमें अपने लक्ष्य का निर्धारण अभी कर लेना चाहिये।

सम्पादक : विश्वम

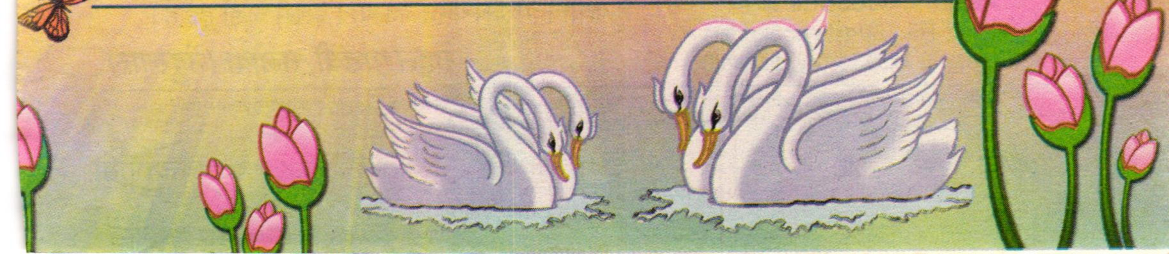

Founded by
B. Nagi Reddi and Chakrapani

Editor, Publisher : B. Viswanatha Reddi (Viswam)
Chief Executive Officer : L. Subramanyan
Editorial Advisors : Ruskin Bond, Manoj Das
Consultant Editor : K. Ramakrishnan
Associate Editor : Sowmya Rajendran
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : Jayapandian
Assistant Editor : R. Sudha
Creative Writer : R. Vaasugi
Layout Designer : B.A. Hemalata Malini

CIRCULATION TEAM :
Chennai : **T N Ravi Shankar, *National Sales Manager***
Mobile +91 99620 70014
email : ravishankar.tn@chandamama.com
Fazal Khan, *Manager-Circulation & Institutional Sales - South*
Mobile +91 99625 67860
email : fazal.khan@chandamama.com
Mumbai : **Rajendra K Jadhav, *Asst. Manager - Circulation***
Mobile +91 9271720669
CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industry
Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road
No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi : **Sushil Sharma, *Circulation Manager-North***
Mobile +91 98719 30767
CHANDAMAMA INDIA LTD., Goyal Business Centre,
C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bangalore : **P. Murali, *Asst. Circulation Manager - Karnataka***
Mobile +91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street
Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage
Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000
email:murali.p@chandamama.com
Kolkata : **Ananth Prakash, *Circulation Manager-East***
Mobile +91 98362 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Ahmedabad : **Kalpesh Raval, *Sales Officer-Circulation***
Mobile +91 98245 19946
email : kalpesh.raval@chandamama.com
Head - Business Dev. & Online : **Surajit Agarwal**
email : surajit@chandamama.com
Advertisement : email : sales@chandamama.com
Subscription Queries: L Govindasamy
e-mail : govindaswamy.l@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Head Office : **CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
JVL Plaza, Block-A, 6th Floor, 626, Anna Salai,
Teynampet CHENNAI-600018
Phone +91 44 2432 2101/02, Fax +91 44 2432 2103
email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

ANNUAL SUBSCRIPTION :
India : Rs 180 (by bookpost)
Foreign : US$30 (by air mail)

पाठकों का पन्ना

मैं पिछले तीन वर्षों से *चन्दामामा* का पाठक हूँ। कभी-कभी पुराने *चन्दामामा* के पन्नों को पलटता हूँ तो मन प्रफुल्लित हो जाता है। पिछले कुछ सालों से पत्रिका के स्वरूप में थोड़ा परिवर्तन अवश्य आया है, परन्तु शुक्र है इसने अपनी समृद्ध परम्परा को नहीं छोड़ा। *चन्दामामा* के अंकों की पठन सामग्री रोचक होती है। इसके चित्र पाठ्य सामग्री के पूरक एवं अति रमणीय होते हैं। *चन्दामामा* आकाश में चमकते चन्दामामा की तरह शीतल हो, मधुर हो और शाश्वत हो। ***- दिनेश भाटी, राजस्थान***

मैं *चन्दामामा* पत्रिका का एक अच्छा पाठक हूँ। इसमें ज्ञानवर्धक कहानियाँ, देशप्रेम से ओतप्रेत आलेख, खूबसूरत एवं रंगीन चित्र निश्चित ही दर्शनीय होते हैं। दरअसल *चन्दामामा* ने भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार का जो नेक काम किया है उसे यह सभ्य देश और पश्चिम की आधुनिक दुनिया हमेशा याद रखेगी।

- प्रेमनारायण शोरी, छत्तीसगढ़

मुख्यतः दक्षिण भारत से प्रकाशित होनेवाली यह पत्रिका अपने आप में एक आदर्श है और अपने संस्कार, आदर्श, परंपरा को आज भी बनाए रखे हुए है। मैं छः वर्ष की उम्र से *चन्दामामा* पढ़ता आ रहा हूँ। *चन्दामामा* की कहानी, पुराण कथाएँ तथा चित्र मुझे बचपन की याद दिलाती हैं। मैं जहाँ पढ़ता था तथा जहाँ भी नौकरी करूँगा वहाँ *चन्दामामा* की हर माह माँग कराना चाहता हूँ क्योंकि मेरी बचपन की यादें इससे जुड़ी हुई हैं।

- राहुल पांडवी, तलोदा (नंदुरबार)

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

एक सूचना... एक निवेदन...

प्रिय पाठकगण,

सन् १९४७ से चन्दामामा हमारे बाल्य काल का साथी रहा है। आप के साथ-साथ, दो पिछली पीढ़ियाँ चन्दामामा परिवार के अंग के रूप में विगत ६१ वर्षों से हमें मार्गदर्शन करती आ रही हैं। हमारे पाठक इन ६१ वर्षों में हमारे मुख्य आधार रहे हैं तथा पत्रिका को उन सभी छोटे-बड़े निष्ठावान पाठकों द्वारा हृदय से लगाया और संपोषित किया गया, जिन्होंने सर्वदा हमें अपना पूर्ण समर्थन दिया है।

जैसा कि आप को अच्छी तरह विदित है कि पिछले दिनों में मँहगाई के कारण समय में बदलाव आ गया है, जिसके फलस्वरूप उत्पादन लागत, कागज की कीमत, और आधारभूत संरचना तथा प्रशासनिक लागतों में नियमित रूप से वृद्धि होती गई। पिछले एक वर्ष तक हमलोगों ने खर्च में कमी करने के अनेक उपाय किये, जिसमें आन्तरिक लागत पुनर्रचना भी शामिल है, परन्तु अब किसी अन्य साधन की शरण लेने के लिए हम बाध्य हैं।

अत्यन्त मँहगाई के दबाव के परिणाम स्वरूप आप की प्रिय पत्रिका के मूल्य में वृद्धि करने के अतिरिक्त, हमारे पास कोई अन्य विकल्प नहीं है। नवम्बर से हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की प्रति कॉपी का मूल्य ५ रुपये अधिक बढ़ाकर २० रुपये होगा। फलस्वरूप, इनके वार्षिक चन्दों की दरों में भी वृद्धि हो जायेगी। हम अनुभव करते हैं कि यह परिवर्तन पत्रिका के हित में है और आप इसका पूरी तरह अनुमोदन करेंगे। हमलोग निस्सन्देह, जब भी इस स्थिति में होंगे, डीवीडी, वीसीडी आदि देते रहेंगे।

हमें विश्वास है कि आप हमारी स्थिति और मूल्य-वृद्धि के कारणों को समझेंगे।

हम आप के निरन्तर समर्थन की आशा करते हैं। *- प्रकाशक*

जंगलैण्ड पर दन्त क्षय का आक्रमण!
अब यह एलि और पुलि पर निर्भर है कि वे कॉलगेट के डॉ. रैबिट की मदद से इस समस्या को सुलझायें!

Colgate
डॉ. रैबिट बचाव - अभियान पर
Colgate ORAL HEALTH MONTH October 2008
MISSION: ZERO TOOTH DECAY
एलि और पुलि जलमा नदी के किनारे बैठे हुए हैं, तभी अचानक अंकल रंगू रोता हुआ आता है।
एलि, हमलोग बर्बाद हो गये! बिलकुल बर्बाद हो गये!
हाँ, हमें बताओ, हमलोग तुम्हारी मदद करेंगे।
क्यों अंकल रंगू? क्या बात है?
रंगू अपने मुँह को हाथ से ढका हुआ रखता है और कुछ नहीं बोलता। काफी समझाने-बुझाने के बाद अंकल रंगू आखिर में उनसे बोलने का, बल्कि दिखाने का निश्चय करता है! वह अपने मुँह पर से हाथ हटाता है और अपने दाँत दिखाता है।
तुम्हारे दाँत! उन्हें क्या हुआ?
वे सड़ने लग गये!
यह तुमने कब देखा?
जब मैंने आज सचमुच बहुत दिनों के बाद अपने दाँतों को ब्रश किया!
तुमने आखिरी बार ब्रश कब किया था?
अम्म ऽऽऽऽ म... शायद एक सप्ताह पहले!
एलि तथा पुलि को यह सुन कर धक्का लगता है और वे बेहोश हो जाते हैं।
अंकल रंगू दोनों को होश में लाता है।
तुम दोनों उठो! सिर्फ मुझ पर ही आक्रमण नहीं हुआ है ... देखो! सारा जंगलैण्ड दन्त क्षय से आक्रान्त है!
हे दन्त परी, हे दन्त परी! अंकल रंगू की आकृति, दिखती बड़ी भयावनी, कृपया उनकी मदद करो, उसके मुँह में ऊपर-नीचे दाँत भरो!
मदद के लिए दन्त परी से कहते हैं!

दन्त परी प्रकट होती है।
हेलो एलि और पुलि! मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकती हूँ?
पूरा जंगलैण्ड प्रभावित है! दन्त क्षय, दन्त पात, तुम्हें कुछ करना पड़ेगा!
कॉलगेट अक्तूबर महीने में निःशुल्क दन्त परीक्षण आयोजित कर रहा है। और देखने से लगता है कि तुम सब को इसकी जरूरत है। रैबिट ऐले के पास जाओ, वहाँ तुम्हें मदद मिलेगी!
हम अभी तुरन्त जाते हैं!
अंकल रंगू तथा सभी अन्य पशु झुक कर कृतज्ञता प्रकट करते हैं।
एलि तथा पुलि पीठ पर गठरी बाँध कर रैबिट ऐले के पास चल पड़ते हैं।
हेलो, वहाँ कौन है? क्या आप हमारे दाँतों की समस्या सुलझाने में मदद कर सकते हैं?
यह मुख के स्वास्थ्य का महीना है। इसलिए पहले निःशुल्क दन्त परीक्षण करवाइये।
यह तो कमाल है!
केवल अपने डाकघर का पिनकोड 5676725 पर एस एम एस करें और अपने स्थानीय दन्त चिकित्सक का विवरण प्राप्त करें।
तो अब किस बात का इन्तजार कर रहे हैं? आप फिर से मुस्कुराइये!
अरे अति उत्तम! हे, वह देखने में आकर्षक रैबिट कौन है?
वह डॉ. रैबिट है, हमारा दन्त चिकित्सक!
दिन में दो बार ब्रश करो, पौष्टिक खाना खाओ, अच्छी क्वालिटी के दन्त साधन प्रयोग में लाओ, तुम कुछ भी करो, परन्तु हर छः महीनों पर अपने दन्त चिकित्सक के पास जाओ और हर तीन महीनों में टूथ ब्रश बदल दो!
Colgate
Bright Smiles, Bright Futures
डॉ. रैबिट ने हमें बताया कि कॉलगेट ओरल हेल्थ महीना, कॉलगेट और इंडियन डेण्टल एसोसियेशन के माध्यम से भारत के २०० शहरों में आयोजित किया जा रहा है। दस हजार से अधिक दन्त चिकित्सक इसके अंग हैं।
वाह! वाह! हमारी सभी समस्याओं का समाधान हो गया!

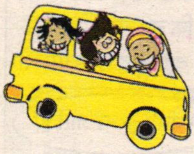

लाइट्स! कैमरा ! ऐक्शन ! सी सी डी ओ !

बेहतर, रहना सावधान
बेहतर, नहीं चिल्लाना यों
बेहतर, न करना आन
मैं कहता हूँ क्यों
क्योंकि शहर में आ रहा – है सी सी डी ओ !

(सान्ता क्लॉज से यथोचित क्षमा याचना के साथ)

और आना नगर में जहाँ हमलोगों ने चेन्नई, कोयम्बटूर और हैदराबाद के बच्चों के होश उड़ा देने में पूरे जोश के साथ काम किया।

चन्दामामा के बच्चों के डे आउट का शानदार प्रारम्भ १६ अगस्त को चेन्नई के वल्लुवर कोट्टम में हुआ। चेन्नई में आयोजित पाँच प्रतियोगों – सिंगल विकेट क्रिकेट, चित्रकला, क्ले-मॉडलिंग, वादविवाद तथा कहानी सुनाने में उत्साहपूर्ण सहभागिता ने हमलोगों को अगले दो दक्षिण भारतीय नगरों में इसकी रफ्तार बनाये रखने के लिए प्रेरित किया। सिने-सितारों के निर्णायक पैनल में थे प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक मि. सिंगीतम श्रीनिवास राव, कार्टूनिस्ट तथा फिल्म समीक्षक मि.मदन, क्रिकेटर मि.वी.बी.चन्द्रशेखर तथा आर्टिस्ट मि.सुकान्त मिश्र।

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान मि. कृष्णामचारी श्रीकान्त इस समारोह के मुख्य अतिथि थे और प्रथम पुरस्कार

सी सी डी ओ के लिए चुट्टी टी.वी. पर विज्ञापन का इतना गहरा असर हुआ कि चन्दामामा के कर्मचारी वर्ग के पास अभी भी उन बच्चों के फोन आते हैं जो चुट्टी टी.वी. के अपनी पसन्द के पात्रों से बात करना चाहते हैं।

विजेतागण उनसे ट्रॉफिज ग्रहण करते हुए खुशी से रोमांचित हो उठे।

दिनांक २४ अगस्त को कोयम्बटूर के कोडिसिया हॉल में चित्रकला, क्ले मॉडेलिंग तथा कहानी सुनाना-तीन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हमलोगों ने कहानी सुनाने के प्रतियोगिता में थोड़ा परिवर्तन करने

का निश्चय किया जिससे बच्चों को अपनी लेखन प्रतिभा की खोज करने में प्रोत्साहन मिल सके। अन्तिम राउण्ड में प्रतियोगियों को कहानी की प्रारंभिक पंक्तियाँ दे दी गईं और उन्हें कहा गया कि वे कहानी को अपने-अपने ढंग से विकसित करें। छोटे बच्चों को कल्पना के पंखों पर ऊँचे उड़ते हुए देखना कितने आनन्द की बात थी।

सी सी डी ओ इसके बाद हैदराबाद पहुँचा जहाँ श्रीधर फंक्शन प्लाजा में ३१ अगस्त को मौलिकता की लहरें उच्छृंखल हो उठीं।

सी सी डी ओ के गौरवान्वित विजेताओं से

यद्यपि हमलोगों ने प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आयु सीमा निर्धारित की थी, फिर भी पहली कक्षा तक के बच्चों ने भाग लेने का अनुरोध किया। हमलोगों ने निस्सन्देह खुशी के साथ मान लिया।

मि. मदन ने तत्काल केरिकेचर करके प्रतियोगियों की खूब वाहवाही लूटी।

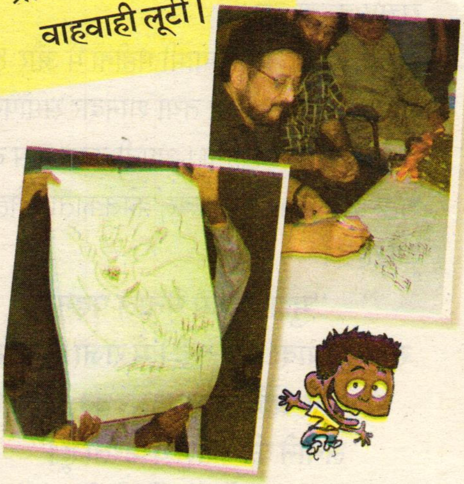

तुम ऑन लाइन www.chandamama.com पर मिल सकते हो।

बच्चों के साथ आनेवाले उनके माता-पिता तथा दादा दादी वहाँ की भी भीड़ प्रबन्धन प्रणाली तथा सी सी डी ओ जैसे बड़े पैमाने के समारोह के कार्यान्वयन में स्पष्ट परिलक्षित दक्षता देख कर प्रभावित हुए। तीनों शहरों को मिलाकर प्रतियोगिताओं में दस हजार से अधिक बच्चों ने भाग लिया। बच्चों ने चाहे ट्रॉफी जीती या नहीं पर घर लौटते समय उनके चेहरों पर थिरकती मुस्कान चन्दामामा टीम के लिए काफी बड़ा पुरस्कार है।

हमारे हार्दिक धन्यवाद अपने मिडिया पार्टनर्स चुट्टी टी.वी., हलो एफ एम १०६.४, रेडियो वन ९४.३, एस एफ एम ९३.५,

ई-टी वी२, तथा ईनाडु को। मिडिया सपोर्ट (प्रिण्ट, ऑन लाइन तथा टेलिविजन) ने संजीवनी का काम किया और हममें शक्ति का संचार करता रहा।

सी सी डी ओ आगामी महीनों में और १३ शहरों की यात्रा करेगा तथा शानदार समापन समारोह मुम्बई में होगा। अपनी कमर कस लो। शीघ्र ही हमलोग भुवनेश्वर, कोलकाता, गोहाटी आ रहे हैं।

"मुझे विक्रम वेताल पढ़ना सबसे ज्यादा पसन्द है। मैं राजा विक्रम के पहले ही पहेलियों के उत्तर का अनुमान लगाने की कोशिश करती हूँ।"

- युवेदा, प्रतियोगी

"जब मैं बच्चा था, *चन्दामामा* पढ़ा करता था, परन्तु आजकल टी वी ने बच्चों का सारा समय ले लिया है। ऐसे प्रतियोगिता - समारोह का आयोजन अच्छा है जिससे बच्चों को फिर से पठन के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।"

- आर. जयारामन, अभिभावक

उत्साह के अतिरेक में कुछ प्रतियोगी बेहोश होने लगे किन्तु तत्क्षण रोगी वाहन की सुलभता के कारण वे पुनः सक्रिय हो गये। कोई क्षति नहीं!

"मैंने इससे पूर्व ऐसे प्रतियोगिता - समारोह में कभी नहीं भाग लिया। मुझे यह बैज बेहद पसन्द है और मैं इसे हमेशा के लिए अपने पास रखने जा रही हूँ!"

- कौशिका, प्रतियोगी

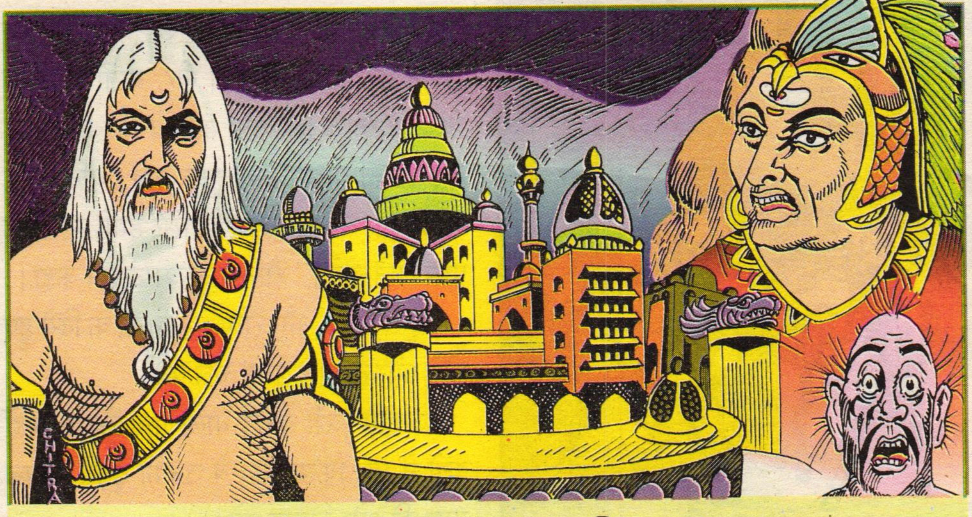

पाताल दुर्ग

3

(कदम्ब राजा के चार दूत दो कैदियों को पकड़कर कुन्तल देश के राजा के पास गये और उससे उन्होंने कहा कि उन्होंने ही मन्त्री के लड़के और उसके दोस्तों की हत्या की। फिर जब वे अपने देश वापस जा रहे थे, तो कुन्तल देश के सैनिकों ने उनमें से दो को गले में फन्दा डालकर मार दिया और कैदियों को छुड़ा दिया। बाद में)

कदम्ब राजा के दोनों दूत अपने घोड़ों पर नाला पार करके अपने राज्य में पहुँचे। कुन्तल सैनिकों के बाण उनको न लगे। आधी रात का समय था। धुंघली धुंघली-सी चाँदनी थी, जंगल घना था। इसलिए सैनिक दूतों पर निशाना लगाकर बाण न छोड़ सके और कदम्ब राज्य के दोनों दूत सुरक्षित अपने राज्य के क्षेत्र में पहुँच गये। कुन्तल सैनिकों का सरदार बहुत चिन्तित हो गया। मंत्री का आदेश था कि कोई दूत वापस न जाये। वे शत्रु राजा को कुछ भी सूचना दे सकते हैं, और दोनों राज्यों में युद्ध की आशंका हो सकती है, उसने सोचा।

''नाला पार करके इन दूतों का पीछा करने में खतरा है। कदम्ब राज्य की सीमा के पहरेदार उनकी मदद के लिए आ सकते हैं। कुछ भी हो, उनको ज़िन्दा भी नहीं छोड़ना चाहिए। बताओ,

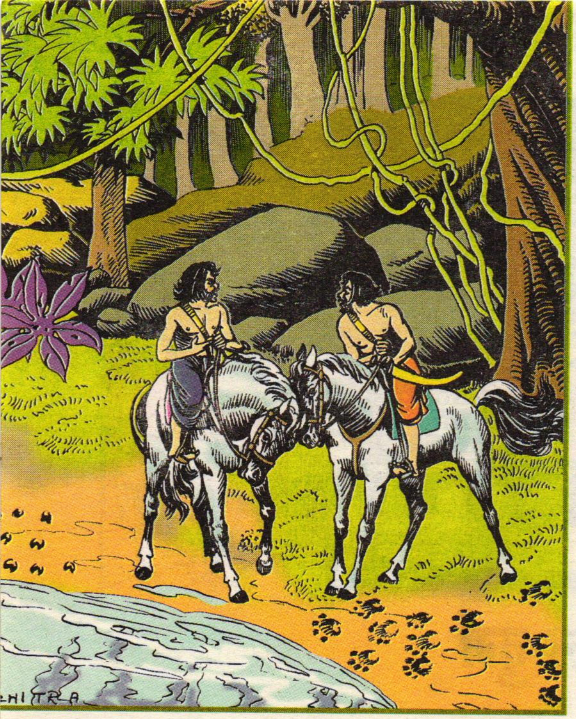

तुम में से कौन शत्रु-प्रदेश में जाकर उनका पीछा कर सकता है और जिन्दा या मुर्दा उन्हें पकड़ कर ला सकता है? यह बहुत जरूरी है। जो उनको मार देगा, मन्त्री उसको इनाम देंगे।'' कुन्तल सैनिकों के सरदार ने कहा।

यह सुनते ही धूमक सामने आया। उसने कहा, ''मैं और सोमक यह काम कर सकते हैं। हमें इनाम विनाम की कोई ज़रूरत नहीं है। इन दूतों को ही नहीं, हम कदम्ब राजा के मन्त्री को भी मार कर रहेंगे। जैसे इन दुष्टों ने बताया है, हम कोई पितृ हन्तक या भ्रातृ हन्तक नहीं हैं। हम गाँववाले हैं। हम चूँकि इस उग्रसेन के लगाये हुए उटपटाँग कर बर्दाश्त न कर सके इसलिए हमने बगावत कर दी।''

''हमारे मन्त्री को यही सन्देह हुआ था कि तुम हत्यारे नहीं हो। इसीलिए उन्होंने हमें तुमको छुड़ाने की आज्ञा दी थी। खैर, बातों में समय व्यर्थ हो रहा है। ये घोड़े और ये तलवारें लेकर, तुम उनका पीछा करना शुरू करो। यदि इनाम चाहते हो, तो तुम्हें दूतों के सिर हमारे मन्त्री के पास लाने होंगे।'' सैनिकों के सरदार ने कहा।

तुरंत धूमक और सोमक सैनिकों के दिये हुए घोड़े और तलवार लेकर चल पड़े।

उन्होंने उसी जगह नाला पार किया, जहाँ दूतों ने पार किया था। वे उनको ढूँढ़ते कदम्ब नगर की ओर निकल पड़े।

वह जगह पहाड़ी थी। बड़े-बड़े वृक्ष थे। घना अन्धकार था। बड़ी भयंकर जगह थी। वे उस तरफ़ न गये, जहाँ जंगली जानवर पानी पीने के लिए आते थे। पगडंडी के रास्ते धीमे-धीमे अपने घोड़े चलाते गये। बड़ी होशियारी से धूमक और सोमक जंगल में आगे बढ़ते जाते थे। पर कहीं उनको दूतों का पता न लगा।

''सोम! इस अन्धेरे में उन दुष्टों को पकड़ लेना आसान काम नहीं है। पहले चलो हम अपने गाँव चलें और अपने परिवारों को सीमा पार करके कुन्तल राज्य पहुँचायें।''धूमक ने कहा।

सोमक ने सिर हिलाते हुए जोश में कहा, ''बिना उग्रसेन राजा की मौत देखे, मैं अपने गाँव न जाऊँगा। वह क्रूर और अत्याचारी है। वह प्रजा की रक्षा करने के बदले उनका शोषण कर रहा है। हमें तरह-तरह के कर लगा कर लूट रहा है। इसलिए हमने कर देने से इनकार कर दिया। महज़ इसलिए

कि हमने कर नहीं दिया है, वह हमें यूँ मरवाता पिटवाता है और ऊपर से कहता है कि मैं भ्रातृहन्तक हूँ।''

''सोम, तुम अपनी यह जिद छोड़ो। क्या राजा इतनी आसानी से हमारे हाथ में आयेगा? न मालूम उसके कितने अंगरक्षक हैं। उसके पास सेना है। फिर सारी प्रजा भी हमारे साथ नहीं है। हम मुट्ठी भर गाँववाले क्या कर लेंगे? सब डरते हैं। इसलिए उसके हर आदेश का पालन करते हैं, चाहे वे कितने भी अन्यायपूर्ण क्यों न हों। वह हमें चीटियों की तरह मसल देगा। हमारे पास हमारे बाल-बच्चे भी हैं। तुम्हारे साथ मुझ पर भी जोर जबर्दस्ती की गई है। ये भागे हुए दूत जाकर, राजा के सामने हमारी चुगली करेंगे और कहेंगे कि अगर दूत मार दिये गये हैं, तो उसके कारण हम ही हैं। तब ज़रा सोचो, हमारे परिवारों की क्या हालत होगी?'' धूमक ने कहा।

यह सुनकर सोमक कुछ नरम पड़ा। उसे लगा कि पहले परिवार की रक्षा करना जरूरी है। ''खैर, जैसा तुम कह रहे हो, वैसा ही करेंगे।'' कहकर, सोमक ने घोड़ा एक ओर मोड़ दिया। धूमक भी अपना घोड़ा मोड़ने को था कि नगर की तरफ़ से रोशनी दिखाई दी।

दोनों ने चकित होकर उस ओर अपने सिर मोड़े। किले की दीवारों से जलते बाण जंगल की ओर आने लगे। नगाड़ा, ढोल, धमाके के शोर से सारा जंगल गूंजने लगा।

''नगर को हमारे लोगों ने घेर लिया है। राजा

मर गया है। आओ, हम भी नगर की ओर चलें।'' कहते हुए सोमक ने घोड़ा मोड़ा।

धूमक ने उसे रोकते हुए कहा, ''जल्दी न करो। कदम्ब नगर को घेर लेने की शक्ति गाँव के हम गरीब लोगों में कहाँ है? यदि हम अन्धाधुन्ध नगर की ओर भागे, तो फिर राजा द्वारा कैदी बना लिए जायेंगे। पगडंडी छोड़कर, आओ, कहीं पेड़ों के पीछे घूम जायें और मालूम करें कि यह शोर शराबा क्यों हो रहा है, क्यों ये बाण छोड़े जा रहे हैं?'' धूमक ने कहा।

कदम्ब नगर में जो शोर शराबा हुआ था, वह जैसा कि सोमक ने सोचा था, उन गाँववालों का कारनामा न था, जो कर नहीं दे पा रहे थे।

नगर में एक दूसरी ही अद्भुत, अचरज भरी एक भयंकर और अप्रत्याशित घटना हो गई थी,

जिसके कारण पूरे नगर और राजमहल में भगदड़ मच गई। उसी घटना के सिलसिले में जलते हुए बाण जंगल की ओर छोड़े जा रहे थे। बात यूं हुई कि ठीक आधी रात के समय एक बलवान किले की खाई को पार कर गया और उसने नगर के द्वार खटखटाये।

"कौन है वह? अक्ल नहीं है? सवेरे होने तक फाटक नहीं खोले जायेंगे।" द्वार रक्षक चिल्लाये।

"मैं कौन हूँ? राजाधिराज हूँ।" कहते हुए उस बलशाली ने एक मुक्के से फाटक के टुकड़े टुकड़े कर दिये। कुछ द्वार रक्षक उनके नीचे जा गिरे और बाकी ने जब टूटे हुए फाटक में से काले पर्वत के आकारवाले को देखा, तो भय के कारण वे मूर्छित हो गये।

"तुम यदि मरों का बहाना कर रहे हो, तो करो। कम से कम जो बचेंगे, वे तो जिन्दा रहेंगे। अगर तुमने जाकर किले में हो हल्ला किया, तो गर्दन तोड़कर दूर फेंक दूँगा।" उस बलवान महाकाय ने कहा।

यह सुन कुछ द्वार रक्षकों ने उसकी ओर देखा। उस महाकाय ने खालें पहन रखी थीं। आँखें अंगारें हो रही थीं। सिर पर दो मुड़े सींग थे और हाथ में काँटोंवाली बड़ी गदा थी।

"यह तो मनुष्य नहीं राक्षस है। इसके सामने राजा की सेना भी टिक नहीं पायेगी, हमलोग किस खेत की मूली हैं। हमलोग कुछ कहेंगे तो जिन्दा हमें खा जायेगा। इसे जहाँ जाना है, जाने दो।" एक द्वार रक्षक बोला।

"राक्षस स्वामी! हम नहीं जानते, तुम किस लोक के हो। नगर में चाहो, जिसको तुम खा लो पर राजमार्ग के बायीं ओर लाल लकीरवाले घरवालों का कुछ न बिगाड़ना। उस घर में मेरे स्त्री बच्चे हैं। इतनी दया करना स्वामी।" दूसरे द्वार रक्षक ने उससे प्रार्थना की।

राक्षस ज़ोर से हँसा। "अरे मूर्ख, मैं दूसरे किसी लोक से मनुष्यों को खाने के लिए आया हुआ राक्षस नहीं हूँ। मैं यहीं का हूँ। दण्डकारण्य का हूँ। मैं तुम सब को हानि पहुँचाने नहीं आया हूँ। और न ही तुम्हें खाने आया हूँ। मैं सिर्फ यहाँ की राजकुमारी को लेने आया हूँ। हमारा राजा मानवों से सम्बन्ध करना चाहता है। सुनते हैं कि तुम्हारी राजकुमारी बड़ी सुन्दर है। मैं महल में उसी को लाने जा रहा हूँ। मार्ग में आने की कोशिश की तो

तुम्हारी और तुम्हारे स्त्री बच्चों की खैर नहीं।'' कहकर राक्षस चुपचाप महल की ओर चला।

महल के मुख्य द्वार पर दो पहरेदार पहरा दे रहे थे। चार पाँच एक और जगह बैठे गप्पें मार रहे थे। राक्षस उनके सामने के रास्ते के पेड़ों के नीचे अन्धेरे में कुछ देर खड़ा रहा। वह द्वार की ओर गया। फिर यकायक रुका। कुछ दूर और पेड़ों के नीचे चला। महल के प्राकार के पास पहुँचा। उस पर से अन्दर कूदा। ज़ब वह कूद रहा था, तो उसका एक पैर दीवार पर लगा और धड़ाम से दीवार का कुछ अंश गिर गया। ज़ोर से शब्द हुआ।

तुरंत महल में हलचल मच गई। ''शत्रु सेना, शत्रु सेना'' कुछ चिल्लाने लगे। कुछ और ''भूचाल भूचाल'' चिल्लाने लगे।

राजमहल के लोग सब भागे भागे आये। ढही दीवार को देखकर अचरज में पड़ गये।

राजकुमारी कान्तिसेना शोर शराबा सुनकर उठ गई। वह अपने कमरे में से निकल आई। छोटी दीवार पकड़कर नीचे देखने लगी। उसकी दो सहेलियाँ उसके पास आईं। ''कितना शोर हुआ! सब कह रहे हैं कि भूचाल आया था।'' आँखें बड़ी करके हाथ हिलाते हुए उसने ढही हुई दीवार दिखाई।

राक्षस चुपचाप सीढ़ियों पर से दुमंजले पर गया जहाँ राजकुमारी थी, रास्ते में उसे कोई नौकर चाकर न मिला। वे सब मशाल लेकर, दीवार के पास गये हुए थे।

वह सीढ़ियों पर से ऊपर जा रहा था कि उसके

सिर की छाया राजकुमारी के पास पड़ी। सहेलियाँ डर गईं। उन्होंने यह सोचकर कि कहीं छाया आकाश में से तो नहीं पड़ रही थी, आकाश की ओर देखा। इतने में राक्षस सीढ़ियों पर से ऊपर आ गया। उसने दबी आवाज़ में कहा, ''मैं तुम लोगों में से किसी का नुकसान नहीं करूँगा। फिर भी अगर कोई मूर्छित होना चाहे, तो हो आये। पर अगर तुमने चूँचाँ की तो गला घोंट दूँगा।''

राजकुमारी डर गई और बेहोश हो गई। सहेलियों ने उसे नीचे न गिरने दिया। सम्भाल दिया ।राक्षस उनके पास आया। कान्तिसेना को धीमे से पकड़ा। उसे उठाकर कन्धे पर डाल लिया। राजकुमारी की सहेलियों का सौन्दर्य देख कर वह बहुत प्रसन्न हुआ। वह अपने राज्य के युवकों के लिए उन्हें भी उठा ले जाना चाहता था। इसलिए उसने उसकी

सहेलियों से कहा, "तुम राजकुमारी से सौन्दर्य में किसी भी तरह कम न हो? क्या मेरे साथ आओगी? शूर, साहसी हमारे युवकों से शादी कर लेना और राजकुमारी के साथ-साथ तुम भी सुख और आराम का जीवन बिताना। हमारे राज्य में स्वर्ग से बढ़ कर सुख और आनन्द है। उनके सौन्दर्य के बारे में जानने पूछने की कोई जरूरत ही नहीं। मुझे तो देख ही लिया है न? मेरे जितने ही सुन्दर हैं वे लोग।"

सहेलियाँ यह सुनते ही, सब एक साथ बेहोश हो गईं। कान्तिसेना को लेकर, राक्षस सीढ़ियों पर से उतर आया। अभी वह सोच रहा था कि परकोटे को कहाँ पार किया जाये, राजा का एक नौकर उस तरफ़ आया। उसे देखकर वह ज़ोर से चिल्लाया, "राक्षस राजकुमारी को उठाकर ले जा रहा है।"

राक्षस जल्दी बाग की ओर भागा और वहाँ पेड़ों के नीचे खड़ा हो गया। वह राज सेवकों में से किसी को नहीं मारना चाहता था। वह केवल राजकुमारी को सुरक्षित उठा ले जाना चाहता था। इसलिए वह मशालें, तलवार लिए आते हुए लोगों की ओर न गया। वह झट परकोटा पार कर गया और नगर के द्वार की ओर भागने लगा।

तब तक राजा उग्रसेन और मन्त्री उठकर महल की छत पर आ गये थे। उग्रसेन को भागते राक्षस के कन्धे पर अपनी लड़की दिखाई दी। कुछ सैनिकों ने राक्षस का निशाना बनाकर बाण छोड़े। उनमें से एक दो उसको लगे भी, पर उसने उसकी परवाह न की। उसके चट्टान जैसे विशाल शरीर में वे बाण छोटी सूइयों की तरह चुभ गये थे, जिन्हें उसने निकाल कर फेंक दिया। बाणों की चोट से उसे कोई दर्द भी महसूस नहीं हुआ। वह तेजी से बढ़ता गया और नगर के द्वार से निकलकर जंगल की ओर चल दिया।

"किले के बुर्जों से अग्नि बाणों का उपयोग करके मालूम करो कि वह जंगल में किस ओर जा रहा है। इस बीच घुड़ सवार उसका पीछा करें। राक्षस को मारने के लिए मैं स्वयं आ रहा हूँ।" उग्रसेन जोर से चिल्लाया। तुरंत सैनिक बाणों पर मशालें लपेटकर उस ओर छोड़ने लगे जिस ओर राक्षस गया था। घुड़ सवार नगर के द्वार पार करके राक्षस का पीछा करने लगे। ***(अभी है)***

विचित्र प्रेम

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव को उतारा और उसे कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् वह श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। शव के अंदर के वेताल ने उससे पूछा, "राजन्, अंधेरा ही अंधेरा है। वातावरण बड़ा ही भयंकर है। तुम्हारी जान भी ख़तरे में है। किन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि किसके लिए तुम अपने को जोखिम में डाल रहे हो? मुझे ऐसे कई लोगों के बारे में जानकारी है, जिनका संबंध किसी से भी नहीं है, पर दूसरों की चर्चाओं व चेष्टाओं के कारण उन्हें अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। इस कारण से उन्हें प्रतिकूल परिस्थितियों से गुज़रना पड़ता है। प्रजा को क्रूर सिंहों से बचाने के उद्देश्य से जंगल में गये युवराज यशोधर को

वेताल कथा

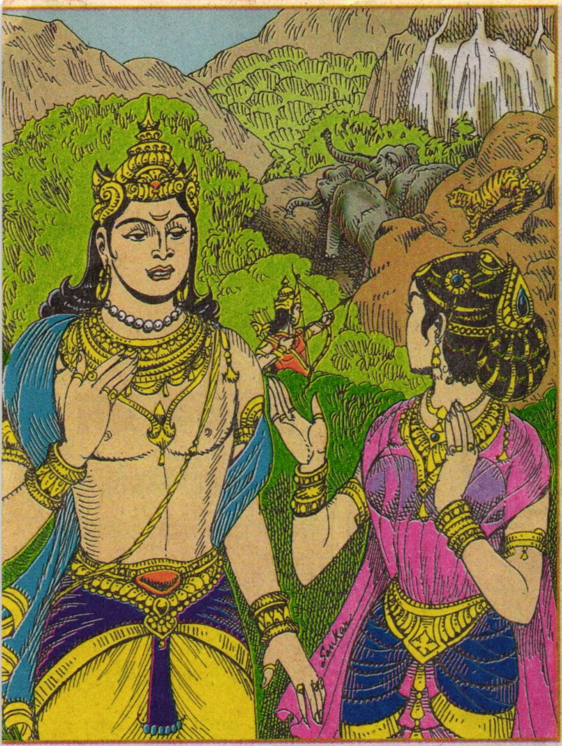

असहृय परिणामों में फंस जाना पड़ता है। उसी युवराज के विचित्र प्रेम की कथा तुम्हें सुनाऊँगा। ध्यान से सुनो और यह हठ छोड़ो।'' फिर वेताल वह कहानी यों सुनाने लगा :

निषिध का राजकुमार यशोधर शौर्य-पराक्रम मे अद्वितीय था। प्रजा को वह बहुत चाहता था। गाँवों में क्रूर पशुओं के आकस्मिक आक्रमण से प्रजा भयभीत हो गयी। प्रजा को उनसे बचाने के लिए चंद सिपाहियों को साथ लेकर एक दिन जंगल में गया।

ठीक उसी समय पर गंधर्व लोक का अजर और चतुस्वरी नामक दो प्रेमी भूलोक में विहार करने आये और एक सुंदर पर्वत पर उतरे। दोनों जब एक चट्टान पर बैठ गये तब अजर ने कहा, ''इस लोक के ऊँचे-ऊँचे पर्वत, मनमोहक प्रपात, सरोवर, आकाश को छूनेवाले बड़े-बड़े वृक्ष, उनसे लिपटी लताएँ, उड़नेवाले पक्षी आदि मनोहर दृश्य हैं। पर, तुम इन सबसे अधिक सुंदर लग रही हो।''

जहाँ वे दोनों बैठे, उस ऊँची जगह से वे यशोधर को देख रहे थे जो क्रूर पशुओं को भगा रहा था और अपने बाणों का निशाना बनाकर उनका संहार कर रहा था। आखेट में उसकी दक्षता को बिना पलक मारे एकटक देखने में मग्न थी चतुस्वरी। उस दृश्य को देखने में वह तल्लीन थी। अजर की बातें उसने सुनी ही नहीं।

इस कारण से अजर एकदम क्रोधित हो उठा और बोला, ''बड़े ही प्यार से तुम्हें सुंदर दृश्यों का वर्णन करते हुए सुना रहा हूँ और तुम उस साधारण मानव को देखती जा रही हो। एक सामान्य मानव के शक्ति-सामर्थ्य आख़िर मेरी शक्ति के सामने नगण्य हैं। देखना, इसी क्षण उसकी क्या हालत करता हूँ''। कहते हुए उसने यशोधर को बित्ते भर के छोटे रूप में बदल डाला।

अकस्मात् ही अपने इस रूप को देखकर यशोधर की समझ में कुछ नहीं आया। वह स्तब्ध होकर खड़ा रहा। ऐसी स्थिति में दौड़ते हुए एक खरगोश ने उसके कान को छू लिया। उसके छूने मात्र से वह उलटता-पलटता हुआ नीचे गिरता जा रहा था। उसकी इस स्थिति को देखते हुए अजर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा और गर्व भरे स्वर में कहने लगा, ''तुम बिना पलक मारे देख रही थी न उस मानव को, अब देखना उसके दयनीय परिणाम को।''

"मैं तो केवल उस मानव के कौशल को देख रही थी और उसका मज़ा ले रही थी। मैंने ऐसा क्या कर दिया, जिससे तुममें घृणा और ईर्ष्या घर कर गये। ईर्ष्या के मारे तुमने अपने अद्भुत शक्तियों का प्रयोग किया और उसकी ऐसी बुरी हालत कर दी। इससे स्पष्ट हो जाता है कि तुम कितने दुष्ट हो। इसी क्षण से मैं तुमसे घृणा कर रही हूँ।" कहते हुए चतुस्वरी आकाश मार्ग से होती हुई गंधर्व लोक चली गयी। वह भी घबराता हुआ उसके पीछे-पीछे गया।

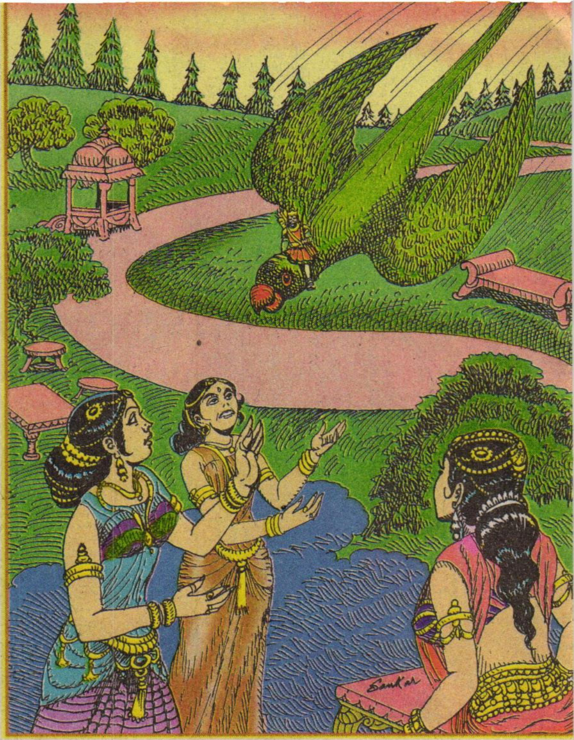

यशोधर इस विचित्र स्थिति से बाहर आये, इसके पहले ही एक बड़े बवंडर में वह फंस गया। वह हवा में तेज़ी से घूमता हुआ आकाश की ओर उड़ने लगा। वह बवंडर उसे बहुत दूर ले गया और फेंक दिया। उसके प्रभाव से जब वह नीचे लुढकता हुआ जाने लगा तब एक तोते की पूँछ को उसने पकड़ लिया और उस पर बैठ गया। वह आनंदगिरि राज्य के शासक की इकलौती पुत्री रागलता का पालतू तोता था। वह सीधे रागलता के अंतःपुर में उसे ले गया। तब रागलता अपनी सहेलियों के साथ गेंद खेल रही थी।

उँगली भर का मुकुट, सेम के बीज समान चप्पल, मिर्च की डंडी भर की तलवार, भिंडी भर के परिमाण में, तांबे के बीजों के नेत्रों के साथ वह बड़ा ही विचित्र दीख रहा था। उस विचित्र रूपधारी यशोधर को देखते ही युवरानी सहित सभी सहेलियों ने उसे घेर लिया। "अद्भुत, यों चलनेवाली ऐसी गुड़िया को मैंने अब तक नहीं देखा।" कहते हुए युवरानी ने उसे अपने हाथ में ले लिया।

रागलता जैसी सौंदर्य राशि को देखते ही यशोधर भी चकित रह गया। वह उसे चाहने लगा। पर उसने निर्णय कर लिया कि अभी अपने बारे में उससे कुछ न बताऊँ? यद्यपि उसे मालूम नहीं था कि वह लघु रूप में क्यों परिवर्तित हो गया, फिर भी उसे विश्वास था कि किसी न किसी दिन अपने असली रूप में प्रकट हो जाऊँगा और उससे विवाह करूँगा।

"मैं गुड़िया नहीं हूँ। वीरों का वीर हूँ। मैं आज्ञा दूँ तो अपार सेना निकल आयेगी। युद्ध में मैंने कितने ही शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिये और मेरी बहादुरी असाधारण है," यशोधर ने कहा।

"बित्ते भर के मानव हो, पर बातें बड़ी-बड़ी

अजर गंधर्व लोक से इस दृश्य को देख रहा था। पास ही बैठी चतुस्वरी से उसने कहा, ''देख लिया न, प्रेम कितना महत्वपूर्ण है। बित्ते भर के विचित्र शरीरधारी से रागलता प्रेम कर रही है। सुंदरता के होने मात्र से कुछ नहीं होता। युवतियों का हृदय भी कुसुम की तरह कोमल होना चाहिये। तुम्हारा हृदय तो शिला की तरह है।''

''यशोधर के जीवन के साथ अब भी तुम खिलवाड़ कर रहे हो। तुम क्या दुष्ट नहीं हो?'' चतुस्वरी ने कठोर वाणी में कहा।

''मुझसे विवाह करने का वचन दो तो इसी क्षण उसे मामूली मानव में परिवर्तित कर दूँगा।'' अजर ने कहा।

''तुम जैसे व्यक्ति से कैसे प्रेम करूँ, जो मौक़े का अनुचित फ़ायदा उठाता है।'' कहती हुई वह बड़ी तेज़ी से वहाँ से चली गयी।

इधर भूलोक में अनंत प्रभु पुत्री के स्वयंवर की तैयारियाँ कर रहा था। रागलता को जब यह मालूम हुआ तब उसने कहा, ''पिताश्री, स्वयंवर की घोषणा मत कीजिये। विश्वास कीजिये आपकी इच्छा के अनुसार ही मेरा विवाह होगा।'' यों उसने पिता को समझाया-बुझाया।

इसके बाद रागलता उद्यानवन में गयी और यशोधर को यह समाचार बताते हुए कहा, ''अगर यह मालूम हो जाए कि तुम्हें कैसे यह विचित्र रूप मिला तब इससे मुक्त होने के मार्ग का अन्वेषण करूँगी। पर तुम तो कहते हो कि मुझे भी मालूम नहीं। बड़े लोग कहते हैं कि बहुत पहले देवलोक

करते हो।'' सहेलियों ने उसकी खिल्ली उड़ाते हुए कहा। किन्तु युवरानी उसी की ओर देखने लगी।

इसके बाद रागलता उससे इधर-उधर की बातें करती रहती थी। जब कभी भी वह वन विहार पर जाती थी, यशोधर को भी अपने साथ-साथ ले जाती थी। थोड़े ही दिनों में वही उसका लोक बन गया।

रागलता बहुत ही अच्छी तरह से चित्र बनाती थी। उसने युवराज का लघु चित्र खींचा और उसे जब ध्यान से देखने लगी, तब पीछे से यशोधर ने कहा, ''सुंदरी, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। जब मैं साधारण मानव बन जाऊँगा, तब तुमसे विवाह करूँगा।''

उसकी इस बात पर वह चौंक पड़ी और पीछे मुड़कर उसे देखते हुए मुस्कुरा उठी।

में किसी के हठ के कारण भूलोक के निवासी हरिश्चंद्र को अनेक कष्ट सहने पड़े। बाद में जैसे उनके कष्ट दूर हो गये, उसी तरह जब तक तुम्हें अपना असली रूप नहीं मिलेगा, तब तक मैं प्रतीक्षा करती ही रहूँगी।'' लंबी सांस खींचते हुए उसने कहा।

यशोधर की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाये। वह युवरानी को ध्यानपूर्वक देखता रह गया।

चतुस्वरी यह दृश्य गंधर्वलोक से देख रही थी। उसने कड़े स्वर में अजर से कहा, ''देखा, द्वेष से भरी तुम्हारी बुद्धि ने यशोधर को कितनी दीन स्थिति में डाल दिया?''

''अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। विवाह करने के लिए तुम मान जाओगी तो इसी क्षण यशोधर को असली रूप मिल जायेगा।'' अजर ने स्पष्ट कह दिया। इसपर नाराज़ होकर चतुस्वरी ने कहा, ''बिना किसी कारण तुमने यशोधर को कष्टों में डाल दिया। तुम्हारी यह दुष्ट बुद्धि असहनीय है। तुम साधारण मानव बनकर भूलोक में रहते हुए कष्ट झेलो। वहाँ रहते हुए जब करुणा, दया, प्रेम जैसे उत्तम गुणों को अपनाओगे, तभी तुम्हें मानव रूप से मुक्ति मिलेगी। और मुझसे विवाह करने के योग्य बनोगे। चूँकि मेरा प्रेम निष्कलंक है, अतः यह शाप अवश्य ही सच निकलेगा।''

दूसरे ही क्षण अजर मानव रूप में भूलोक में आ गया। यशोधर शाप मुक्त हो गया। वह साधारण मानव बन गया। उसने यह बताकर रागलता के गले में वरमाला डाल दी कि मैं कौन हूँ।

वेताल ने यह कहानी बतायी और अपने संदेहों

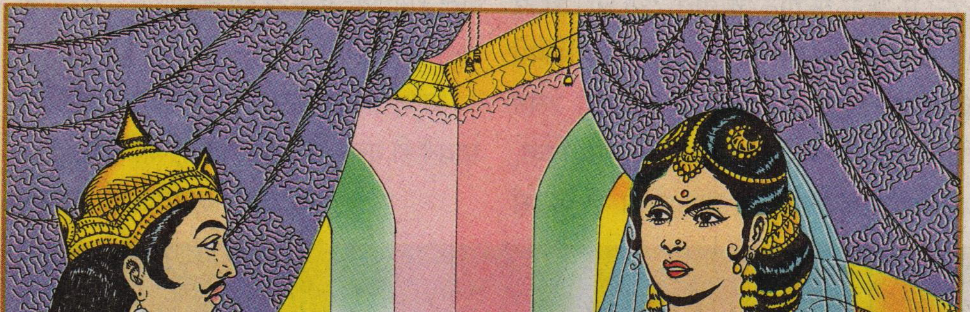

को व्यक्त करते हुए विक्रमार्क से पूछा, ''राजन्, क्या सचमुच ही चतुस्वरी के मन में अजर के लिए स्थान था? क्या वह सचमुच ही उससे प्रेम करती थी? सचमुच ही उसके हृदय में अगर उसके लिए प्रेम था, तो इतने लंबे अर्से तक उसे क्यों सताया? पहले से उससे विवाह करने के लिए वह मान लेती तो यशोधर को बहुत पहले ही उसका असली रूप मिल जाता। यशोधर को असली रूप मिल गया, इसका क्या कारण है? क्या इसका कारण उसके प्रति रागलता का प्रेम है? या इसके लिए कोई दूसरा कारण है? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी अगर तुम बिना कुछ कहे चुप रह जाओगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा।''

विक्रमार्क ने कहा, ''पहले से ही चतुस्वरी के हृदय में अजर के प्रति प्रेम भरा हुआ था। अजर भी उसे बहुत चाहता था, पर उसका स्वार्थ भरा द्वेष उससे सहा नहीं गया। अकारण ही उसने यशोधर को शाप देकर उसे कष्टों में डाल दिया, जो उसे क़तई पसंद नहीं था। उसने उसके इस स्वभाव में परिवर्तन ले आने की कोशिश की। उसने उसके दुष्ट स्वभाव को दुत्कारा। पर अजर स्वार्थ के कारण, दूसरों के कष्टों को जानने की स्थिति में नहीं था। यशोधर की दुस्थिति को चतुस्वरी देख नहीं पायी, उससे सहा नहीं गया, इसलिए उसने शाप दिया। इस प्रकार उसने उसे शाप-मुक्त किया।

''अगर कोई गंधर्व अपनी अद्भुत शक्ति का प्रयोग करे तो दूसरे को इसे वापस लाने की शक्ति नहीं होती। अब रहा, रागलता व यशोधर का पारस्परिक प्रेम। उन दोनों का प्रेम हृदय प्रधान हैं, उन्नत हैं, मानव सहज हैं। मानव रूप में बदल जाने के बाद अजर अपनी शक्तियों को खो बैठा। इसलिए उसने यशोधर पर जिन शक्तियों का प्रयोग किया, वे शक्तियाँ व्यर्थ हो गयीं। यह कहना सही होगा कि अजर के द्वेष ने आख़िर यशोधर का भला किया।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः कार्तिक की रचना)

नक्षत्र के लिए भारतीय नाम

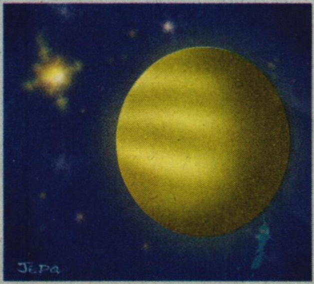

पट्टाली केरल के कोल्लम अथवा किलोन जिले में एक गाँव है। इस वर्ष के मई महीने तक जब एक छोटे ग्रह को, नासा द्वारा इसका नाम दिया गया, इसके बारे में किसी ने नहीं सुना था। ग्रह की खोज १९८९ में एक फरवरी को तमिलनाडु के कवलूर निवासी पर अमरीका में बसे वैज्ञानिक आर. राजामोहन द्वारा की गई थी। इसका तात्कालिक नाम ५१७८ न.सी डी ४ था। उन्नीस वर्षों के बाद ग्रह को स्थायी नाम कोल्लम स्थित श्री नारायण कॉलेज में प्राणिविज्ञान के लेक्चरर डॉ. सैनुद्दीन के सम्मान में पट्टाली दिया गया, क्योंकि वे इसी गाँव के निवासी हैं। पर्यावरण के क्षेत्र में उनके शोध तथा संरक्षण के प्रति जागरुकता फैलाने के लिए दीर्घकालीन आन्दोलन के आधार पर उन्हें यह अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता दी गई है।

अग्रिम बुकिंग

कोई भी बाद की तारीख में यात्रा के लिए रेलवे टिकट खरीद सकता है। सन् १९७३ में २८ जून को गोपाल डे ने पंक्ति में खड़े होकर कोलकाता और जमशेद जी टाटा के नाम पर बसे इस्पात नगर जमशेदपुर के बीच चलनेवाली टाटा एक्सप्रेस में एक सौ वर्ष बाद २८ जून २०७३ में यात्रा करने के लिए एक टिकट खरीदा। डे के यात्रा भाड़ा देने के बाद टिकट उन्हें दे दिया गया। अब वे ६० वर्ष के हैं और यात्रा की तारीख पर वे १२५ वर्ष के हो जायेंगे। डे स्वयं टिकट का इस्तेमाल करने की आशा नहीं रखते। वे कहते हैं कि वे इसे अपनी बेटी को दे देंगे और आशा करते हैं कि उसका बेटा शायद उस दिन उस ट्रेन में यात्रा करे।

नये ऐवरेस्ट कीर्तिमान

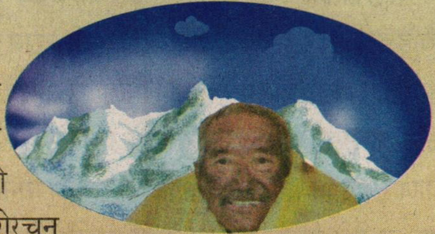

आस्ट्रेलिया में सिडनी की रहनेवाली चेरिल बार्ट तथा निक्की की ८८५० मी. ऊँची चोटी पर कदम रखनेवाली माँ-बेटी की पहली टीम है। उन्होंने चोटी पर २४ मई को कदम रखा। दूसरे दिन सुबह ७५ वर्षीय मीन बहादुर शेरचन चोटी पर चढ़नेवाले सबसे अधिक आयु के प्रथम व्यक्ति हो गये। पिछले वर्ष ७१ वर्षीय कटसुस्के यानागिसावा के पास यह कीर्तिमान था। शेरचन, जो नेपाली है, सबसे अधिक इसलिए खुश था, क्योंकि उसके देश के आरोहियों द्वारा स्थापित अनेक कीर्तिमानों में उसका भी एक कीर्तिमान है।

इंद्रजित

रावणासुर ने अपनी अद्भुत तपोशक्ति से भगवान ब्रह्मा व परमशिव को प्रसन्न किया। वेदों का गहरा अध्ययन किया। दिक्पालकों को भयकंपित किया। उसने साबित कर दिखाया कि उसके पास जितनी संपदा है, उतनी संपदा किसी और के पास है नहीं। किन्तु उसने धर्ममार्ग को छोड़ दिया और अधर्म मार्ग को अपनाया। इस वजह से उसने अपनों को खो दिया और वह दुखान्त नायक बनकर रह गया।

ऐसे रावण व पतिव्रता मंदोदरी का ज्येष्ठ पुत्र ही है इंद्रजित। अच्छाई और बुराई में भी उसने हर हालत में पिता का साथ दिया। पिता की आज्ञा के अनुसार उसने शत्रुओं से अंत तक युद्ध किया और प्राण त्याग दिया। वह पिता को ही सर्वस्व मानता था, उन्हीं के लिए उसने अपने को समर्पित किया। इसलिए वह वीरकुमार के नाम से विख्यात हुआ।

महेश्वर की तपस्या करके मेघनाथ उनकी कृपा का पात्र बना। अद्भुत शक्तियाँ पायीं। जब पिता रावण इंद्र से युद्ध करने गये, तब मेघनाथ भी उनके साथ-साथ गया। इंद्र ने रावण को हराया और उसे क़ैद कर लिया। तब मेघनाथ ने अदृश्य होकर राक्षसी मायाओं से इंद्र को पराजित किया और अपने पिता को छुड़ाया। फिर जब बंदी इंद्र को लेकर खींचता हुआ वह जा रहा था, तब ब्रह्मा ने उसे छोड़ने के लिए विनती की। इंद्र पर विजय प्राप्त करने के कारण ही उसका असली नाम मेघनाद भुला दिया गया और तब से वह इंद्रजित के नाम से बुलाया जाने लगा।

हनुमान ने जब लंका में प्रवेश किया और सीता से मिला, तब उसके बाद उसने किंकरों, जंबुमालि, अक्षकुमार आदि राक्षस वीरों का संहार किया। सब कुछ ध्वंस कर दिया। तब इंद्रजित

पौराणिक युवा नायक - ४

ने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए हनुमान पर बाणों की वर्षा बरसायी। उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उसके किसी की बाण ने हनुमान को छुआ तक नहीं। अब उसने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया और उसे बंदी बनाकर पिता के सामने खड़ा कर दिया।

बड़े भाई विभीषण ने रावण को सलाह दी कि वह सीता को मुक्त कर दे और राम से मैत्री स्थापित करे। रावण ने इसका विरोध किया। उसने इसके लिए आपत्ति जताते हुए विभीषण से कहा कि संकट के समय शत्रुओं से डरकर उनका आश्रय लेना नहीं चाहिये।

राम-रावण युद्ध का प्रारंभ हुआ। बानर और राक्षसों के बीच भीषग युद्ध हो रहा था। इंद्रजित ने गुरु का उपदेश पाया, होम किया और होम से निकले सुवर्ण रथ में बैठकर युद्धक्षेत्र गया। पहले उसने अंगद से द्वंद्व युद्ध किया। अंगद ने जब उसके सारथी को और उसके घोड़ों को मार डाला तब वह अदृश्य होकर मायावी युद्ध करने लगा।

राम और लक्ष्मण दोनों को उसने नागास्त्रों से बांध डाला और उनके शरीरों को बाणों से भर दिया, जिसके कारण वे दोनों बेहोश हो गये। वानर डर गये और ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। तब गरुत्मंत गरुड़ प्रकट हुआ और झंझावात की सृष्टि करके नागाओं को हटाया। तब जाकर राम लक्ष्मण को होश आया।

इसके बाद भेड़िया और सिंह के मुखवाले गधों के रथ पर धूम्राक्ष युद्ध क्षेत्र में आया, तब हनुमान ने पर्वत जैसे चट्टान को उसपर फेंका और उसे मार डाला। इसके बाद वज्रदष्टु के सिर को अंगद ने काट डाला। अकंपन को हनुमान ने पेड़ उखाड़कर उससे मार डाला। प्रहस्त नामक दानव वीर ने भीषण लड़ाई लड़ी और आखिर नील के हाथों मारा गया।

क्रोधित रावण युद्धक्षेत्र में आया और पहले पहल उसने हनुमान पर तीक्ष्ण बाण चलाये। राम ने जब यह देखा, तब उसने रावण की छाती पर बिजली जैसा बाण चलाया। उसने रावण का मुकुट गिरा दिया। इसके बाद राम ने उसके सारथी और घोड़ों को मार डाला और रावण से कहा, ''अब तुम्हारे पास कोई आयुध नहीं रहा। आज युद्ध भूमि से लौट जाओ और आयुध सहित कल आना''। यों कहकर उसे छोड़ दि...।

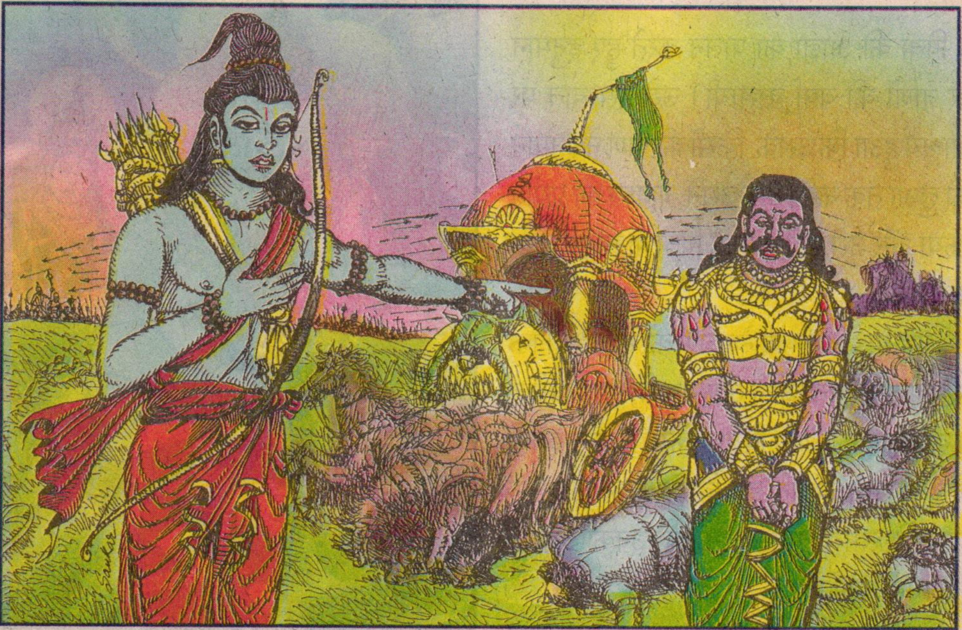

रावण का गर्व भंग हुआ। अपमानित होकर युद्ध भूमि से उसे लौटना पड़ा। फिर उसने गाढ़ी निद्राग्रस्त महाबलशाली कुंभकर्ण को जगाकर उसने उसे परिस्थिति का विवरण दिया। पहले तो कुंभकर्ण ने रावण को समझाया कि राम से युद्ध न करो और उसकी पत्नी सीता को उसे लौटा दो। इसके लिए युद्ध करना ठीक नहीं है। लेकिन रावण क्रोधित होकर उसे भला बुरा कहने लगा। जब रावण ने उसकी सलाह नहीं मानी तब वह राम से युद्ध करने के लिए तैयार हो गया। उसने पर्वताकार त्रिशूल लिया और युद्धक्षेत्र में प्रवेश किया। जो भी वानर सामने आया, उसे खाने लगा और तहलका मचा दिया। हनुमान और सुग्रीव ने उसका सामना किया तो उन्हें खूब मारा-पीटा। आखिर राम ने वायुव्यास्त्र व इंद्रास्त्र का प्रयोग करके उसके हाथ, पैर और उसके सिर को काट डाला। इसके बाद अतिकाय और पाँच वीरों को उन्होंने मार डाला।

दुख में डूबे रावण को शांत करके इंद्रजित युद्धक्षेत्र में जाने के लिए निकल पड़ा। युद्धक्षेत्र में चारों ओर राक्षसों को खड़ा करके उसने होम किया। ब्रह्मास्त्र का जप किया और धनुष व रथ को अभिमंत्रित किया। इसके बाद रथ सहित आकाश में अदृश्य हो गया। वहाँ से राम और लक्ष्मण पर बाण चलाने लगा। उन बाणों की वर्षा से सबके सब बेहोश हो गये। इंद्रजित के द्वारा प्रयोग किए गए ब्रह्मास्त्र के कारण लक्ष्मण बेहोश हो गया। इंद्रजित बेहद खुश होते हुए लौटा। इसके बाद जांबवंत की सलाह पर हनुमान हिमालय पर गया और वहाँ से संजीवनी औषधि सहित पर्वत

को लाकर लक्ष्मण और सबको बचाया। वानरों ने लंका नगर को घेर लिया। रावण ने कुंभकर्ण के पुत्र कुंभनिकुंभ को भेजा। सुग्रीव और हनुमान ने उन्हें मार डाला।

रावण ने राम और लक्ष्मण को किसी भी हालत में मार डालने की आज्ञा इंद्रजित को दी और उसे युद्धक्षेत्र भेजा। युद्धक्षेत्र में प्रवेश करने के बाद अदृश्य होकर वह आकाश से राम लक्ष्मण पर बाणों की वर्षा बरसाने लगा। शत्रुओं के आत्म विश्वास को तोड़ने के उद्देश्य से उसने माया की सीता की सृष्टि की। हनुमान के सामने ही उस माया सीता को तरह-तरह से सताया और उसे मार डाला। घबराये वानर वीरों ने यह समाचार राम को सुनाया।

उस समय पर वहाँ आये विभीषण ने उनसे कहा, "यह सब माया है। इंद्रजित से की गयी माया है यह। वह अब होम करने निकुंभल चैत्य गया हुआ है। होम पूरा हो जाए तो कोई भी उसे मार नहीं सकता। इसलिए इसके पहले ही वहाँ जाना चाहिये। इसके लिए लक्ष्मण का वहाँ जाना अनिवार्य है।"

जैसे ही इंद्रजित को मालूम हो गया कि लक्ष्मण वानर सेना सहित वहाँ आया हुआ है तो होम पूरा किये बिना ही वह हनुमान से युद्ध करने लगा। लक्ष्मण को इंद्रजित पर बाण चलाने की प्रेरणा विभीषण ने दी। यह देखकर इंद्रजित ने विभीषण से कहा, "मेरे सगे संबंधी हो, फिर भी मेरे ही विरुद्ध द्रोह करते हो। तुम्हें शर्म नहीं आती, शत्रुओं के साथ मिलकर एक नीच की तरह व्यवहार कर रहे हो! निर्लज्ज कहीं के!"

फिर उसने लक्ष्मण पर बाण चलाते हुए सिंहनाद किया। दोनों एक-दूसरे से समान रूप से लड़ने लगे। विभीषण ने भी लक्ष्मण के साथ मिलकर उसका मुकाबला किया। लक्ष्मण ने इंद्रजित के रथ सारथी को मार डाला। वानर वीरों ने उसके घोड़ों को मार डाला। इंद्रजित देखते-देखते एक नये रथ में प्रकट हुआ। विभीषण ने उस रथ के अश्वों को मार डाला। इंद्रजित ज़मीन पर कूद पड़ा और लक्ष्मण पर दिव्यास्त्रों का प्रयोग करने लगा। अंत में लक्ष्मण ने अपने दिव्यास्त्र से इंद्रजित का सिर काट डाला।

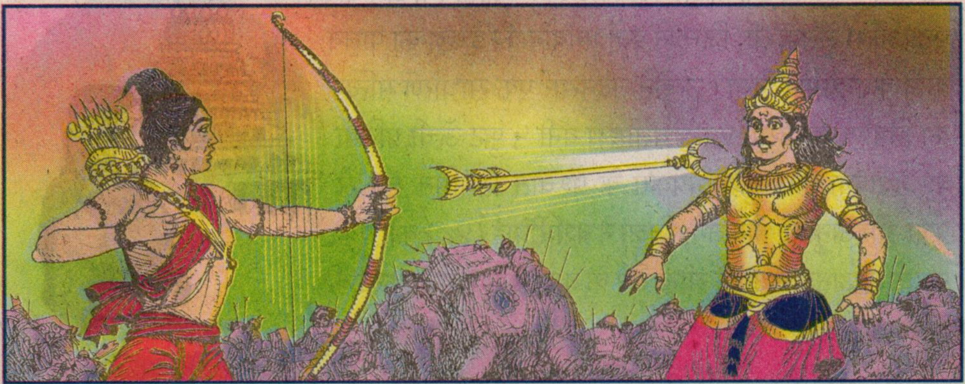

सन्त-कवि के लिए प्रतिमा

कुछ दिनों पहले अन्नमाचार्य की एक १०८ फुट ऊँची प्रतिमा का अनावरण उनके जन्म स्थान आन्ध्रप्रदेश के कडपा जिले में तल्लापाक में किया गया। यह सन्त-कवि के ६०० वें जन्म दिन समारोह के अवसर पर किया गया, जिनका जन्म १४०८ में हुआ था और जो ९५ वर्ष तक जीवित रहे। विश्वास किया जाता है कि उन्होंने सप्तगिरि के स्वामी वेंकटेश्वर की महिमा पर ३२,००० कीर्त्तनों (गीतों) की रचना की। उनके गीतों ने तेलुगु साहित्य को समृद्ध किया है। समारोह की एक विशिष्टता यह थी कि लगभग १,००० कलाकारों ने 'संकीर्तन यात्रा' में उनके कीर्तन गाये।

यह, भारत में !

दस वर्ष पूर्व, तमिलनाडु में चिदम्बरम के निकट किल्लई गाँव की एम. बसीरीबाई ने एक स्वप्न देखा जिसमें उसके सामने एक देवी प्रकट हुई जिसने आदेश दिया कि वह और उसका पति मुहम्मद जिन्ना श्री मारियम्मन का एक मन्दिर बनाये। उन्होंने ज्योतिषियों और भविष्य वक्ताओं से सलाह ली, जिन्होंने इन्हें भगवान की इच्छा का पालन करने का परामर्श दिया। उन्होंने तदनुसार एक साधारण मन्दिर का निर्माण कर उसमें एक पंचलोह में बनी ५ फुट ऊँची प्रतिमा की स्थापना की। कुंभाभिषेकम के पश्चात नियमित रूप से पूजा और अनुष्ठान होने लगे; जिन्ना ने बशीरीबाई (४८) को, एक पुजारी से अनुष्ठान आदि सीख लेने के बाद, दैनिक पूजा करने की अनुमति दे दी।

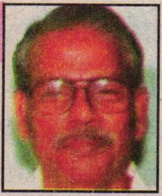

कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी - १६

मलयालम के बहुसर्जक लेखक सी. राधाकृष्णन ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में साठ से अधिक पुस्तकों की रचना की है। उन्हें मलयालम और अंग्रेजी में कुछ अनूदित कृतियों का भी श्रेय प्राप्त है। भौतिक शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करके इन्होंने विज्ञान पर लिखना आरम्भ किया। लगभग बीस साहित्यिक पुरस्कारों के विजेता सी.राधाकृष्णन को साहित्य अकादमी तथा केरल साहित्य अकादमी दोनों संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है।

सितारों के आगे जहाँ और भी हैं

मेरे दादा बहुत कहानियाँ कहते रहते थे। एक कहानी जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी, बार-बार मुझे याद आती है।

एक बहुत बड़ा राजा था, गुणाकर। वह बहुत परोपकारी राजा था, इसलिए उसकी प्रजा बहुत सुखी थी। हरेक व्यक्ति के पास उसकी इच्छा के मुताबिक हर चीज थी, केवल स्वप्न नहीं थे। सपने उनके लिए अज्ञात और अनजान थे, क्योंकि एक संत ने शाप दे दिया था।

वह सन्त गुणाकर के परदादा दिनकर के शासन काल में आया था। राजा दिनकर स्वभाव से स्वप्नदर्शी था। जब सन्त उससे बात कर रहा था, तब वह दिवास्वप्न देखने लगा। सन्त बहुत नाराज हो गया। उसने शाप दिया कि राज्य में कोई भी स्वप्न नहीं देख पायेगा। अब इस कारण एक समस्या हो गई। कला और विज्ञान का फलना-फूलना बन्द हो गया। ये दोनों स्वप्न होते हैं जो सच बन जाते हैं। पहले स्वप्न देखे बिना कोई चित्र नहीं बना सकता। जब तक किसी ने पुल का स्वप्न नहीं देखा, तब तक उसका निर्माण नहीं हो सकता। जब तक मन में कहानी का जन्म नहीं होता, उसे सुनाया नहीं जा सकता।

सपनों से अनजान गुणाकर बड़ा हो गया। उसने अपने निकटवर्ती राज्य की राजकुमारी भावना से विवाह के पूर्व अपने राज्य की सीमा कभी पार नहीं की थी। जब अपने राज्य से बाहर उसने कदम रखा, वह सपने देखने लगा। यह एक बड़ी अद्भुत अनुभूति थी। पर राजा और उसकी दुल्हन जैसे ही अपने महल में लौटे कि दोनों स्वप्न देखने की योग्यता खो बैठे। गुणाकर को स्वप्न के बिना रहने की आदत थी, इसलिए उसे रानी की अपेक्षा कम कष्ट हुआ।

दोनों ने मिल कर राज्य में सपनों को फिर से वापस लाने की योजना बनाने का प्रयास करने लगे। ये योजनाएँ स्वयं स्वप्न थीं, इसलिए इसमें वे सफल न हो सके। अतः कुछ दिनों के लिए उन दोनों ने राज्य से बाहर रहने का निश्चय किया। जैसे ही उन्होंने अपने राज्य की सीमा

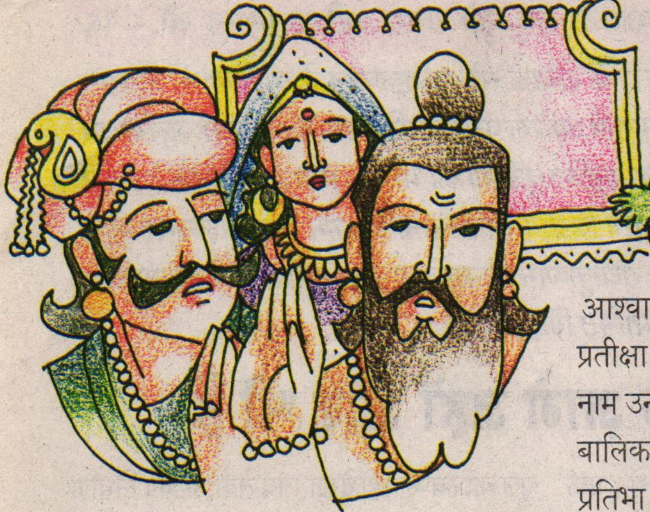

पार की, वे सपने देखने के लिए स्वतन्त्र थे। वे एक वट वृक्ष के नीचे बैठ गये और अलग-अलग योजनाओं के बारे में सोचने लगे। अन्त में उन्होंने स्वयं उस सन्त से ही मिलकर बात करने का निश्चय किया।

वह सन्त एक चिरंजीवी (सब दिन रहने वाला) परिव्राजक था। इसलिए उससे मिलने में राजा और रानी को बहुत दिन लग गये। वे चलते-चलते अपने सपनों को ताल-पत्र पर लिखते रहते थे। उन्हें आशा थी कि वे अपने राज्य में वापस जाने पर भी सपने देखना जारी रख पायेंगे।

सन्त को उन पर दया आ गई। वह पहले ही इस बात के लिए पछता रहा था कि राजा की एक छोटी-सी भूल के लिए उसने पूरे राज्य को दण्डित कर दिया था। लेकिन उसने कहा, ''तुम्हें कुछ और दिनों तक प्रतीक्षा करनी होगी, जब तक तुम्हारे दो बच्चे न हो जायें। जब वे सपने देखने योग्य बड़े हो जायें, तब वे पुनर्तम सितारे पर जायेंगे, जहाँ तुम्हारे राज्य के सपने छिपे हुए हैं, और उन्हें वापस लायेंगे।''

गुणाकर तथा भावना अपने राज्य में लौट गये। जैसे ही वे अपने राज्य में आये, उनके बहुमूल्य ताल-पत्र पर लिखे सपने मिट गये। पर संत का आश्वासन उन्हें याद था। उन्होंने धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की। पहला शिशु बालक था, जिसका नाम उन्होंने मेधा रखा. दो वर्षों के उपरान्त एक बालिका ने जन्म लिया और उसे नाम दिया प्रतिभा। सन्त अपने आप ही बच्चों को ज्ञान की दीक्षा देने के लिए महल में आया। सन्त ने उन्हें पहनने के लिए हीरा दिया। इन जादू के पत्थरों ने उन्हें स्वप्न देखने की शक्ति दी। उन्होंने जिज्ञासावश प्रश्न पूछना शुरू किया। उसे शिक्षा देने के लिए दरबार के जिन योग्य व्यक्तियों को नियुक्त किया गया था, उन्हें इन बच्चों की जिज्ञासा को शान्त करना कठिन हो गया, क्योंकि कल्पना करने की योग्यता उनमें नहीं थी।

बच्चों की, औपचारिक शिक्षा शीघ्र ही समाप्त हो गई। राजा ने उन्हें दरबार में प्रस्तुत किया। ''मेरे प्रिय बच्चो !'' राजा ने कहा, ''तुम्हें कल्पना का वरदान दिया गया है।'' फिर उसने मेधा और प्रतिभा को तथा दरबार को यह बताया कि कैसे राज्य को शाप के कारण कष्ट झेलना पड़ा और कैसे उसने और रानी ने शाप से मुक्त होने के लिए प्रयत्न किये। उसने राजकुमार और राजकुमारी को गले लगाया और कहा, ''तुम दोनों से उम्मीद की जाती है कि शाप से राज्य की रक्षा करोगे।''

बच्चों को यह सुनकर आश्चर्य हुआ, फिर भी उन्होंने पूरी कोशिश करने का वचन दिया, पर उन्हें नहीं मालूम था कि इसे कैसे किया जाये। उन्हें पुनर्तम तारे पर पहुँचना था। उन दिनों में राज्य की सीमा पर पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी पर क्षितिज में तारा प्रकट होता था। मेधा और प्रतिभा ने तारे के निकट जाने के लिए पहाड़ी की चोटी पर चढ़ने का निश्चय किया।

परन्तु राजा और रानी इतने ऊँचे पर्वत के आरोहण में भारी खतरों के कारण उनकी इस योजना से सहमत नहीं हुए। मार्ग खड़ी ढाल वाला और संकीर्ण था। बर्फ से ढके रहने के कारण कहीं-कहीं फिसलने का भय था।

काफी विचार-विमर्श तथा परामर्श के पश्चात बच्चों को पर्वत पर आरोहण की अनुमति दे दी गई। राजा ने उनके साथ कुछ सैनिकों को भेजा। बच्चों ने उन्हें आधार शिविर में ही ठहरने को कहा, क्योंकि चोटी पर केवल उन्हें ही जाना चाहिये था। छः दिनों की खतरनाक चढ़ाई के बाद वे चोटी पर चढ़ गये। उन्हें यह देख कर निराशा हुई कि तारा चोटी से उतना ही दूर था जितना कि नीचे की समतल भूमि से। वे वापस आने लगे। उन्हें आधार शिविर तक आने में तीन दिन लगे, जहाँ पर सैनिक चिन्तित होकर राजकुमार और राजकुमारी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

महल में वापस आकर बच्चों ने अपने पिता को बताया कि उन्होंने तारे के बारे में पता लगा लिया है। राजा ने अगली रणनीति तय करने के लिए राज्य के ज्ञानी पंड़ितों को बुलाया। उन लोगों ने धन के देवता कुबेर और उनके पुष्पक विमान के विषय में सुन रखा था। एक ज्ञानी पंड़ित ने सुझाव दिया कि कुबेर को मनाने के लिए याग करना चाहिये और राजकुमार तथा राजकुमारी की तारे तक जाने की यात्रा के लिए उनसे दिव्य विमान देने की प्रार्थना करनी चाहिये।

राजगुरु के निरीक्षण में याग आरम्भ किया गया, जिसमें एक हजार घट घी का होम किया गया। एक हजार गायें ब्राह्मणों को दक्षिणा में दी गईं तथा एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ तीस दिनों तक मंत्र जप करनेवाले पंड़ितों को दान की गईं। अन्तिम दिन अग्निकुण्ड की लपटों में से कुबेर प्रकट हुए जिन्होंने मेधा तथा प्रतिभा को आशीर्वाद

दिया। कुबेर के दिव्य रूप को केवल मेधा और प्रतिभा ने ही देखा। कुबेर ने उन्हें कहा कि उनका पुष्पक विमान केवल स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल तक ही जा सकता है, किसी तारे तक नहीं।

''किन्तु, हे प्रभु!'' मेधा ने अनुरोध किया, ''हमलोगों को अपनी प्रजा के सपनों को मुक्त कराने के लिए पुनर्तम तक जाना है।''

''मैं सलाह दूँगा कि तुम व्यास महर्षि की मदद लो, जो सूरज, चाँद तथा तारों के अलावा ब्रह्माण्ड के विषय में हर चीज जानते हैं।''

''लेकिन, हे प्रभु, वे ऋषि हमें कहाँ मिलेंगे?'' मेधा ने पूछा।

''वे देखने में कैसे हैं?'' प्रतिभा ने प्रश्न किया।

कुबेर ने तब उस महा ऋषि का पूरा विवरण दिया। फिर वे अन्तर्धान हो गये।

राजकुमार और राजकुमारी ने अपने दोनों हीरों की सहायता से कुछ दिन तक प्रार्थना और व्यास की छवि की मानसिक कल्पना करते रहे। उनकी कल्पना में महर्षि प्रकट हुए। ''हे दिव्य मुनि, कृपया हमें बतायें कि पुनर्तम तारे तक हम कैसे पहुँच सकते हैं?'' बच्चों ने प्रार्थना की।

ऋषि मुस्कुराये, फिर बोले, ''अपनी यात्रा आरम्भ करने से पूर्व तुम्हें यह अवश्य जानना चाहिये कि आकाश दो हैं।'' ''वे दो कौन-कौन है?'' मेधा और प्रतिभा ने पूछा।

''एक आकाश वह है जिसे तुम अपने सिर के ऊपर देखते हो, इसे बहिराकाश कहते हैं। दूसरे को चिदाकाश कहते हैं, जो तुम्हारे चित् अथवा मन में है। बाह्य आकाश चिदाकाश का

प्रतिबिम्ब है। अतः पुनर्तम पहले से ही तुम्हारे अन्तर में है।''

''हे ऋषि, कृपया बतायें कि हमारे अन्दर क्या सूर्य और चन्द्र भी हैं?'' बच्चों ने पूछा।

''सन्देह क्यों होना चाहिये? तारे में अपने सपनों और अन्य सब के सपनों की खोज करो तथा उन्हें मुक्त करो!'' व्यास यह कह कर अन्तर्धान हो गये।

उनकी खोज बहुत दिनों तक चलती रही। अन्ततः उन्होंने इस प्रकार अपने चित् को एकाग्र किया कि उन्हें अपने पिता, माता तथा राज्य के सभी लोगों के सपनों का ज्ञान हो गया।

अब लोगों को समझ में आ गया कि मेधा बुद्धि का प्रतीक है और प्रतिभा कल्पना का द्योतक है।

मध्य प्रदेश की एक लोक कथा

पुजारी की भविष्यवाणी

मोरबा गाँव का पुजारी बुद्धिमान, ज्ञानी और दयालु था। गाँव में उसका बहुत आदर और सम्मान था। गाँव में जब भी किसी परिवार में उत्सव और समारोह होता तो लोग उसे आमन्त्रित करते और ऐसे अवसरों के लिए शुभ दिन और मुहूर्त के बारे में उससे परामर्श लेते। पड़ोसी गाँव के लोग भी उसकी सहायता, सेवा और सलाह का लाभ उठाते थे।

जैसे-जैसे दिन गुजरने लगे, पुजारी वृद्ध होने के कारण पहले की तरह अक्सर बाहर आने-जाने में असमर्थ अनुभव करने लगा। वह समझ गया कि उम्र उस पर हावी होने लगा है। वह ग्रामीणों को निराश नहीं करना चाहता था, इसलिए दूसरे गाँवों में होनेवाले धार्मिक अनुष्ठानों में जाने के लिए उसने अपने बदले अपने बेटे ओंकार को प्रेरित किया और अपने को अपने गाँव मोरबा के उत्सवों तक ही सीमित रखा।

ओंकार ने, अपने पिता को बताये बिना, ग्रामीणों से अपनी सेवाओं के बदले पैसे लेने लगा। पहले तो गाँववालों ने बुरा नहीं माना, परन्तु जब वह बिना किसी काम या परामर्श के लोगों से पैसे माँगने लगा तो लोगों को बुरा लगा और उन्होंने उससे परामर्श लेना और उसे उत्सवों तथा अनुष्ठानों में बुलाना छोड़ दिया।

जब मोरबा के बूढ़े पुजारी का देहान्त हो गया, तब गाँववालों के पास अनुष्ठानों में उपस्थित रहने के लिए ओंकार को बुलाने के अतिरिक्त और कोई चारा न था। जब उन्हें यह मालूम हुआ कि ओंकार पड़ोसी गाँव से अपने काम के लिए पैसे लेता है, तब वे भी उसे परामर्श के बदले पैसे देने लगे।

मोरबा का एक युवक राहुल अपने मिट्टी के बरतनों को बेचने के लिए गाँव-गाँव फेरी लगाता था। उसे एक गाँव की लड़की माधवी बहुत अच्छी लगी। वह सुन्दर थी। राहुल

उससे विवाह करना चाहता था। माधवी के माता-पिता गरीब थे। वे दोनों के विवाह के लिए सहमत तो हो गये, पर वे विवाह पर अधिक पैसे खर्च करने को तैयार न थे। वे सादा समारोह चाहते थे। यहाँ तक कि वे पुजारी को भी बुलाना नहीं चाहते थे।

इसलिए ओंकार को विवाह की सूचना दी गई और न ही उसे निमन्त्रित किया गया। दुलहे के बरात में भी उसे बुलाया नहीं गया। ज़ब उसे विवाह की जानकारी मिली, तब उसने अपमानित अनुभव किया।

दुल्हिन के घर में रिवाज के अनुसार तीन दिनों के अनुष्ठान के बाद, माधवी को मोरबा लाया गया। राहुल के पिता इस अवसर पर एक प्रीतिभोज देना चाहते थे, जिसमें गाँव के ऐसे लोगों को, जो बरात में नहीं शामिल हो सके थे, नव दम्पति को आशीर्वाद देने के लिए आमन्त्रित किया जा सके। इसलिए उसने ओंकार को भी आमन्त्रित किया। ओंकार ने तुरन्त आमन्त्रण स्वीकार कर लिया। पर उसने यह शिकायत की कि उसे विवाह में शामिल होने के लिए क्यों नहीं बुलाया गया।

राहुल के पिता ने इसके लिए क्षमा माँगी। उसने कहा कि दुल्हिन के माता-पिता ही किफायत करने के लिए पुजारी को बुलाना नहीं चाहते थे। ओंकार ने मुस्कुराते हुए उसे विदा कर दिया। पर उसकी मुस्कुराहट के पीछे उसकी दुष्टतापूर्ण नीयत साफ झलक रही थी!

प्रीतिभोज में ओंकार का सम्मानपूर्वक सम्मान किया गया। लोग उसे, आशीर्वाद देने के लिए दुल्हा और दुल्हिन के पास ले गये जो एक कमरे में चटाई पर बैठे हुए थे। एक क्षण के लिए दुल्हिन के सुन्दर चेहरे पर ओंकार की नजर पड़ गई। अगले क्षण वह गरजने लगा, ''वह शैतान की मूर्तिमान रूप है। इसे ले जाओ।'' फिर वह पैर पटकता कमरे से बाहर आ गया और वहाँ से जाने लगा। राहुल के माता-पिता उसके पीछे-पीछे आकर माफी माँगने लगे, ''कृपया क्षमा कर दें।''

वह रोष भरे शब्दों में बोला, ''यह विवाह नहीं होना चाहिये था। यदि तुम मुझसे सलाह माँगते तो मैं कभी यह विवाह नहीं होने देता। जितनी जल्दी इस लड़की को वापस भेज दो, लड़के और उसके परिवार के लिए उतना ही अच्छा होगा। यहाँ लड़की के रहने से सबका अनिष्ट होगा।''

राहुल के माता-पिता असमंजस में पड़ गये। क्या वे उस भोली भाली बालिका को बिना किसी कसूर के वापस भेज दें, जैसा कि पुजारी ने चेतावनी दी? जब वे अन्दर गये,माधवी फफक कर रो रही थी। वे चाहते थे कि किसी तरह उसे सान्त्वना देकर चुप करा दें और हिम्मत बनाये रखें जिससे गाँव के निमंत्रित लोगों को यहाँ की वहाँ घटना के बारे में पता न चले। सौभाग्य से वहाँ कोई व्यक्ति मौजूद न था। लोगों ने सिर्फ इतना ही देखा कि पुजारी को घर के मालिक लोग बाहर तक छोड़ने जा रहे हैं।

अगले दिन सुबह राहुल ने ही अपने माता-पिता को बताया कि माधवी ने अपने घर वापस जाने का निश्चय कर लिया है और जब तक वह अपने को पुजारी की घोषणा से कि वह दुष्टात्मा है, निर्दोष साबित नहीं कर देती, वह यहाँ वापस नहीं आयेगी। राहुल ने यह भी कहा कि वह माधवी को उसके परिवार में छोड़ने के लिए उसके साथ चला जायेगा। राहुल की इस बात से उसके माता-पिता सहमत नहीं हुए। बल्कि उन्होंने कहा कि हमलोग स्वयं उसे उसके घर छोड़ने जायें तो अधिक अच्छा होगा।

तदनुसार, राहुल के माता-पिता स्वयं माधवी के साथ उसके गाँव गये। मार्ग में उन्होंने माधवी को समझाया कि वे जब उसके माता-पिता के साथ बात करेंगे तो उसे शान्त रहना चाहिये। उन्होंने बहू को आश्वासन देते हुए कहा कि जैसे ही ये सन्देह स्पष्ट हो जायेंगे, राहुल तुम्हें आकर वापस ले जायेगा।

राहुल के माता-पिता की किस्मत अच्छी थी कि माधवी के परिवारवालों ने सिर्फ यह समझा कि उसे घर की याद आती होगी, इसलिए कुछ दिन यहाँ रह कर फिर चली जायेगी। परन्तु, राहुल के माता-पिता ने वस्तुस्थिति की जानकारी देते हुए कहा कि कैसे विवाह में न बुलाने के कारण ओंकार ने अपना क्रोध निकाला और नवदम्पति को आशीर्वाद देने से इनकार कर दिया।

माधवी के माता-पिता यह सुन कर हँसने लगे। ''वह कैसा मूर्ख है! यह तो हमलोगों का ही निर्णय था कि विवाह में उसे निमन्त्रित नहीं करेंगे। हमलोगों ने उसे इसलिए नहीं बुलाया कि हमारे

करें। यदि उसने मेरी बेटी और दामाद को आशीर्वाद देने से इनकार कर दिया है तो कोई बात नहीं। हम लोग इतने में ही खुश हैं कि माधवी को पति मिल गया और हमारा आशीर्वाद उनके साथ है और निश्चय ही आप का आशीर्वाद भी उन्हें मिलेगा। उसे यहाँ एक दो दिन रहने दीजिये। उसके बाद हम स्वयं आप के घर छोड़ आयेंगे।''

इससे राहुल के माता-पिता को बहुत राहत मिली। जब राहुल को उन्होंने माधवी के माता-पिता के साथ हुई बातचीत का ब्योरा दिया तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ। राहुल ने अपने माता-पिता को एक खबर सुनाई।

गाँव ने उसका लगभग बहिष्कार कर दिया है। वह अपने पिता के स्वभाव के प्रतिकूल बहुत लालची है। उसके पिता हम गरीब किसानों का बहुत ख्याल रखते थे। इसके पिता के पास काफी दौलत थी और पुजारी के काम के बदले में वे दक्षिणा नहीं लेते थे। बेटा वास्तव में गुप्त रूप से पैसे लेकर उनके नाम को बदनाम कर रहा था। हमारे गाँववालों ने निश्चय किया कि अब हमलोग उससे पुजारी की सेवा नहीं लेंगे। आप चिन्ता न

मोरबा के ग्रामीणों को मालूम हुआ कि ओंकार अपने पिता का सच्चा उत्तराधिकारी नहीं है, क्योंकि अनुष्ठानों के लिए पुजारी में जो ज्ञान होना चाहिये, वह उसमें नहीं है। पुराने पुजारी के प्रति सम्मान के कारण ही वे उसको बर्दाश्त करते रहे। इसलिए अब उन्होंने उसे गाँव से निकालने का निश्चय किया है।

कुछ दिनों के पश्चात, राहुल कुछ गाँववालों को लेकर ओंकार के घर पर गया। लेकिन उसका घर खाली और उजाड़ था। पुजारी ने शायद अपने भाग्य के विषय में ही भविष्यवाणी की थी।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-७ अगस्त २००८ उत्तर:

१. अकबर; २. शेरशाह सूरी, दिल्ली का सुलतान, १५४२ में; ३. १८६२ में; ४. २६ जनवरी १९५०; ५. विलियम चतुर्थ; ६. १७७४ में; दो आने; ७. १८५२ में; ''सिण्डे डॉक'', क्योंकि यह केवल सिन्ध प्रान्त में (अब पाकिस्तान में है), प्रयोग के लिए था; ८. १८५४ के सितम्बर महीने में ; आधा आना।

महापुरुषों के जीवन की झाँकियाँ -३४

प्रतिभावान न्यायाधीश

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के विषय में किसने नहीं सुना होगा? यदि किसी को यह प्रश्न थोड़ा बेढंगा लगे और इनका नाम स्मरण न सके यद्यपि यह नाम काफी परिचित लगता है, तो दूसरा प्रश्न तुरन्त स्वतः उसकी स्मृति पटल पर उत्तर अंकित कर देगा। अमर गीत अथवा स्तोत्र 'वन्दे मातरम्'' की रचना किसने की?

बंकिमचन्द्र (१८३८-१८९४) कलकत्ता विश्वविद्यालय के पहले बैच में स्नातक उपाधि लेनेवाले दो छात्रों में से एक थे। उन्हें डिप्टी मजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त किया गया जो शायद ही उन दिनों किसी भारतीय को मिल पाता था। उस समय मजिस्ट्रेट जज भी होता था। बंकिमचन्द्र की एक ईमानदार और कुशल प्रशासक के रूप में ख्याति इतनी थी कि बड़े पदों पर इनकी उन्नति हो सकती थी। परन्तु अंग्रेज शासक इनसे डरते थे। ये किसी अंग्रेज को, चाहे कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो, अपराधी सिद्ध होने पर सजा देने में चूकते नहीं थे। अंग्रेजों को यह भी सन्देह था कि वह हृदय से राष्ट्रवादी है। यद्यपि वे अपने कर्त्तव्य के प्रति सत्यनिष्ठ थे, पर अंग्रेजी शासन के प्रेमी नहीं थे।

एक न्यायाधीश अथवा जज के रूप में उन्होंने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि तथा दूरदर्शिता से अनेक पेचीदे मामलों को सुलझाया। यहाँ एक दृष्टान्त है। इनके पहल के बिना, बेचारे एक निर्दोष को सजा भुगतानी पड़ती।

एक दिन किसी दूर गन्तव्य की यात्रा पर जाते हुए एक युवक ने मार्ग में एक गाँव के जमीन्दार से उसके भवन के बरामदे में रात बिताने की अनुमति

कहता, उसके पहले ही चोर ने अपनी दुशाला उतार दी। उसके नीचे वह सिपाही की वर्दी पहने हुए था। उसने दावा किया कि उसने युवक को चोरी के सामान के साथ पकड़ा है। युवक ने भी घटना का अपना विवरण दिया।

लोगों के लिए सच का पता लगाना असम्भव हो गया यद्यपि चोर का विवरण अधिक विश्वसनीय था। आखिर वह पुलिस का सिपाही था, जबकि युवक एक अनजाना था।

यह मुकदमा बंकिमचन्द्र की कचहरी में गया। यह विश्वास करने योग्य कारण नहीं था कि उस गाँव में खास कर उस रात में सिपाही ड्यूटी पर था, पर उसके वकील ने दलील दी कि यह संयोग था और इस बात पर जोर दिया कि सिपाही ने केवल अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। जूरी के सदस्य उससे सहमत मालूम पड़े। सबने सोचा कि सिपाही को सम्मान के साथ छोड़ दिया जायेगा।

परन्तु बंकिमचन्द्र के अन्तर्बोध को सिपाही पर सन्देह हुआ। जब मुकदमे पर बहस चल रही थी, तभी मजिस्ट्रेट का अर्दली दौड़ता हुआ आया और बोला कि कचहरी के मुनीम ब्रजगोपाल की हत्या कर दी गई है और उसका शव एक फर्लांग की दूरी पर पुल के नीचे पड़ा हुआ है। कचहरी में सन्नाटा छा गया।

''लाश को यहाँ ले आओ। उसका चेहरा आखिरी बार देख लें।'' मजिस्ट्रेट ने आदेश दिया।

''पर, सर, लाश उठानेवाले अपना वार्षिक समारोह मनाने गये हैं।'' अर्दली ने निवेदन किया।

प्राप्त की। रात अन्धेरी और शान्त थी। जब अर्धरात्रि की सूचना देते हुए सियार हुआ-हुआ करने लगे तब युवक की नींद टूट गई। उसने देखा कि कोई अपनी पीठ पर बड़ा थैला लिये पिछले दरवाजे से छिप कर निकल रहा है। युवक को स्थिति को भाँपने में कठिनाई नहीं हुई। उसने उछल कर चोर को दबोच लिया। चोर ने थैले को नीचे फेंक दिया और उसकी पकड़ से छूटने की कोशिश की। पर असफल रहा।

अचानक उसने अपने को छुड़ा कर युवक को दबोच लिया और ''चोर-चोर'' की आवाज लगाई।

लोग लालटेन लेकर दौड़ते हुए वहाँ आये और दोनों को अलग-अलग कर दिया। युवक कुछ

Exclusively for Chandamama Readers!

Do you want to be a whiz kid? SIP Academy has a lot of cool programmes, like an International Art Programme, International Abacus and Brain Gym. Enrol TODAY at any one of 455 centres across India and get 15% off!

"कोई बात नहीं, इन दो अभियोगाधीन कैदियों को मेरी आज्ञा का पालन करने कहो।" बंकिमचन्द्र ने कहा।

उस समय ऐसी परिस्थिति में मजिस्ट्रेट की आज्ञा का उल्लंघन कोई नहीं कर सकता था, यद्यपि आज हमलोगों को यह असंगत लग सकता है। उन दोनों कैदियों को उस स्थान पर ले जाया गया जहाँ ब्रजगोपाल का शरीर सफेद चादर से ढका हुआ था। सिपाही तथा युवक ने उसे एक कामचलाऊ स्ट्रेचर पर रखा और उसे लेकर वे कचहरी की ओर चलने लगे। अर्दली आगे-आगे जा रहा था।

"देखो, बेवकूफ, तुम्हारी किस्मत में यह कैसी बेइज्जती लिखी थी? तुम्हें मुझे पकड़ने की हिम्मत कैसे हुई? मैं इस जिले के सभी चोरों का गुरु हूँ। मेरी बर्दी के कारण किसी ने शक भी नहीं किया। यद्यपि इस बार पकड़ा गया हूँ, फिर भी छूट जाऊँगा। परन्तु यह सख्त जज तुम्हें पाँच साल की कड़ी सजा से कम नहीं देगा।" सिपाही हँसता हुआ बोला।

ब्रजगोपाल की हत्या की खबर फैल गई थी और कचहरी के सभी कर्मचारी, वकील तथा और भी अधिक लोग कचहरी में एकत्र हो गये थे।

मजिस्ट्रेट के सामने जैसे ही स्ट्रेचर नीचे रखा गया, ब्रजगोपाल उठकर खड़ा हो गया। सब के सब चकित रह गये। लेकिन केवल बंकिमचन्द्र मुस्कुरा रहे थे, क्योंकि इस नाटक के सूत्रधार वे ही थे।

बंकिमचन्द्र को बड़ा सलाम मारते हुए प्रसन्नचित्त ब्रजगोपाल ने वह सम्वाद सुनाया जो उसने कचहरी आते समय स्ट्रेचर की सवारी का आनन्द लेते हुए सिपाही के मुख से सुना था।

जूरी मजिस्ट्रेट के इस फैसले से सहमत हो गये कि सिपाही को ऐसी सज़ा मिलनी चाहिये जो उदाहरण बन जाये। सब ने युवक को बधाई दी और जमीन्दार ने, जो उसका मेजवान था, उसे पुरस्कृत किया। ***(एम.डी.)***

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-१३

साहसिक पलायन तथा एक दुःखद विश्वासघात

अंग्रेज़ों के विरुद्ध १८५७ के प्रचण्ड भारतीय विद्रोह के उन्माद की ज्वाला भड़कने के बहुत पहले, सुदूर दक्षिण में एक युवा निर्भीक राजा रहता था, जो सबसे पहले विदेशी शासकों का मुकाबला करनेवालों में से एक था। सम्भवतः वह पहला व्यक्ति था जिसने मातृभूमि के लिए धर्मयुद्ध का बीज वपन किया था।

तमलनाडु के पंचालनकुरिची में बहादुर वीरपांडिया कट्टाबोम्मन का जन्म सन १७६० में हुआ था। उसके दो छोटे भाई थे- कुमार स्वामी तथा दोरइसिंहम। वीरपांडिया कट्टाबोम्मन सन् १७९० में राज सिंहासन पर बैठा।

दक्षिण की अधिकांश रियासतें ऑरकॉट के नवाब के अधीन थीं। परन्तु शासकों ने उसकी अधीनता स्वीकार करने से इनकार कर दिया। नवाब शीघ्र ही दिवालिया हो गया। उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को कर वसूलने का अधिकार देकर उससे बहुत बड़ी रकम ले ली। कम्पनी ने गरीबों को लूटना शुरू कर दिया। नवाब केवल कठपुतला की तरह था। अधिकांश शासकों ने अंग्रेजों के सामने घुटने टेक दिये।

परन्तु स्वाभिमानी कट्टाबोम्मन उनमें से नहीं था। चालाक कम्पनी ने उसे अपने अधीन करने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद-सभी उपायों का सहारा लिया। पर सफलता नहीं मिली। छः वर्षों तक यह दुर्दमनीय शासक शत्रु की तानाशाही के खिलाफ अकेला लड़ता रहा। पर अंग्रेज उसे कुचलने के लिए कटिबद्ध थे।

एक दिन कट्टाबोम्मन को अपने महल के बाहर कुछ शोरगुल सुनाई पड़ा। वह तुरन्त अपने भाई कुमार स्वामी, सेनापति वेल्लायादेवन तथा मंत्री धनपति पिल्लुई के साथ बाहर निकल पड़ा। उसने देखा कि उसकी स्वामी भक्त प्रजा उत्तेजित है। वे डाकुओं के निरन्तर अत्याचार से परेशान थे। कट्टाबोम्मन ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह शीघ्र ही इस समस्या का समाधान कर देगा।

गोधूलि के समय धनी व्यापारियों का एक दल जंगल पार कर रहा था। उनके साथ एक दुल्हन भी थी जो हीरे-मोती और स्वर्ण के आभूषणों से सजी हुई थी। पेड़ों पर डाकू छिपे हुए थे। अपने सरदार का संकेत मिलते ही वे यात्रियों पर टूट पड़े।

परन्तु उन्हें बहुत बड़ा धक्का

लगा। यात्रियों ने तुरन्त अपनी छिपी तलवारें निकाल लीं। दोनों दलों में लड़ाई शुरू हो गई। अलंकारों से सुसज्जित 'दुल्हन' ने भी वीरता के साथ युद्ध किया। शीघ्र ही डाकुओं को वश में कर लिया गया। अचानक डाकुओं के सरदार ने व्यापारी के वेश में अपने राजा को पहचान लिया। उसने महसूस किया कि वे अपने राज्य के सर्वश्रेष्ठ सैनिकों से युद्ध कर रहे थे। सरदार तुरन्त कट्टाबोम्मन के पैरों पर गिर पड़ा।

उन्होंने यह रहस्य खोला कि राज्य में गड़बड़ी और असंतोष फैलाने के लिए उन्हें अंग्रेज़ों ने बहाल किया है। कट्टाबोम्मन ने उन्हें क्षमा कर दिया। कृतज्ञतावश उन्होंने यह रहस्य भी प्रकट किया कि पड़ोसी एटैयापुरम राज्य के शासक एटप्पा नैकर ने अंग्रेज़ कलक्टर से दोस्ती कर ली है। उसे उकसाया गया कि वह कट्टाबोम्मन के राज्य के विरुद्ध युद्ध के लिए उसे भड़काये। इससे अंग्रेजों को उसके शत्रु की ओर से कट्टाबोम्मन पर आक्रमण करने का अवसर मिलेगा।

शीघ्र ही, एक अंग्रेज दूत पंचालनकुरिची के दरबार में कलक्टर जैक्सन के एक सन्देश के साथ आया। सन्देश यह था कि "सभी राज्यों के शासक शिष्टता के नाते मुझसे मिलने आये परन्तु आप नहीं आये।" इच्छा नहीं रहते हुए भी कट्टाबोम्मन कलक्टर से मिलने के लिए इस आशा से राजी हुआ कि कुछ समझौते की बात होगी। वह अपने अंगरक्षकों के साथ कलक्टर से मिलने गया। परन्तु अंग्रेज कलक्टर ने स्पष्ट कहा था कि उसे मिलने के लिए अकेले आना होगा।

कट्टाबोम्मन ने रामानाथापुरम में महल में प्रवेश किया, जहाँ कलक्टर ठहरा हुआ था, और देखा कि हॉल में वह एक कुरसी पर बैठा हुआ है। उसने आगन्तुक का अभिवादन भी नहीं किया। वहाँ कोई दूसरी कुरसी भी नहीं थी। अतिथि को विवश होकर खड़ा रहना पड़ा। कलक्टर ने लिखित आरोपों को पढ़कर सुनाया। दोनों में विवाद और बहस होने लगी और कट्टाबोम्मन ने उसके हरेक शब्द का करारा जवाब दिया। जब उत्तेजित हो जैक्सन कुरसी से उठा तब कट्टाबोम्मन उछल कर उसकी कुरसी पर बैठ गया और गर्व से मुस्कुराने लगा। तब जैक्सन को दूसरी कुरसी लानी पड़ी।

"एक विदेशी के सामने एक गुलाम की तरह झुकना हमारी राजसी परम्परा नहीं है। इसलिए मैं तुम्हें टैक्स या कर नहीं दे सकता। यदि तुम्हें धन चाहिये तो कर्ज के लिए अनुरोध करो अथवा दान के लिए हाथ पसारो, परन्तु दावा न करो!"

इस तरह गरजता हुआ राजा बाहर जाने के लिए द्वार की ओर बढ़ा।

उत्तेजित जैक्सन ने ताली बजाई। उसके सैनिकों ने आकर आगन्तुक पर हमला कर दिया। कट्टाबोम्मन ने अपनी चमचमाती तलवार निकाल ली। बिजली की गति से घूमती उसकी तलवार से उसे बन्दी बनानेवाले सभी सैनिक कट-मर गये। उसके बाद वह तेजी से महल का द्वार पार कर गया। कलक्टर ने घबरा कर कुमक मंगाई। तब तक कट्टाबोम्मन के छिपे हुए आदमी उसकी रक्षा के लिए आ गये। उसके भाई ने अपनी तलवार को तेज गति से घुमाते हुए दर्जनों अंग्रेज सैनिकों को धराशायी कर दिया। उसके बहादुर सेनापति वेल्लायादेवन ने आक्रमण के नेता लोफ्टिनेंट क्लार्क को मार डाला।

जैक्सन के सैनिक अपने कप्तान को मरते देख अस्तव्यस्त हो गये। कट्टाबोम्मन अभी भी हाथ में तलवार लिये था। तभी उसकी नजर पास खड़े एक घोड़े पर पड़ी, जिस पर सवार होकर वह रफ्फू चक्कर हो गया। उसके भाई और सेनापति भी उसके पीछे चल पड़े। शीघ्र ही, विजेता राजा अपने आदमियों के साथ सुरक्षित अपने राज्य में पहुँच गया। लेकिन उसका मंत्री धनपति पिल्लई कहाँ है? आह! उसे बन्दी बना लिया गया था।

अन्त में, एक दक्ष बटालियन कमाण्डर मेजर बैनरमैन के नेतृत्व में उस छोटे राज्य की ओर कूच कर गया। इधर बन्दी धनपति पिल्लइ ने बीमार पड़ जाने का बहाना किया। वह जमीन पर लेट गया और शान्त निश्चल पड़ा रहा। रक्षक उसके कमरे में उसे देखने गये कि क्या बात है। तभी मंत्री उछल पड़ा और उसने अपने वस्त्र में छिपाये एक छोटे शस्त्र से दोनों पहरेदारों को खत्म कर डाला। फिर वह बच कर भाग गया और अपने मालिक को सूचना दी कि अंग्रेज़ भारी सेना के साथ आक्रमण करने आ रहे हैं।

शीघ्र ही, अंग्रेज़ी सेना वहाँ पहुँच गई और उसने किले को चारों ओर से घेर लिया। फिर राजा को यह सन्देश भेजा गया, "हमारे आक्रमण करने से पहले आत्म समर्पण कर दो!" परन्तु कट्टाबोम्मन ने समर्पण नहीं किया। अंग्रेजों ने प्रवेश द्वारों को तोड़ कर किले पर आक्रमण कर दिया। सरदार के आदमियों ने बहादुरी से अंग्रेज़ों का सामना किया और उनकी सेना को काफी क्षति पहुँचाई तथा उनके कमाण्डर लेफ्टिनेण्ट कोलिन्स को मार डाला। बैनरमैन ने घबरा कर और कुमक भेजने की खबर दी। कट्टाबोम्मन ने महसूस किया कि अब इस दुर्जेय सेना से युद्ध करना असम्भव होगा।

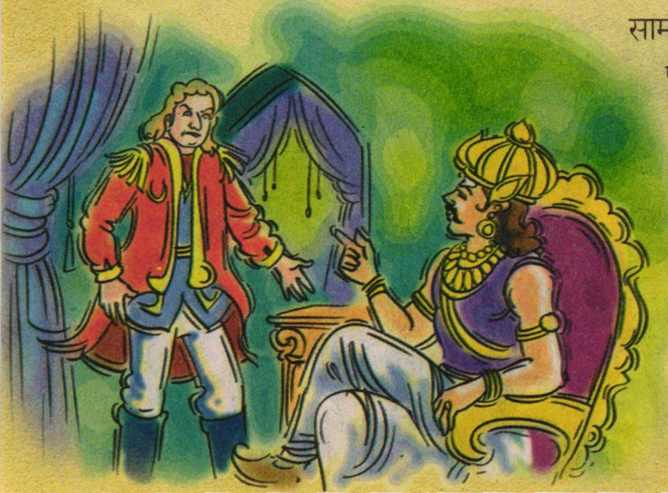

जैसे ही संध्या हुई अश्वारोहियों का

एक दल इतनी तेज़ गति से किले से बाहर निकला कि घनी रेत और धूल का तूफ़ान-सा आ गया जिसके आर-पार कुछ भी दिखाई नहीं देता था। दूसरे दिन सुबह मेजर बैनरमैन को सूचना दी गई कि उसका शिकार उसके हाथ से निकल गया।

किन्तु हमारे सावधान सैनिकों के होते हुए वह कैसे बच कर निकल गया? शीघ्र ही उन्हें समझ में आ गया कि धूल की तूफ़ान से बच कर भागने में उसे मदद मिल गई।

वह अपने एक मित्र रियासत के सरदार के महल में छिपा हुआ था। इसकी गन्ध दुश्मन को मिल गई। शासक थोंडामन ने इसे तुरन्त शरण दे दी। परन्तु दुर्भाग्य से अंग्रेज़ों की कृपा दृष्टि पाने के लिए लालची सरदार ने कट्टाबोम्मन के विश्वास पर कुठाराघात कर दिया। कट्टाबोम्मन को बन्दी बना लिया गया।

खुशी से पागल मेजर बैनरमैन ने तुरन्त उसके विरुद्ध आरोप पत्र तैयार किया और मौत की सजा सुनाई। उसका अपराध यह था कि वह अपनी मातृभूमि के लिए युद्ध कर रहा था।

वह गरजता हुआ बोला, "जब अंग्रेज़ों की सेना ने पंचालनकुरिची पर आक्रमण किया, तब यह अपराध नहीं था। जब मैंने अपने देश की रक्षा के लिए उनके विरुद्ध लड़ाई छेड़ी तब यह अक्षम्य अपराध हो गया।"

यह १७९९ के १६ अक्तूबर का भोर था। इमली के एक पेड़ से बंधा एक रस्सा एक जहरीले नाग की तरह लटक रहा था। लोग इकट्ठे हो गये थे और उनमें निष्प्राण मूर्तियों की तरह खड़े थे वे विश्वासघाती सरदार जिन्होंने कट्टाबोम्मन को शत्रु के हवाले किया था। "वह एक दृढ़ और साहस भरे कदमों के साथ चला और उसने आगे बढ़ते हुए अपने दायें और बायें खड़े सरदारों को घृणा की दृष्टि से देखा।" बैनरमैन ने लिखा, "मुझे यह बताया गया कि फाँसी के स्थान पर जाते हुए उसने अपने भाई के लिए चिन्ता व्यक्त की।"

जब वह उस वृक्ष की जड़ के पास स्वाभिमान के साथ और शान्त भाव से पहुँचा, जिस पर उसे फाँसी दी गई थी, तब उस वीर नायक ने आँखें बन्द कर लीं और वह अपनी मातृ-भूमि की स्वाधीनता के लिए प्रार्थना करते हुए शान्त बना रहा। फिर वह कुरसी पर चढ़ा, स्वयं अपने हाथों में रस्सा लिया, और अपने गले में फाँसी का फन्दा डाल लिया। फिर तुरन्त उसने कुरसी को ठोकर मार दिया जिस पर वह खड़ा था।

(ऐ.के.डी.)

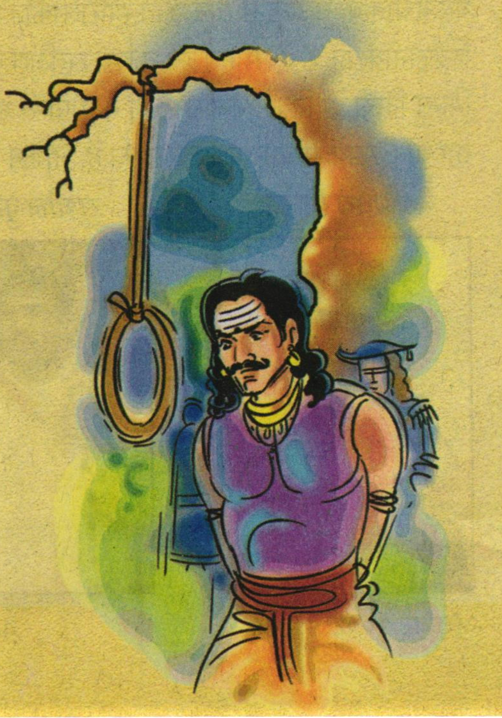

भारत के ओलम्पिक पदकधारी

विगत अगस्त महीने में बीजिंग ओलम्पिक खेलों में निशानेबाजी में एक स्वर्ण तथा कुश्ती और बॉक्सिंग में क्रमशः एक एक कांस्य पदक जीत कर अभिनव बिन्द्रा, सुशील कुमार तथा विजेन्द्र कुमार ने भारत को गौरवान्वित किया है।

सर्वश्रेष्ठ निशानेबाज २५ वर्षीय अभिनव बिन्द्रा ने भारत का सबसे पहला स्वतन्त्र ओलम्पिक स्वर्ण जीतकर इतिहास रच दिया। दो वर्ष पूर्व उसने युगोस्लाविया के जग्रेब में विश्व शूटिंग चैम्पियनशिप में स्वर्ण जीता था। बीजिंग में, उनसे २००४ के ओलम्पिक स्वर्ण पदकधारी चीन के जू किनान तथा फिनलैण्ड के हेनरी हक्कीनन को हराया। चण्डीगढ़ निवासी अभिनव का जन्म १९८२ में हुआ था। उसकी शिक्षा सेंट स्टिफेन्स स्कूल में हुई जहाँ शूटिंग खेलकूद का एक विषय है। बाद में उसने जर्मनी में प्रशिक्षण लिया।

फ्रीस्टाइल कुश्ती के ६६ के जी कैटेगरी में सुशील कुमार की जीत अप्रत्याशित थी। आरम्भिक राउण्ड्स में सुशील कुमार (२५) उक्रैन के ऐन्ड्रिय स्टैडनिक को परास्त नहीं कर पा रहा था। फिर भी, वह बचाव के राउण्ड में तीन जीतें हासिल कीं। उसने कजकिस्तान के सेमी फाइनलिस्ट लियोनिड स्प्रिडोनोव को ३-१ से हरा कर कांस्य सुरक्षित कर लिया। वह पोडियम पर शान्त और गम्भीर था, किन्तु दिल्ली के निकट नजफगढ़ के नगरोपान्त पर बसे एक छोटे गाँव बापरोला में जश्न मनाया जा रहा था। उसके परिवार में २२ सदस्य हैं, लेकिन केवल सुशील ने ही कुश्ती में दिलचस्पी ली। इससे

अभिनव बिन्द्रा

सुशील कुमार

विजेन्द्र कुमार

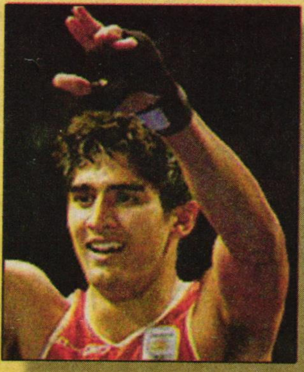

उसके दादा लोटन सिंह को बड़ी खुशी हुई जो स्वयं पहलवान थे। सुशील ओलम्पिक कुश्ती में कांस्य जीतने वाला दूसरा पहलवान था, इसके पूर्व के.डी. जादव ने १९५२ के हेलसिंकी खेलों में कांस्य लिया था।

हरियाणा का मुक्केबाज विजेन्द्र कुमार (२३), एक अन्य कांस्य पदकधारी, गत वर्ष एशियन चैम्पियनशिप में दूसरे स्थान पर था। उसे भारत की ओलम्पिक टीम में सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज माना गया। भिवानी स्कूल ऑफ बॉक्सिंग के सदस्य विजेन्द्र ने ७५ केजी कैटेगरी में इक्काडोर के कारलोस गोंगोरा को ९-४ से हरा कर सेमी फाइनल में जगह बना ली, पर क्यूबा के इमिलियो कोरिया बेयू को पार न कर सकने के कारण उसे कांस्य पर ही सन्तोष करना पड़ा। ''विजेन्द्र की उपलब्धि से अब मुक्केबाजी को बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा,'' एक अवकाशप्राप्त सेनाधिकारी उसके दादा ने कहा।

यह बड़ी दिलचस्प बात है कि तीनों पदक विजेता-अभिनव बिन्द्रा (चण्डीगढ़), सुशीलकुमार (नजफगढ़) तथा विजेन्द्र कुमार (भिवानी) २०० कि.मी. के दायरे के इलाके में पले और बढ़े।

विश्व कीर्तिमान

बीजिंग खेलों में २०५ देशों से १०,७०० प्रतियोगियों ने भाग लिया। इनमें से ८७ देशों के नाम पदकों की सूची में शामिल हैं। चीन ने ५१ स्वर्ण के साथ १०० पदक बटोर कर प्रथम स्थान लिया; अमरीका दूसरे स्थान पर था, यद्यपि इसके अर्जित पदकों की संख्या ११० थी।

बीजिंग के २९वें ओलम्पिक खेलों में ४३ नये विश्व कीर्तिमान स्थापित किये गये। अविस्मरणीय प्रदर्शन अमरीका के माइकेल फेल्प्स का था जिसने सभी आठ प्रतियोगिताओं में पुराने कीर्तिमानों को ध्वस्त कर दिया-सभी के सभी स्विमिंग प्रतियोगों में, जिनमें उसने भाग लिया। जमैका के युसैन बोल्ट का प्रदर्शन कम स्मरणीय नहीं था जिसने १०० मी. (९.६९ सेकेण्ड) तथा २०० मी. (१९.३० सेकेण्ड) दोनों में पिछले कीर्तिमानों को तोड़ दिया। रूस की एलेना आइसिनबयेवा ने बीजिंग में पोल-वॉल्ट में अपना २३ वाँ विश्व कीर्तिमान (५.०५ मी.) बनाया।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-७ अगस्त २००८

चन्दामामा के हिन्दी संस्करण के पाठकों से प्राप्त कोई प्रविष्टि सर्वशुद्ध नहीं पायी गई। इसलिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। हमारे पाठकों के लाभार्थ प्रश्नोत्तरी-७ के उत्तर ३८ पृष्ठ पर दिये गये हैं। कृपया सभी चन्दामाम प्रश्नोत्तरी प्रतियोगताओं में भाग लेते रहें।

बीरबल की
कहानियाँ -१४

अपराध का अनावरण

बादशाह अकबर बीरबल के साथ बाग में सैर कर रहे थे। बीरबल हँसानेवाले मजाक सुना कर बादशाह का दिल बहलाया करता था। वे बादशाह को एक और हाजिरजवाबी की कहानी सुनाने ही वाला था कि उन्होंने बादशाह की एक दबी कराह सुनी।

अकबर अपने दायें हाथ पर की थोड़ी सी सूजन पर जोर से उंगलियाँ रगड़ रहे थे। उन्हें काफी दर्द हो रहा था, फिर भी उन्होंने धैर्य बनाये रखा। बीरबल ने सूजन को ध्यान से देखा। फिर वह जोर से हँस पड़ा। ''मैं जब इतनी पीड़ा झेल रहा हूँ, तब तुम हँसने की जुर्रत कैसे कर सकते हो?'' बादशाह अनुमानतः क्रोध में थे।

''मुझे खेद है, शहनशाह !'' वह जल्दी से पास के पेड़ से एक पका पीला नीम्बू ले आया। फिर उसने उसे अपने चाकू से काटा और उसका रस सूजन पर डाल कर धीरे से रगड़ दिया। इससे बादशाह को थोड़ा आराम किया।

''तो नीम्बू का रस ततैये के डंक के दर्द को दूर कर सकता है?'' बादशाह ने मुस्कुराते हुए कहा।

''आपने यह सच्चाई सीख ली शहनशाह। मैंने एक दूसरी सच्चाई सीखी, जिससे मैं हँस पड़ा।'' बीरबल ने चैन की सांस ली।

''वह क्या?'' अकबर ने पूछा।

''हमलोग कहते हैं कि मनुष्य परमात्मा की सृष्टि का सरताज है। पर मैं इससे सहमत नहीं हूँ।'' बीरबल बोला।

''परन्तु क्यों?'' बादशाह ने पूछा।

''शहनशाह! आप पूरी दुनिया में सबसे अधिक शक्तिशाली हैं। फिर भी, एक छोटा सा कीट आप की आज्ञा के बिना न केवल आपके सामने उड़ता है, बल्कि आप को डंक मारने की गुस्ताखी करता है!'' बीरबल ने कहा।

''बीरबल, यह सच है। मेरी शक्ति से ज्यादातर प्राणियों को डर नहीं लगता। ततैये को नहीं, साँप को नहीं, न बाघ को। यह इसलिए कि वे जान-बूझकर किसी को हानि नहीं पहुँचाते। वे तब

चोट करते हैं जब वे खतरे का संकेत पाते हैं। मनुष्य ऐसा नहीं है। मनुष्य सुनियोजित रूप से अपराध करता है। उन्हें दण्ड देना मेरा कर्त्तव्य है।'' अकबर ने बाग और महल के बीच छोटे से प्रवेशद्वार की ओर बढ़ते हुए कहा। बीरबल ने जल्दी से प्रवेशद्वार खोल दिया।

प्रवेशद्वार के बाहर एक वृद्ध व्यक्ति प्रतीक्षा कर रहा था। वह साफ सुथरी धोती और लम्बा ओवरकोट धारण किये हुए था। उसका सिर गेंद की तरह गंजा था। उसकी कनपटियों के बाल सफेद हो रहे थे। उसके कानों में हीरे के कर्णफूल थे। उसने झुक कर सलाम किया।

''तुम कौन हो?''

''मैं बज्रीदास सोनार हूँ।''

''तुम मुझसे क्या चाहते हो?''

''शहनशाह, मैं अपने काम के लिए जरूरत का सोना अपने घर के एक भण्डार गृह में रखता हूँ। इस भण्डार गृह में इस्पात का किवाड़ है, उस पर बहुत बड़ा ताला लगा हुआ है। केवल मैं उस भण्डार गृह में आता-जाता हूँ। जब मैं व्यस्त रहता हूँ, मैं अपने चार विश्वास पात्र सहायकों में से किसी एक को भण्डार से सोना लाने के लिए भेजता हूँ। वे सब के सब विश्वास के योग्य हैं।''

''क्या तुम यह कह रहे हो कि किसी ने भण्डार से सोना चुरा लिया है?'' बादशाह ने प्रश्न पूछा।

''हाँ शहनशाह, मैं निश्चित रूप से कहता हूँ कि यह मेरे किसी सहायक का ही काम है,'' बज्रीदास को जैसे चक्कर आ रहा था।

''कितना सोना चोरी गया?''

''शहनशाह, सभी दस सिल्लियाँ चली गईं।'' वह निराश होकर हाथ मलने लगा।

''घबराओ नहीं। तीन दिनों में तुम्हारे सोने का पता लगाकर तुम्हें वापस कर दिया जायेगा।'' बादशाह ने आश्वासन दिया।

उस आदमी ने जाने से पहले बादशाह को झुककर सलाम किया।

''अब हमारे पास एक अपराध आ गया है,'' बादशाह ने कहा।

''आप कैसे अपराधी का पता लगायेंगे?'' बीरबल ने पूछा।

''मैं इस मुकदमे को मुख्य पुलिस अधिकारी को सौंप दूँगा,'' बादशाह बोले।

दो दिनों तक पुलिस के मुख्य अधिकारी ने रातदिन काम किया। उसने बज्रीदास के चारों

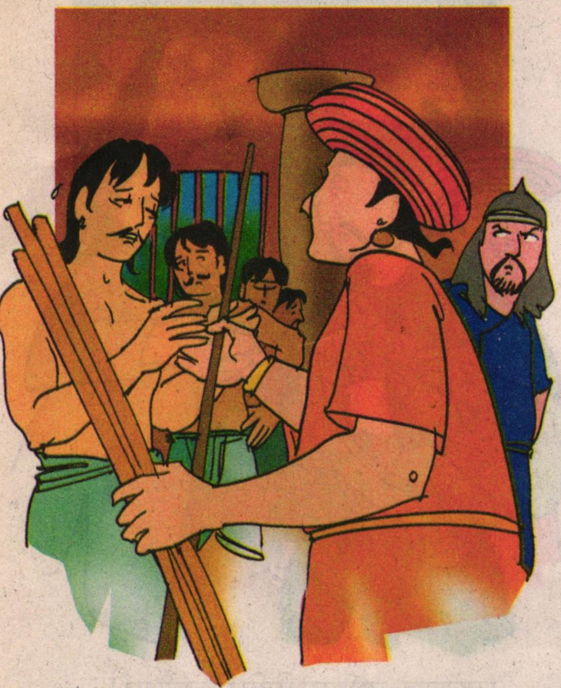

में कुशाग्र बुद्धि वालों की जिन्हें वह जानता था एक सूची बनाई। तब उसे अचानक ख्याल आया, ''बीरबल! यही व्यक्ति है, केवल यही जो मुझे बचा सकता है'', उसने अपने आप से कहा।

उस अधिकारी ने समय नष्ट नहीं किया। वह सीधा बीरबल के घर पहुँचा। बीरबल ने प्रेम से उसका स्वागत कियो और पूछा, ''मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?''

अधिकारी ने अपनी दुखद कथा सुनाई। उसने आगे बताया कि उसने चारों आरोपियों को थाने में अलग-अलग कमरे में बन्द कर रखा है। ''उनमें चोर कौन है, मैं कैसे मालूम कर सकता हूँ?'' उसने बीरबल से मार्ग दर्शन के लिए प्रार्थना की।

बीरबल निश्चल शान्ति में डूब गया। अधिकारी धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता रहा। करीब दस मिनट तक किसी ने एक शब्द नहीं कहा।

''यह काम करेगा,'' बीरबल ने मौन तोड़ा।

''क्या मैं जान सकता हूँ कि आप के पास इस काम को करने के लिए क्या योजना है?'' अधिकारी को आशा की किरण दिखाई पड़ी।

''मुझे चार छड़ियाँ लाकर दो जो प्रत्येक एक गज लम्बी हो। घण्टे भर में इन्हें तैयार रखो। तब तक मैं थाने पर आ जाऊँगा। मैं चारों आदमियों से मिलूँगा और उनसे बातचीत करूँगा।'' बीरबल घर के फाटक तक अधिकारी को छोड़ने गया।

एक घण्टे के पश्चात बीरबल थाने पर गया। अधिकारी अभिवादन कर उन्हें अन्दर ले गया। ''चार छड़ियाँ तैयार हैं।'' वह बोला।

''आदमियों को बुलाओ। मैं उनसे मिलना

सहायकों से तहकिकात की। उसने उन्हें थाने में अलग-अलग कमरे में रखा। उन्हें डराया कि सच नहीं बताओगे तो उलटा लटका कर खूब पिटाई की जायेगी। परन्तु उसके डराने-धमकाने का कोई असर नहीं हुआ। पुलिस अधिकारी को पता नहीं चला कि क्या किया जाये।

दूसरे दिन की शाम तक वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। वह बादशाह के पास जाकर यह नहीं कह सकता था कि चोर का पता लगाने में वह विफल रहा। बादशाह उसपर क्रोधित हो जायेंगे। वह अपनी आफिस के आस पास पिंजड़े में बन्द बाघ की तरह घूमने लगा। ''चोर का पता कैसे किया जाये। कोई उपाय जरूर होगा। परन्तु मेरे जैसे मूर्ख को नहीं मालूम क्या करना चाहिये। कौन मेरी मदद कर सकता है? उसने अपने मन

चाहता हूँ।" बीरबल ने अधिकारी से कहा।

अधिकारी ने अपने एक आदमी को इशारा किया। वह दौड़ कर गया और चारों आरोपियों को हाँकता हुआ ले आया। बीरबल ने देखा कि वे क्लान्त और अशक्त हैं। अधिकारी ने उन्हें दो दिनों तक विश्राम और नींद से वंचित कर दिया था। उन्हें डरा कर पागल करने की कोशिश की। बीरबल को उनमें से तीन निर्दोष व्यक्तियों के लिए दुख हुआ। एक व्यक्ति के दुष्कर्म से अन्य तीन व्यक्तियों को भी कष्ट झेलना पड़ा। सब ने मिल कर चोरी की हो तो और बात है।

वह उन्हें देख कर मुस्कुराया, अपने बगल में बिठाया और उनसे कहा, "तुम्हारे मालिक बज्रीदास ने शिकायत की है कि किसी ने उसके भण्डार से सोने की दस सिल्लियाँ चुरा ली है। वह कहता है कि केवल वह और तुम चारों के अतिरिक्त वहाँ कोई नहीं जा सकता। क्या यह सच है?" बीरबल ने पूछा।

"हाँ महानुभाव!" सब एक साथ बोले।

"वह तुम पर सन्देह करता है।" बीरबल उनके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

"मैं नमक हराम नहीं हूँ", एक ने अपने मालिक के प्रति स्वामी भक्ति का विश्वास दिलाते हुए बीरबल से कहा।

"मैं ईमानदार आदमी हूँ।" दूसरे ने कहा।

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी

भारत पर्वों की भूमि है, उनमें से कुछ भी स्मृति इस महीने की प्रश्नोत्तरी से हो जायेगी।

१. उत्तर भारत में नवरात्रि पर्व के समापन पर तीन ऊँचे पुतलों को जलाया जाता है। वे पुतले किनके होते हैं?

२. वह कौन-सा पर्व है जो एक महीने तक मनाया जाता है? और १२ वर्षों में एक बार आता है। वे चार स्थान कौन से हैं जहाँ ये पर्व मनाये जाते हैं?

३. वे कौन दो पौराणिक पात्र हैं जो होली पर्व से सम्बन्ध रखते हैं?

४. सिक्खों के पर्व बैसाखी का महत्व क्या है?

५. दो पर्वों के अवसर पर हिन्दू देवियों या देवताओं की प्रतिमाएँ पूजा के पश्चात समुद्र अथवा नदी में विसर्जित कर दी जाती हैं। वे देवी या देवता कौन हैं और उन पर्वों के नाम क्या हैं?

(उत्तर पृष्ठ ७४ पर)

''मैं अपने मालिक के साथ बीस वर्षों से काम कर रहा हूँ। मैं विश्वासघात कैसे कर सकता हूँ?'' तीसरे ने कहा।

''मुझसे अधिक स्वामी भक्त कुत्ता भी नहीं हो सकता।'' चौथे ने कहा।

''मैं समझता हूँ कि तुम सब ईमानदार हो। तुम पर झूठा आरोप लगाया गया है।'' बीरबल ने छड़ियाँ उठाईं और उन चारों को एक-एक छड़ी देते हुए कहा, ''ये जादू की छड़ियाँ हैं। अपराध करनेवाले के हाथ में ये रात में तीन इंच बढ़ जाती हैं। आज रात इन छड़ियों को अपने पास रखो। कल आठ बजे यहाँ वापस ले आना। मैं इन्तजार करूँगा।'' बीरबल ने उन्हें भेज दिया।

दूसरे दिन सुबह चारों आदमी छड़ियों के साथ आये। बीरबल थोड़ी देर से आया। उसने उनका अभिवादन किया। उसने पहले आदमी से छड़ी वापस ली और उसकी लम्बाई की जाँच करके एक तरफ रख दी। उसने अन्य तीनों से भी छड़ियाँ लेकर एक-एक कर नापा। उसकी आँखों में चमक आ गई।

उसने उनमें से तीसरे आदमी की ओर संकेत करके कहा, ''तुम चोर हो।'' उसने विरोध किया। परन्तु बहुत देर तक नहीं।

बीरबल ने उसे उसकी छड़ी दिखाई। यह अन्य छड़ियों से तीन इंच छोटी थी। ''मैं जानता हूँ तुमने क्या किया। तुम डर गये कि सुबह तक छड़ी तीन इंच लम्बी हो जायेगी, क्योंकि तुम अपराधी हो। यह पता न लगे, इसलिए तुमने इसे एक किनारे से तीन इंच काट दिया। अब यह छोटा है।''

पुलिस ने उस आदमी के घर से सोने की तीन सिल्लियाँ बरामद कीं और उन्हें बज्रीदास को लौटा दीं। चोर कारागार में डाल दिया गया।

पुलिस अधिकारी दरबार में आया। दरबारियों में बीरबल मौजूद था। अधिकारी ने बादशाह से कहा कि सोने की चोरी का मामला निबट गया, बाद में यह जोड़ दिया, ''बीरबल को धन्यवाद।''

''बीरबल?'' बादशाह बीरबल की ओर मुड़े।

''हाँ बादशाह!'' पुलिस अधिकारी ने तब विस्तार से बताया कि बीरबल ने कैसे अपराध का अनावरण किया।

''बीरबल, तुम्हें जासूस बनना चाहिये था।'' बादशाह ने अपने हाथ में से कंगन निकाला और उसे बीरबल को भेंट कर दिया।

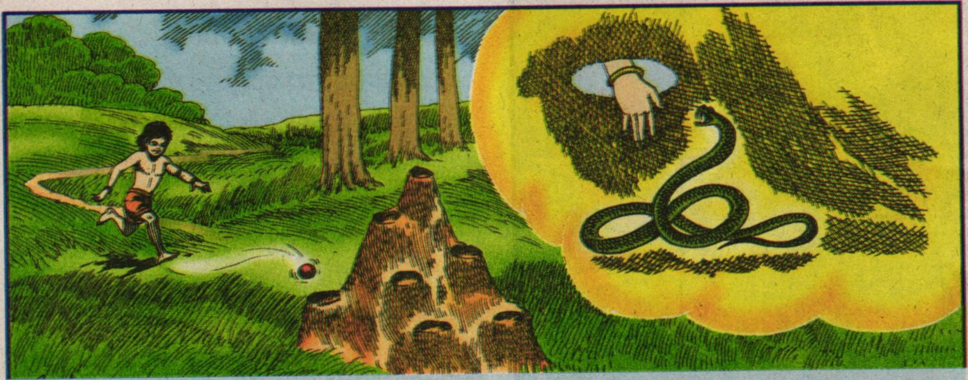

दुनिया की रीत

ब्रह्मदत्त काशी के राजा थे। उनके शासन काल में बोधिसत्व ने कौशाम्बी नगर में कृष्ण द्वैपायन नाम से जन्म धारण किया। जब वे बड़े हुए तो उसके पास जितनी सम्पती थी, उस सम्पत्ति को दान कर दी और उन्होंने संन्यास ले लिया। वे पचास वर्षों तक हिमालय में केवल कन्द-मूल खाकर कठोर तपस्या करते रहे।

अब कृष्ण द्वैपायन ने तीर्थाटन करने का विचार किया। वे घूमते हुए कुछ समय बाद काशी राज्य में आ पहुँचे। वहाँ एक गाँव में उन्हें अपने बालसखा माण्डव्य से भेंट हुई। माण्डव्य ने कृष्ण द्वैपायन का अतिथि सत्कार किया और फिर अपने साथ रहने का अनुरोध किया। माण्डव्य ने उनके लिए एक सुन्दर कुटी बनवाई। माण्डव्य उनकी हर आवश्यकता की पूर्ति का विशेष रूप से ध्यान रखता था।

एक दिन माण्डव्य का पुत्र यज्ञदत्त गेंद खेल रहा था। उसकी गेंद उछल कर एक साँप की बांबी में जा गिरी।

यज्ञदत्त को मालूम नहीं था कि यह साँप की बांबी है। इसलिए उसने गेंद लेने के लिए बेधड़क बांबी में अपना हाथ डाल दिया। उसके हाथ डलाते ही साँप ने तुरंत उसका हाथ डंस लिया। साँप का ज़हर उसके सारे शरीर में फैल गया और यज्ञदत्त बेहोश हो गया।

तभी माण्डव्य और उसकी पत्नी ने बेहोश पड़े अपने पुत्र को देखा। अपने पुत्र की ऐसी दशा देखकर माता-पिता दोनों ही विचलित हो गये। कुछ देर तक वे दोनों कुछ न कर सके। फिर माण्डव्य ने अपने पुत्र को ले जाकर कृष्ण द्वैपायन के चरणों में डाल दिया और उनसे विनती की, ''महानुभाव! आप अपने तपोबल का प्रयोग करके हमारे इस एकमात्र पुत्र को जीवित कर हमें पुत्र-भिक्षा दीजिए!''

जातक कथा

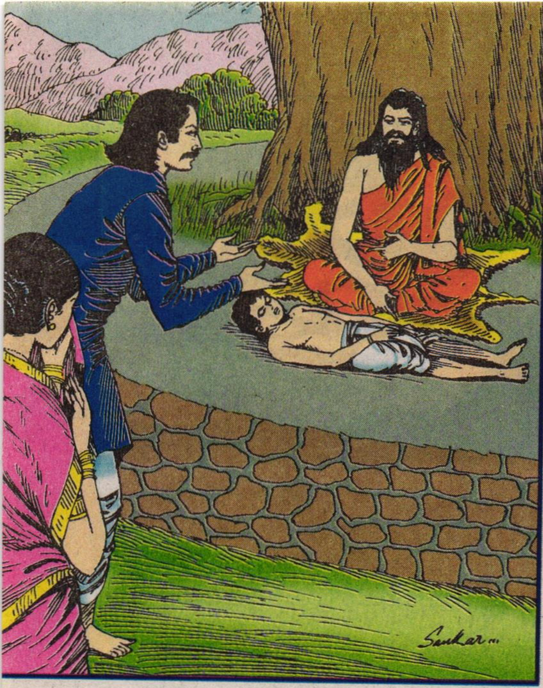

आधापरं यं चरितं ममयिदं
वस्यांनि पंञ्जास समाधिकानि
अकामको वाहि अहं चरामि,
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु,
हतं, विसं, जीवतु यञ्ञदत्तो।''

अर्थात्, ''मैंने पुण्य की कामना करके निर्मल चित्त के साथ ब्रह्मचर्य का पालन किया है। इसके बाद मैंने पचास वर्षों तक जो तपस्या की, वह पवित्र हृदय से प्रेरित होकर नहीं की गई। मुझसे की गई इस सत्य की शपथ के परिणाम स्वरूप यज्ञदत्त पूर्णरूप से जीवित हो जाये।''

इस श्लोक के समाप्त होते ही यज्ञदत्त के वक्ष से थोड़ा सा विष निकला और पृथ्वी के भीतर समा गया। यज्ञदत्त ने आँखें खोलकर एक बार अपने माता-पिता की तरफ देखा और वह 'माँ' कह कर फिर बेहोश हो गया।

कृष्ण द्वैपायन की समझ में न आया कि क्या किया जाये। वे नम्र होकर बोले, ''आप भ्रम में पड़े हुए हैं। सच ही मेरे भीतर कोई शक्ति नहीं है। मैंने कई बरसों तक तपस्या ज़रूर की, पर वह सफल न हुई। मुझे तो औषधियों का ज्ञान तक नहीं है। ऐसी हालत में मैं आपके पुत्र को कैसे जीवित कर सकता हूँ?''

इस पर माण्डव्य ने कहा, ''भले ही आपकी तपस्या सफल न हुई हो, लेकिन आपने जो इतने दीर्घकाल तक तपस्या की है, उसका कुछ न कुछ फल तो अवश्य होगा। आप सत्य की शपथ लीजिए, मेरा पुत्र अवश्य जीवित हो जायेगा।''

कृष्ण द्वैपायन माण्डव्य ने उसकी बात मानकर उन्होंने यह श्लोक पढ़कर सत्य की शपथ ली:

''सत्ताहं एवाहं प्रसन्नचित्तो
पुंअत्थिको आचरिं ब्रह्मचरियं

यह देखकर कृष्ण द्वैपायन ने माण्डव्य से कहा, ''मित्र! तुमने देख लिया न! पूरी तरह विष निकालना मुझसे संभव नहीं हुआ। अब तुम सत्य की शपथ लेकर प्रयत्न करो।''

माण्डव्य ने कृष्ण द्वैपायन की बात मानकर इस प्रकार सत्य की शपथ ली:

''यस्मा दानं न अभिनंदिं कदाचि
दिरवानाहं अतिथिं वा सकाले
न चापि मे अप्पियं अलेदुं
बहुस्सुता समणा ब्राह्मणाच
अकामको वा हि अहं ददामि,
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु,

हतं विसं, जीवतु यज्ञदत्तो।''

अर्थात्, ''मैंने अतिथियों का सत्कार अवश्य किया है, पर विशुद्ध कामना से प्रेरित होकर नहीं। ज्ञानी, श्रमण और ब्राह्मण इस बात को समझ नहीं पाये कि मैंने अनिच्छा से उनका अतिथि-सत्कार किया है और दान भी अनिच्छा से ही किये हैं। मुझसे की गई इस सत्य की शपथ के फलस्वरूप यज्ञदत्त जीवित हो जाये।''

माण्डव्य द्वारा सत्य की शपथ लेते ही यज्ञदत्त की पीठ में से थोड़ा विष निकला और जमीन पर गिर कर सूख गया। लड़का उठकर बैठ गया, लेकिन खड़ा न हो सका। तब माण्डव्य ने अपनी पत्नी की तरफ़ मुड़ कर कहा, ''तुम भी सत्य की शपथ लो। हमारा पुत्र खड़ा होकर पहले की तरह चल-फिर सकेगा।''

''मुझे एक सत्य की घोषणा करनी है, पर मैं उसे आपके सामने प्रकट नहीं कर सकती।'' पत्नी ने चिंतित स्वर में कहा।

''पगली! तुम क्यों डरती हो? हमें पुत्र से बढ़कर और क्या प्रिय हो सकता है? इसलिए सत्य की शपथ लो!'' यों कहकर माण्डव्य ने अपनी पत्नी को प्रेरित किया।

तब माण्डव्य की पत्नी ने यह शपथ ली:

''असो विसो तात पहूत तेजो
ये तं अदट्टि पदरा इदच्चि,
तस्मिंच में अप्पियताय अज्ञ
पितरि च ते नत्थि कोचि विसेसो,
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु

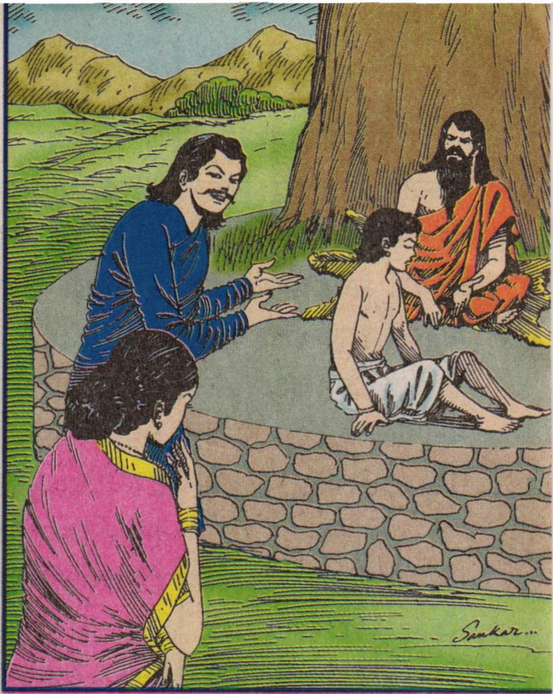

हतं विसं, जीवतु यज्ञदत्तो।''

अर्थात्, ''बेटा, आज जिस साँप ने तुम्हें बांबी में डंस लिया, उसे देखने पर मेरे दिल में जैसी घृणा होगी, तुम्हारे पिता को देखने पर भी मेरे मन में वैसी ही घृणा होती है। मेरी दृष्टि में इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है। इस सत्य की शपथ के फलस्वरूप यज्ञदत्त के शरीर से पूरा विष निकल जाये और वह पूर्ण स्वस्थ होकर जीवित रहे।''

पत्नी द्वारा सत्य की शपथ लेते ही यज्ञदत्त के शरीर से पूरा विष निकल गया जिसे ज़मीन ने सोख लिया। इसके बाद बालक उठा और पहले की तरह खेलकूद में मस्त हो गया।

इस के बाद माण्डव्य ने कृष्ण द्वैपायन से पूछा, ''महात्मन्! आपने तपस्वी का सर्वोत्तम जीवन स्वीकार किया, फिर भी अनिच्छा से ही उसे क्यों चला रहे हैं?''

''इसके पीछे एक ही कारण है। एक बार जो संन्यास लेकर घर से निकल पड़ता है, अगर वह फिर गृहस्थ-जीवन में लौटता है तो सब लोग उसकी अवहेलना करते हैं और मूर्ख-पतित बताकर उसकी निंदा करते हैं।

''इसलिए बाद में संन्यास-जीवन के प्रति मेरा आग्रह न रहने पर भी सबकी दृष्टि में आदर-पात्र बना रहने के लिए मैं जबर्दस्ती तपस्वी का जीवन जी रहा हूँ। अब तुम बताओ, तुम अतिथियों का इतना स्वागत-सत्कार करते हो, पर अनिच्छा से क्यों करते हो?''

''मेरे पिता और पितामह की दानी के रूप में बहुत ख्याति रही है, इसलिए मुझे भी उनके पथ का अनुसरण करना पड़ता है। उनके यश में कलंक न लगे, इसी डर से मैं भी दान करता हूँ, लेकिन यह मेरे अपने हृदय की प्रेरणा नहीं है।'' माण्डव्य ने उत्तर दिया।

इसके बाद माण्डव्य ने अपनी पत्नी की तरफ मुड़कर पूछा, ''तुम जब बालिका ही थीं, तभी मेरी पत्नी बनकर मेरे घर आ गई थीं। इतने बरसों तक तुमने मेरे साथ गृहस्थी निभाई। मेरे लिए तुम्हारे हृदय में थोड़ा भी अपनत्व नहीं होने के कारण तुम्हें इस जीवन से अवश्य घृणा हुई होगी। फिर भी तुमने इसे क्यों सहन किया?''

''हमारे वंश में नारी का अपने पति के साथ गृहस्थी चलाना कर्तव्य है, यह मर्यादा है। इसलिए मैंने इस जीवन को सहन कर लिया। यदि मैं आपको छोड़कर किसी और के साथ विवाह कर लेती तो सारा समाज मुझे कुलटा समझ लेता। लेकिन अब अपने पुत्र के हित की कामना से मैंने यह रहस्य प्रकट किया।'' पत्नी ने कहा।

''तुमने सत्य बताया, इसलिए मैं तुम्हारी निंदा नहीं करूँगा। मैं शपथ लेकर कहता हूँ कि आगे मैं तुम्हारे साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करूँगा।'' माण्डव्य ने अपनी पत्नी से कहा।

''तुम दान करना चाहते हो तो पूरे हृदय से करो, दिखावे के लिए या अनिच्छा से मत करो। मैं भी आज से तपस्वी का जीवन संपूर्ण हृदय से बिताऊँ गा।'' ऐसा कहकर कृष्ण द्वैपायन ने माण्डव्य से विदा ली और तप करने चले गये।

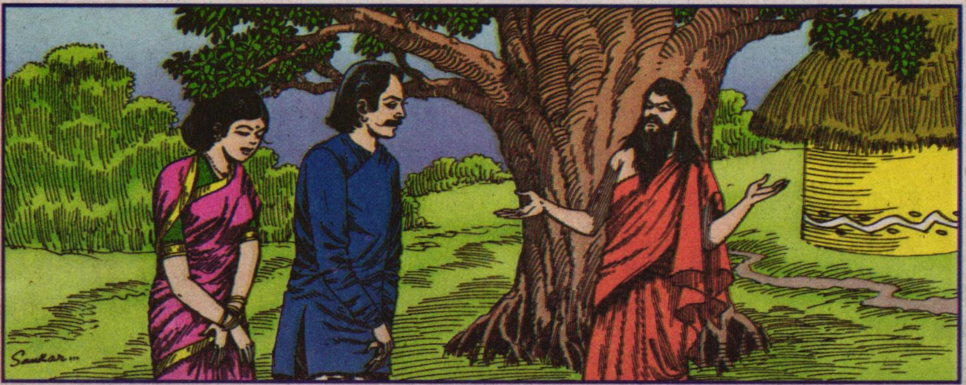

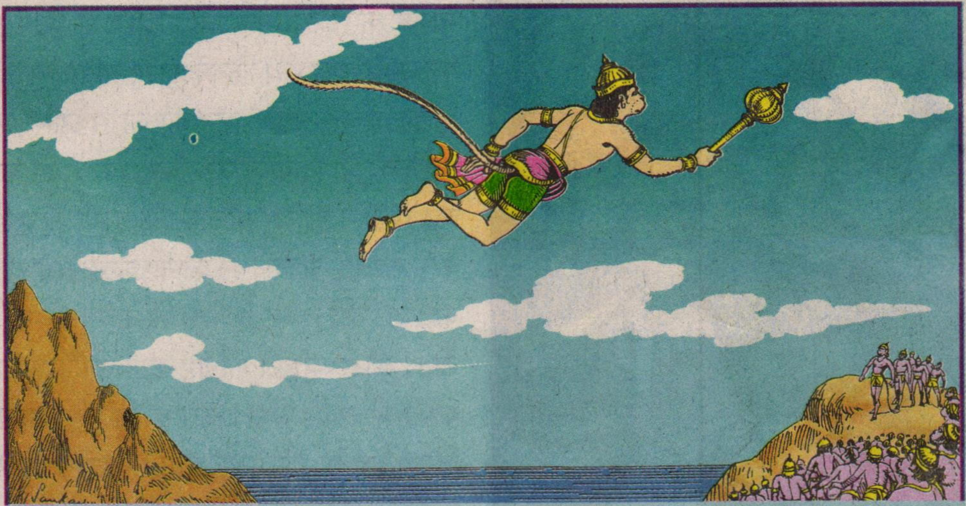

रामायण

वह कौव्वा इन्द्र का लड़का था। पक्षियों में श्रेष्ठ था। पर्वतों में रहता था। वायु वेग से जा सकता था। ब्रह्मास्त्र जो पीछे पड़ा, तो वह कौव्वा तीनों लोकों में भागता फिरा। न इन्द्र और न देवता, महर्षि, आदि उसकी रक्षा कर पाये। फिर उसने आकर, राम के यहाँ शरण माँगी। राम चूँकि शरणागत वत्सल हैं, इसलिए उन्होंने उसे माफ़ कर दिया। परन्तु ब्रह्मास्त्र व्यर्थ नहीं जाता। इसलिए उसकी बायीं आँख जाती रही।

सीता ने हनुमान को यह बात सुनाकर कहा, ''इतना समर्थ और पराक्रमी होकर भी, यदि मेरा पति मेरी रक्षा नहीं कर पाया है, तो इसका कारण मेरा महापाप ही है।'' हनुमान ने उसको आश्वासन दिया और पूछा कि राम, लक्ष्मण, सुग्रीव आदि वानर समूह को वह क्या सन्देश देना चाहती हैं।

''कहना कि मैंने राम का कुशल क्षेम पूछा है। उनको मेरा साष्टांग प्रणाम कहना। और कहना कि उस लक्ष्मण का क्षेम भी पूछा है, जिसने मुझे माता की तरह माना। यदि वह उस समय पास होता, तो रावण मेरा अपहरण नहीं कर पाता। राम को यहाँ लाने के लिए तुम से अधिक कोई समर्थ नहीं है।'' कहते हुए सीता ने आंचल में बंधे चूड़ामणि को निकालकर, हनुमान को देते हुए कहा, ''इसे मेरी माँ ने विवाह के समय दिया था। तब महाराजा दशरथ भी वहाँ थे। इसको देखते ही राम को, अपने पिता, मेरी माँ याद हो आयेंगे।''

हनुमान ने तब मामूली रूप धारण कर रखा

सुन्दर काण्ड - ५

मालूम कर लिया गया कि राक्षसों में कितना पराक्रम है, युद्ध में वे कितने पटु हैं, तो सुग्रीव की आज्ञा अच्छी तरह पालन की जा सकेगी और रावण को भी दिखाया जा सकेगा कि वानरों का क्या पराक्रम है। यह सोचकर कि रावण को क्रुद्ध करने के लिए, अशोक वन को नष्ट करने से अच्छा कोई मार्ग नहीं है, वह अशोक वन के पेड़ उखाड़ने लगा। क्रीड़ा सरोवरों को नष्ट करने लगा। क्रीड़ा पर्वतों को उखाड़ फेंका। सारा अशोक वन बिगाड़ दिया। पेड़ पर बैठे पक्षी, डर से चिल्लाये। बेलें वगैरह उखाड़ फेकीं। घर गिर गये। चाहे कितने भी राक्षस आयें, उनसे युद्ध करने के लिए हनुमान बाहर के द्वार पर गया।

था। उस चूड़ामणि को वह हाथ में न लगा सका, इसलिए उसने उसे अंगुली में लगा लिया।

हनुमान, जो कुछ सीता को कहना था, कहकर इधर आया। जिस लक्ष्य को लेकर वह लंका आया था, वह पूरा हो गया। इसलिए वह सन्तुष्ट था। वह यह भी जान गया कि रावण का मनसूबा क्या है। रावण का दुष्ट आचरण और सीता की विवशता उसने अपनी आँखों से देखी थी, इसलिए उसे पक्का विश्वास हो गया कि रावण को और उसके राक्षसों को मारे बिना सीता को छुड़ाना असम्भव होगा। अतः उसकी शक्ति का अनुमान बहुत जरूरी है। यह सोचकर उसने रावण की भी कुछ खबर लेनी चाही। इतनी कठिनाई के बाद लंका आकर, केवल सीता को देखकर वापस चले जाना, उसे न भाया। उसने सोचा, कि यदि यह

हनुमान की ध्वंस क्रिया को देखने, सब राक्षस स्त्रियाँ भागी भागी आयीं। उनको अपनी ओर देखता देख, हनुमान ने, जिसने अपना शरीर पहले ही फुला रखा था और फुलाया। उन्होंने सीता से पूछा, "यह कौन है? कहाँ से आया है? किसने भेजा? इसने तुमसे क्या कहा था?"

"वह कौन है, यह मैं कैसे जान सकती हूँ। राक्षसों की बातें राक्षस ही जान सकते हैं। उसे देखकर मुझे डर लग रहा है। कौन है वह, तुम ही बताओ।" सीता ने कहा।

सीता के यह कहते ही, राक्षस स्त्रियाँ डर गईं। उनमें से कुछ सीता की रक्षा के लिए ठहर गईं, बाकी रावण से कहने भागे। उन्होंने रावण से कहा, "भयंकर देहवाला, अत्यन्त बलवाला, कोई वानर सीता से बात कर गया है। वह इस समय अशोक

वन में है। जब हमने पूछा कि वह कौन है, तो सीता हमें नहीं बता रही है। न मालूम उसको किसने भेजा है, पर उसने सारा अन्त:पुर का बाग खराब कर दिया है। कहीं कुछ नहीं छोड़ा। केवल वही पेड़ नहीं उखाड़ा है, जिसके नीचे सीता बैठती थी। सीता एक शिंशुपा वृक्ष के नीचे चली गई है। उसे भी उसने नहीं छोड़ा है। चूँकि उसने अशोक वन को बिगाड़ा है और चूँकि उसने सीता से बातचीत की है, इन्हीं दो अपराधों पर उसको प्राणदण्ड दिया जाना चाहिये।'' रावण ये बातें सुनकर क्रोधित हो गया पर साथ ही यह जान कर उसे भय और आश्चर्य भी हुआ कि ऐसा बलवान वानर लंका में क्यों और कैसे आया और उसका अशोक वन क्यों उजाड़ रहा है? उसका सीता के साथ क्या सम्बन्ध हो सकता है? फिर भी उसे असाधारण वानर समझ कर उसने अपनी तरह पराक्रमी, अस्सी हजार राक्षसों को, किंकरों को, आज्ञा दी कि वे तरह तरह के हथियार लेकर, अशोक वन के द्वार के पास खड़े वानर के पास जायें और उसे मार दें या लंका से बाहर भगा दें। राक्षसों ने जब हनुमान को घेर लिया, तो हनुमान अपनी पूँछ को, जोर से जमीन पर पटक कर चिल्लाया।

''राम लक्ष्मण की जय, वानर राजा सुग्रीव की जय। मैं राम का दास हूँ। मेरा नाम हनुमान है। शत्रु हन्ता हूँ। हज़ार रावण ही युद्ध में मेरी बराबरी कर सकते हैं। राक्षसों को, इस लंका नगरी को विनष्ट करके, सीता को नमस्कार करके, राम

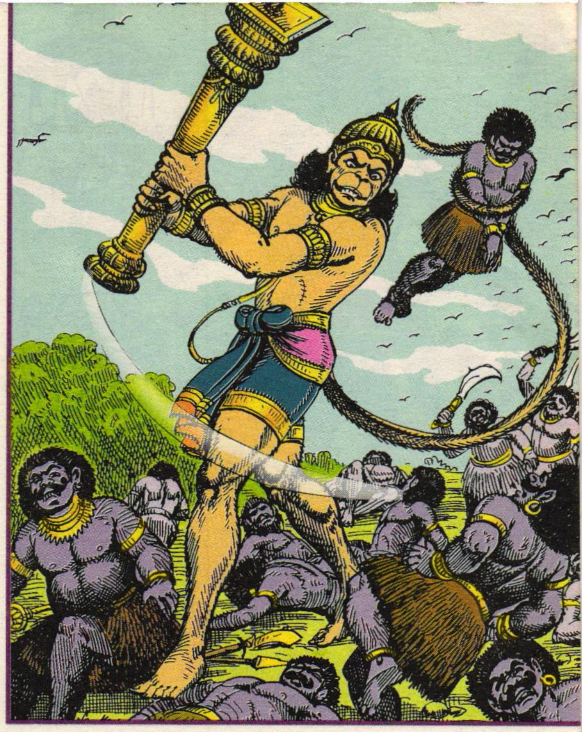

के पास वापिस चला जाऊँगा।'' हनुमान जोर से चिल्लाया।

लाल पर्वत की तरह दीखने वाले हनुमान को देख, उसके गर्जन को सुन, राक्षस डरे तो, पर चूँकि राजा की आज्ञा का धिक्कार नहीं हो सकता था, राक्षसों ने उस पर अस्त्रों का प्रयोग किया। हनुमान ने द्वार के पास से लोहे के खम्भे को हाथ में पकड़ा और उससे राक्षसों को और किंकरों को खूब मारा। राक्षसों की अधिकांश सेना को हनुमान ने मार दिया। कुछ राक्षस भाग गये। तब भी हनुमान की युद्ध की इच्छा पूरी न हुई। हनुमान द्वार के पास ही खड़ा रहा।

इस बीच, कुछ राक्षस भागे भागे रावण के पास गये। उन्होंने बताया कि हनुमान के हाथ सब किंकर मारे गये। रावण को गुस्सा आ गया।

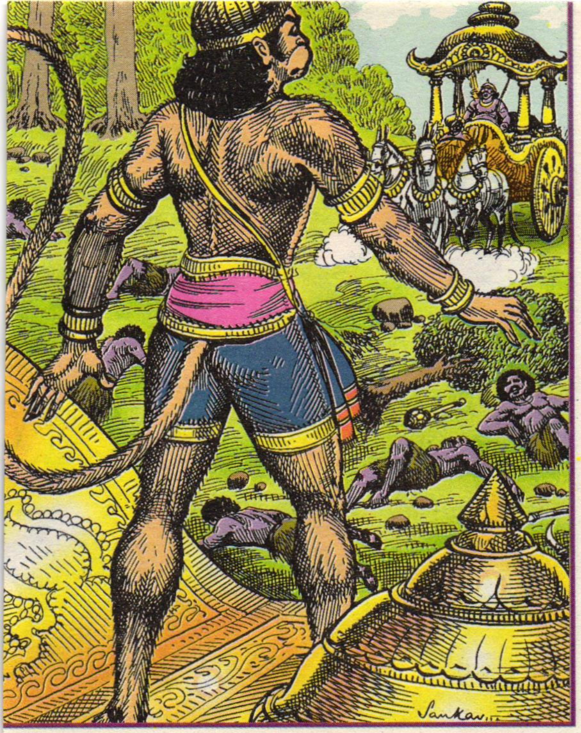

उसने आँखें बड़ी करके, हनुमान से युद्ध करने के लिए प्रहस्त के लड़के अजेय, जम्बुमाली को आज्ञा दी।

किंकरों को मारकर, जब हनुमान खड़ा था, तो उसको अशोक वन का चैत्य भवन स्मरण हो आया। उसको उसने नष्ट नहीं किया था। उसे नष्ट करने के लिए वह चैत्य प्रासाद पर कूदा। उस प्रासाद की रक्षा करनेवाले सौ राक्षस हथियार लेकर, हनुमान पर टूट पड़े। उनके हथियार जब हनुमान को लगे, तो उसे और गुस्सा आया और उसने अपना शरीर और बड़ा किया। उसने प्रासाद का एक खम्भा उखाड़ा और उसे जब तेजी से घुमाया, तो उसकी गर्मी से आग पैदा हुई और उस आग के कारण, सारा प्रासाद जल गया। हनुमान ने उस स्तम्भ से ही सौ राक्षसों को मारा।

फिर उसने जोर से गरजते हुए कहा, "मुझ जैसे हज़ारों वानर, सीता को खोजने के लिए सुग्रीव द्वारा भेजे गये हैं। लाखों, करोड़ों, वानरों के साथ सुग्रीव यहाँ आयेगा। तुमने राम से दुश्मनी की है। अब तुम्हारी लंका नहीं रहेगी। नष्ट हो जायेगी। न तुम ही रहोगे। न रावण ही रहेगा।"

लाल फूल पहनकर, सिर पर फूल रखकर, धनुष और सुन्दर बाण लेकर, जम्बुमाली, गधों के रथ में जब आया, तो हनुमान द्वार पर बैठा था। जम्बुमाली ने कई बाण छोड़कर हनुमान के मुँह और शरीर को घायल कर दिया।

जब हनुमान ने बड़े बड़े पत्थर फेंके, तो उसने उन्हें बाण से हटा दिया। जब सागून का वृक्ष फेंका, तो उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। आखिर हनुमान ने उस लोहे के खम्भे को, जिसका उसने पहले उपयोग किया था, मारा, तब जम्बुमाली, उसके गधे, रथ, सब टुकड़े-टुकड़े हो गये।

जब रावण ने सुना कि किंकरों के अलावा, जम्बुमाली भी मारा गया, तो रावण को बड़ा गुस्सा आया। सात अस्त्र वेत्ता मन्त्री पुत्रों को, हनुमान का मुकाबला करने भेजा। वे अपनी अपनी सेनाओं को लेकर इस होड़ में निकले कि कौन जाकर पहिले शत्रु से लोहा लेता है। उन्होंने जो बाण उस पर छोडे, उनसे बचता, हनुमान हवा में इधर उधर फिरता रहा और जिन राक्षसों ने उस पर हमला किया, उनको हाथों से, पैरों से मार दिया। वे मरते मरते इतना चिल्लाये कि सारी लंका ही गूँजने लगी। मन्त्री पुत्र भी जब मारे गये, तो रावण को

और डर लगने लगा। परन्तु उसने उसे बाहर न दिखाया। वह मन ही मन सोचने लगा कि कहीं यह अकेला वानर, जो हथियार के बिना ही हमारे हजारों राक्षसों को मार चुका है, हमारी पूरी लंका को ही तबाह न कर दे। फिर भी उसे आशा थी कि उसके सेनापति उस वानर को पकड़ने में सफ़ल हो सकेंगे। इसलिए उसने विरूपाक्ष, कापाक्ष, दुर्धर, प्रघस, भास्कर आदि मुख्य सेनापतियों को बुलाकर उसने कहा, "तुम चतुरंग सेना के साथ जाकर उस वानर को दण्ड दो। वह मुझे साधारण वानर-सा नहीं मालूम होता है। शायद इन्द्र ने तपस्या करके इस भूत को हमारे पास भेजा है। मैंने बड़े बड़े महाबलवान वानर, बालि, सुग्रीव, नील आदि को देखा है। पर यह वानर तो उनसे भी बड़ा पराक्रमी मालूम होता है। यह वानर रूप में कोई भूत है। जैसे भी हो, तुम्हें इस वानर को पकड़ना होगा। युद्ध करते समय बिलकुल बेपरवाह न रहना।"

वे पाँचों अशोक वन के द्वार के पास गये। हनुमान को देखकर, उसे चारों तरफ़ से घेरकर, उससे विवाद करने लगे। दुर्धर ने हनुमान के सिर पर पाँच बाण छोड़े। हनुमान जोर से चिल्लाता आकाश में उड़ा। ऊपर से वह ज़ोर से, सीधे जब दुर्धर के ऊपर कूदा, तो उसका रथ, उसमें जुते हुए आठ घोड़े और दुर्धर सब नष्ट हो गये।

दुर्धर जब मर गया, तो विरुपाक्ष, कापाक्ष गुस्से में, आकाश में कूदे और गदाओं से हनुमान की छाती पर मारने लगे। हनुमान ने एक पेड़ उखाड़ा और उससे उन्हें खूब पीटा। तीनों के मर जाने के बाद, बाकी दोनों छुरी और भाले लेकर हनुमान

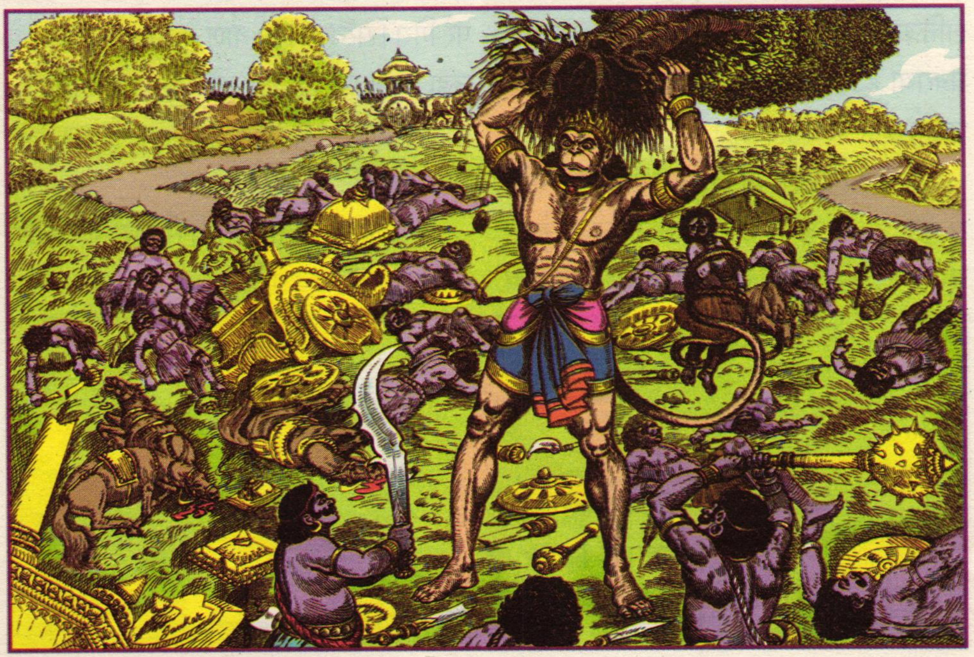

पर लपके और उसे घायल कर दिया। हनुमान ने एक पर्वत को मय पेड़ और जन्तुओं को उखाड़ा, उसे लेकर प्रघस और भास्कर पर फेंका। एक ही चोट में उन दोनों को भी मार दिया।

इस तरह कुछ ही क्षणों में पाँचों योद्धाओं को मारकर हनुमान ने उनकी सेना का ही उन्मूलन कर दिया। वहाँ के मार्गों पर राक्षसों की लाशों के ढेर लग गये।

यह पता लगते ही उसे मालूम हो गया कि यह वानर राम का भेजा हुआ हनुमान है। रावण भयभीत हो गया। उसका एक वानर जब लंका को उजाड़ सकता है, उसके बड़े-बड़े महारथी सेनापतियों को गाजर मूली की तरह काट सकता है, मेरे समान ही वीर राक्षसों को पल भर में चींटियों की तरह मसल सकता है तो उसकी सेना कितनी शक्तिशाली होगी। उसने सोचा। वह अत्यन्त घबराया हुआ था। तभी रावण की नज़र अपने लड़के अक्ष पर पड़ी।

पिता का देखना था कि अक्ष झट उठा, सोने से पुता अपना धनुष उठाया, सोने का अलंकृत रथ लेकर, वह हनुमान से लड़ने निकला। उस रथ में हथियार थे, वह युद्ध के लिए सन्नद्ध रथ था। उसके साथ सेना भी निकली।

हनुमान अभी अशोक वन के पास ही खड़ा था। उसे देखते ही, अक्ष जान गया कि वह पराक्रमशाली है। उसने उसको गौरव की दृष्टि से देखा। दोनों में प्रचण्ड युद्ध हुआ। अक्ष लड़का था, पर उसके पराक्रम को देखकर हनुमान भी खुश हुआ। वह अक्ष के बाणों से बचता, आकाश में घूमता सोचने लगा, 'इस लड़के को कैसे मारा जाये? यह अभी ही इतना पराक्रम दिखा रहा है, न मालूम आगे क्या पराक्रम दिखाये? अभी इसे मार देना अच्छा है।'

अक्ष का रथ, आकाश में भी जा सकता था। जब वह आकाश में था, तो हनुमान ने घोड़ों को हाथ से मार दिया और पहिये तोड़ दिये। रथ जमीन पर गिरा। परन्तु अक्ष, बाण के साथ आकाश में उड़ा। जब वह यों उठा, तो हनुमान ने उसके पैर पकड़ लिए, उसे घुमाकर, ज़मीन पर फेंककर उसे मार दिया।

हनुमान की विनाश लीला से लंका के राक्षसों में त्राहि-त्राहि मच गई।

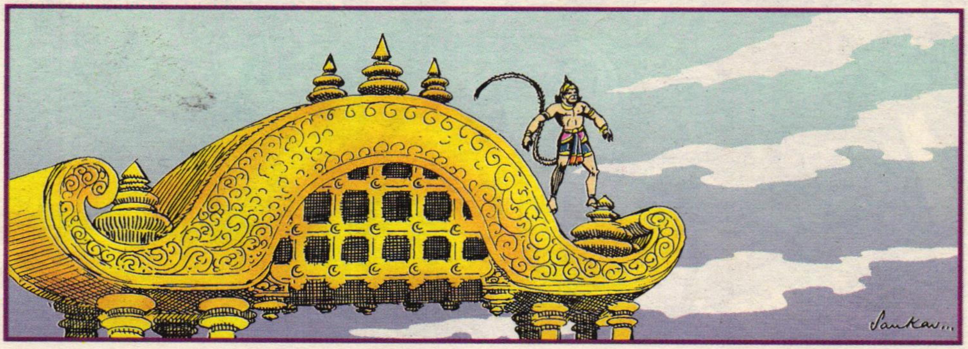

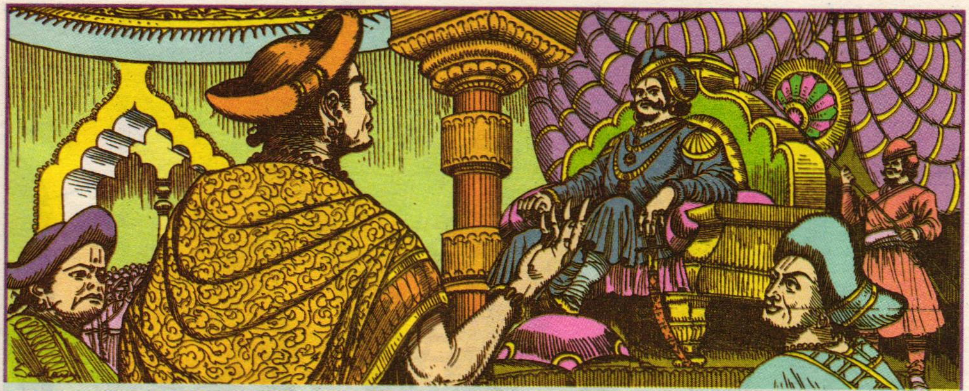

कठिन कार्य

चिरंजीवी नामक महान ज्ञानी देशाटन करते राजा चन्द्रसेन के दरबार में पहुँचे। उस वक़्त राजदरबार में यह चर्चा चल रही थी कि "इस दुनिया में सब से बड़ा कठिन कार्य क्या है?"

एक एक करके दरबारी उठकर जवाब दे रहे थे। कुछ लोग कह रहे थे कि स्वर्ग में जाना कठिन है, कुछ अमृत लाना कठिन बता रहे थे, कुछ और लोग ईश्वर के दर्शन सब से कठिन बता रहे थे।

राजा ये सब उत्तर सुनकर खीझ उठे और बोले, "स्वर्ग, अमृत और ईश्वर, इनके बारे में हम लोग कुछ नहीं जानते। न हमने उन्हें देखा है, कुछ लोग कहते हैं, कि ये सब मौजूद हैं, कुछ लोग उन्हें कल्पना मात्र बताते हैं। अगर कोई यह बता दे कि उन लोगों ने स्वयं उन्हें देखा है, तो हम यह साबित नहीं कर पायेंगे कि उनकी बातें झूठ हैं या सच! इसलिए आप लोग ऐसे कठिन काम बताइये जिन्हें हम लोग जानते हुए भी कर नहीं पायेंगे।"

इस पर लोगों ने कहा कि सच बताना कठिन है, किसी ने एक पत्नीव्रत होने को कठिन कहा तो किसी ने दाता बनना कठिन बताया।

राजा ये जवाब सुनकर भी संतुष्ट न हुए, तब चिरंजीवी ने उठकर अपना परिचय दिया और कहा, "महाराज! मुझे लगता है कि सब से कठिन कार्य तो इच्छाओं का दमन करना है।" राजा ने अस्वीकार सूचक सर हिलाकर पूछा, "सो कैसे?"

"हरिश्चन्द्र सत्यवादी थे, रामचन्द्रजी ने एकपत्नीव्रत का पालन किया। शिबि, दधीचि और कर्ण महान दाता हैं, मगर ये गुण उनकी इच्छाओं के अनुरूप थे, इसलिए उन पर वे विजय पा सके। इस संसार का मूल कारण इच्छा है! चाहे महात्मा हों या पापी, सब लोग इच्छाओं के गुलाम हैं।" चिरंजीवी ने समझाया।

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

राजा ने चिरंजीवी के तर्क पर प्रसन्न हो, पुरस्कार देकर उनका सत्कार किया।

उस दरबार में दुर्जय नामक एक व्यक्ति था। उसने यों कहा, ''प्रभु! इच्छाओं पर विजय पाना कोई कठिन कार्य नहीं है। इच्छाओं पर दमन करनेवाला एक व्यक्ति समीप के जंगल में है। यदि आप की आज्ञा हो तो मैं उसे लाकर यह बात साबित कर सकता हूँ।''

''साबित कर सकोगे तो बढ़िया पुरस्कार मिलेगा, वरना कारागार की सजा भोगनी होगी! यह तुम्हें स्वीकार्य हे?'' राजा चन्द्रसेन ने कहा।

इसके बाद दुर्जय ने अपने किसी परिचित व्यक्ति को ऋषि का वेष धरवाकर उसे समझाया कि राजदरबार में उसे कैसा व्यवहार करना है। तब उसे लेकर दरबार में पहुँचा। राजा को उस झूठे ऋषि को दिखाकर दुर्जय नें कहा, ''महाराज! यही वह व्यक्ति है!''

इस पर राजा ने चिरंजीवी को आदेश दिया कि वह इस बात की परीक्षा ले कि वह व्यक्ति इच्छाएँ रखता है या नहीं। चिरंजीवी ने उस व्यक्ति को कई प्रकार के प्रलोभन दिखाये। पर वह झूठा ऋषि विचलित नहीं हुआ। ऐसा लगा कि वह व्यक्ति कोई इच्छा नहीं रखता है!

आखिर ऊब कर राजा ने उसने पूछा, ''मैं तुम्हें इस राज्य का राजा बनाऊँगा, क्या तुम स्वीकार करोगे?''

झूठे ऋषि ने झट से जवाब दिया, ''महाराज! मैं सब कुछ त्याग चुका हूँ, मेरे लिए राज्य की ज़रूरत ही क्या है?''

चिरंजीवी बोले, ''महानुभाव! आप जैसे लोग ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलते! फिर भी कल आप दरबार

नया कॉमिक्स ''राजकुमार आर्य - खोये द्वीप की तलाश में'' पूर्व घोषणा के अनुसार अक्तूबर २००८ से प्रकाशित होने के बदले हमारे जनवरी २००९ अंक से प्रकाशित होगा। हमारे पाठकों से अनुरोध है कि वे इस परिवर्तन को ध्यान में रखें। *- प्रकाशक*

में पधारेंगे तो साबित कर सकता हूँ कि आप इच्छाओं से मुक्त नहीं हैं। यदि आप न आये तो समझा जाएगा कि आप इच्छाएँ रखते हैं।''

सब ने यही सोचा कि चिरंजीवी का विचार होगा कि जो व्यक्ति प्रकट रूप से सब के सामने इच्छाओं से मुक्त दिखाई देते हैं, वह गुप्त रूप से अपनी इच्छाएँ प्रकट करेंगे। झूठा ऋषि भी यही विचार कर सावधान रहने लगा। उससे जो भी मिलने जाता, उस पर शंका करते हुए कि यह व्यक्ति चिरंजीवी द्वारा भेजा गया होगा, उससे सतर्क रहता। दूसरे दिन दुर्जय झूठे ऋषि के साथ दरबार में पहुँचा। चिरंजीवी ने ऋषि को देखते ही पूछा, ''मैंने कहा था कि यह साबित करूँगा कि आप इच्छाएँ रखते हैं, नहीं तो आप क्यों आते?''

झूठे ऋषि बोले, ''यही देखने के लिए कि आप कैसे साबित कर सकते हैं?''

''यही आप की इच्छा है।'' चिरंजीवी ने कहा।

इस पर सारा दरबार हर्षनाद से गूँज उठा। तब चिरंजीवी झूठे ऋषि से बोले, ''स्वामी! आप यह साबित करने के लिए जंगल से राजदरबार में आये हैं कि आप इच्छाएँ नहीं रखते। एक और दिन रुक जाने का अनुरोध करने पर आप रुक गये। आप इच्छाएँ नहीं रखते, तो यह साबित करने की कामना नहीं होती कि आप की कोई इच्छा नहीं है!''

इस पर राजा चन्द्रसेन कहा, ''तुम हार गये! इसलिए तुम्हें कारागार की सजा भोगनी होगी!''

चिरंजीवी ने कहा, ''महाराज! इसमें दुर्जय का कोई अपराध नहीं है। अभी अभी तो यह साबित हुआ कि इच्छाओं पर विजय पाना असंभव है। मैंने जो बात कही, उसे झूठा साबित करने की इच्छा से ही उन्होंने ऐसा किया है। इसलिए आप इन्हें मुक्त कर दीजिए।''

इस पर राजा चन्द्रसेन ने दुर्जय को क्षमा कर दिया और चिरंजीवी का सत्कार किया।

भारत के विरासत स्थल

फतेहपुर सिकरी

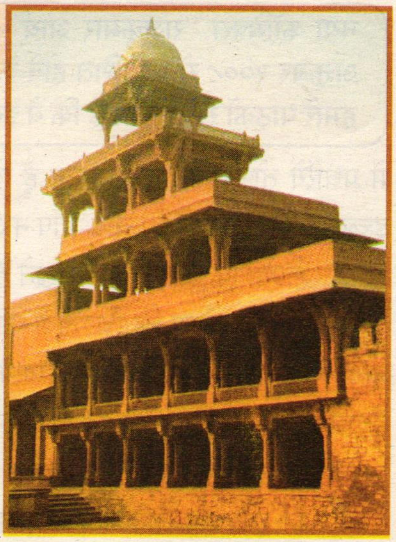

अपने पिता हुमायूं और मुगल आक्रान्ता बाबर के समान, अकबर (१५५६-१६०५) ने भी आगरा से शासन किया, जहाँ उसने एक किला का निर्माण किया। निःसन्तान अकबर ४० कि.मी. दूर एक गाँव सिकरी में गया जहाँ एक सूफी फकीर सलीम चिश्ती रहते थे। उन्होंने अकबर को एक पुत्र का आशीर्वाद दिया। शीघ्र ही अकबर की राजपूत रानी जोधा बाई ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसे फकीर के ऊपर सलीम नाम दिया गया जो बाद में जहाँगीर के नाम से विख्यात हुआ। सलीम चिश्ती के गुजर जाने के बाद अकबर ने सिकरी में उनके लिए एक मकबरा बनाया। यह लाल बलुआ पत्थर में बनाया गया था।

अकबर ने अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुए एक बहुत बड़ा क्षेत्र दक्कन पर विजय प्राप्त कर ली जो उसके लिए एक महान विजय थी। उसने अपनी विजय की स्मृति में एक शहर बसाने का निश्चय किया और इसके लिए उसने सिकरी गाँव में किला बनाने का स्थान चुना। उसका निर्माण १५७१ में आरम्भ हुआ। निर्माण समाप्त होने पर स्थान का नाम उसने फतेहपुर सिकरी अथवा विजय का शहर रखा। किले को ज्यादातर लाल बलुआ पत्थर से बनाया गया है, जो सलीम चिश्ती के मकबरे के पास है। मकबरे को दुबारा श्वेत संगमरमर में बनाया गया।

किले के परिसर में हैं दिवाने आम अथवा प्रजा का दरबार, दिवाने खास अथवा खास लोगों का दरबार, पंच महल यानी पाँच तल्ले का महलनुमा भवन, जामा मस्जिद जो भारत की बड़ी मस्जिदों में से एक है और जिसमें १०,००० नमाजी एक बार में बैठ सकते हैं, तथा बुलन्द दरवाजा, जिसे भारत में सबसे ऊँचा प्रवेश द्वार माना जाता है। यहीं से मस्जिद में जाने का रास्ता है। इस किले में जोधा बाई तथा बीरबल के लिए महल हैं। इसके अतिरिक्त चार सेतुओं द्वारा मुख्य भवन से जुड़ा चार चमन सरोवर है। केन्द्र में चबूतरे पर विख्यात संगीतज्ञ तानसेन बैठता था और अपने संगीत से बादशाह का मनोरंजन करता था।

फतेहपुर सिकरी को आम तौर पर अकबर की महत्वपूर्ण वास्तुकलात्मक पैतृक सम्पत्ति माना जाता है। किले के निर्माण में अनेक वास्तुकलात्मक शिल्पों का समन्वय है जिसमें मुस्लिम, हिन्दू, जैन तथा बौद्ध शैलियों का प्रभाव है। इसी ''असाधारण वास्तुकलात्मक सामूहिक प्रभाव'' से प्रेरित होकर यूनेस्को ने फतेहपुर सिकरी को १९८३ में विश्व विरासत स्थल के रूप में स्वीकार किया।

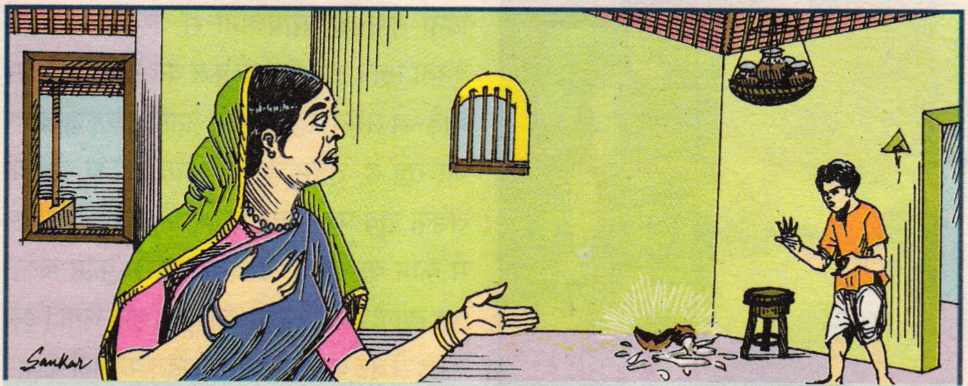

असली सुंदरता

मनोहर परमेश्वर दीक्षित के गुरुकुल में विद्याभ्यास कर रहा था। ऐसे तो नाम मनोहर था, पर देखने में बदसूरत और भद्दा लगता था। सहविद्यार्थी उसे नाटा और काला कहकर उसकी हँसी उड़ाया करते थे। उसने गुरु से शिकायत की तो उन्होंने कहा, "तुम उनकी बातों पर ध्यान मत दो। पढ़ाई पर अपना ध्यान केंद्रित करना।"

गुरु ने उसकी हँसी उड़ानेवाले सहविद्यार्थियों को नहीं डाँटा, उल्टे उसी की ग़लती निकाली। इससे वह बहुत नाराज़ हो गया, पर कर भी क्या सकता था। वह चुपचाप यह सब कुछ सह रहा था। क्रमशः उसमें हीन भाव बढ़ता गया। इस वजह से वह ठीक तरह से पढ़ भी नहीं पाता था। वह सदा सोचा करता था कि भगवान ने उसे ही क्यों बदसूरत बनाया। पढ़ाई की ओर वह बिल्कुल ध्यान नहीं दे पाता था। फलस्वरूप पढ़ाई में वह पिछड़ गया। छोटे-छोटे काम भी वह कर नहीं पाता था।

एक दिन गुरु की पत्नी ने उसे सिकहरे से मिट्टी का घड़ा उतारने को कहा। वह उसे ठीक तरह से पकड़ नहीं पाया, जिससे घड़ा गिर गया और टूट गया।

गुरु की पत्नी एकदम नाराज़ हो उठीं और कहा, "तुम्हारे दिमाग़ में मिट्टी ही मिट्टी है। घी के घड़े को सावधानी से उतारना भी तुम्हें नहीं आया। गाय-बैल चराने के भी लायक़ नहीं हो।"

उसकी इस गाली से मनोहर के मन को चोट लगी। दूसरे दिन सुबह किसी से बताये बिना वह गुरुकुल से चला गया। उसे यह भी मालूम नहीं था कि उसे कहाँ जाना है। बिना खाये-पीये वह एक दिशा में चलता गया। वह निराश और चिन्तित था।

वाणी श्री

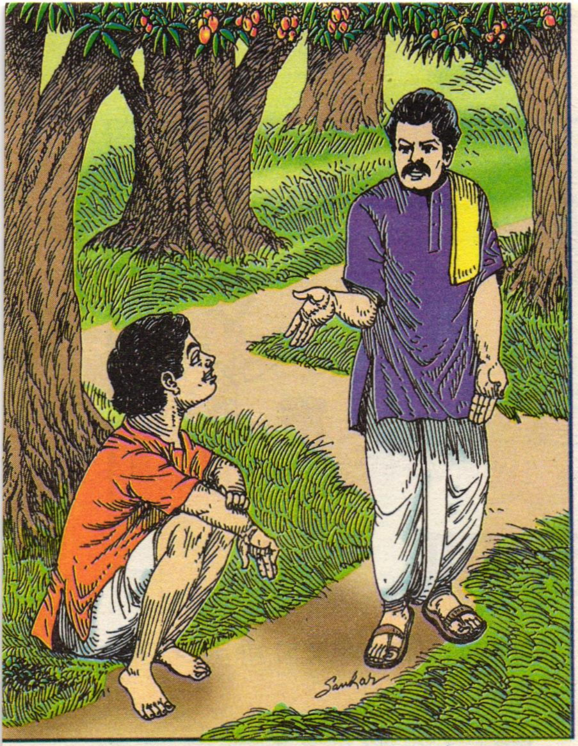

दुपहर को वह गाँव की सरहद पर आम के बग़ीचों के पास पहुँचा। वहाँ के कुएँ से पानी खींचा और उसे पीकर एक पेड़ के नीचे सो गया।

शाम को अधेड़ उम्र का एक आदमी वहाँ आया। ''तुम कौन हो? यहाँ क्यों सो रहे हो? वह भी शाम के वक़्त।'' उसने पूछा।

मनोहर ने बड़े ही दीन स्वर में कहा, ''मैं अनाथ हूँ। काम की खोज में दूर से आ रहा हूँ।''

''देखो, यह बगीचा मेरा है। मैं ही इसका मालिक हूँ। तीनों वक़्त खाना खिलाऊँगा। पेड़ों में अभी-अभी बौरियाँ निकल रही हैं। जब ये पक जायेंगी और इन्हें बेचूँगा, तब तुम्हें थोड़ी रक़म भी दूँगा। इसकी रखवाली सावधानी से करना होगा।'' उस आदमी ने कहा।

मनोहर अब माली का काम करने लगा। कुछ दिनों तक वह सावधानी से उसकी रखवाली करता रहा। अब बौरियाँ फल बन गयीं। पर, इस थोड़े-से समय में उसे लगने लगा कि वह जो काम कर रहा है, तुच्छ है। जब कि उसकी उम्र के लड़के खूब पढ़-लिखकर किसी राजा के दरबार में काम कर रहे हैं, उसे यह ओछा काम करना पड़ रहा है। वह मन ही मन दुखी होने लगा। इस वजह से वह काम पर ध्यान केंद्रित कर नहीं पाया। मालिक ने उसके इस रुख को देखा और पूछा, ''अरे नाटे, काम में इतनी ढिलाई क्यों दिखा रहे हो? सावधान रहना और काम करना।''

दिन में ही एक दिन वह झपकी लेने लगा। इस मौक़े का फ़ायदा उठाकर चोर पके आमों को तोड़ कर ले गये। मालिक को जब यह मालूम हुआ, तब उसने क्रोध भरे स्वर में उससे कहा, ''साल भर की मेहनत की चोरी करके चोर ले गये। तुम कोई भी काम करने के लायक नहीं हो। इसी क्षण यहाँ से चले जाओ।'' फिर उसने मनोहर को खूब पीटा और भगा दिया।

दुखी मनोहर घूमता ही रहा। उसे नहीं मालूम कि अब क्या करूँ। आख़िर सिरिपुर नामक एक छोटे शहर में गया। दिन भर घूमता रहा और शाम को थकावट और भूख के मारे एक घर के सामने बेहोश होकर गिर गया। उस घर का मालिक एक सुनार था। शहर के प्रमुखों के लिए गहने बनाता था। उसने मनोहर के मुँह पर पानी छिड़का और अब वह होश में आया। उसकी हालत पर दया दिखाते हुए उस सुनार ने कहा, ''मेरे कामों में

सहायता पहुँचाओ तो तुम्हें गहने बनाना सिखाऊँगा। अब आराम से रह सकते हो। दिल छोटा मत करना।''

मनोहर अब सुनार के यहाँ काम में लग गया। कुछ ही दिनों में उस काम में उसकी अभिरुचि नहीं रही। हर रोज़ उसकी दुकान को साफ करना, अंगीठी में कोयला डालना और आग सुलगाना उसका काम था। गहने बनाने का काम उसे सिखाया नहीं जाता था। उसने एक दिन मालिक से इसकी शिकायत भी की तो उसने कहा, ''तुम्हें कोई भी काम करना नहीं आता। फिर गहने क्या बनाओगे? चुपचाप जो काम सौंपा वही करो।''

इससे मनोहर निराश हुआ। वह बेचैन हो गया। मालिक ने यह जाना और उससे कड़वे स्वर में कहा, ''तुम्हारा रूप ही नहीं, मन भी भद्दा है। यह काम तुमसे नहीं होगा। कहीं और काम देखो।'' यों कह कर मनोहर को भेज दिया।

मनोहर अपनी दुःस्थिति पर चिंतित होते हुए गाँव के बाहर के वेणुगोपाल स्वामी के मंदिर में जाकर बैठ गया और भगवान को प्रणाम किया। उसने अपनी दुःस्थिति भगवान से बतायी, पुजारी का दिया प्रसाद भी नहीं खाया। पास ही के नदी के किनारे गया। वहाँ उसने एक साधु को देखा, जो उसी की ओर चले आ रहे थे। ''पुत्र, इतने बेचैन क्यों हो? लगता है, बहुत दुखी हो। किस कष्ट में फंस गये हो?'' बड़े प्यार से साधु ने पूछा।

मनोहर ने अपनी दुःस्थिति का कारण बताते हुए कहा, ''पता नहीं, भगवान ने मुझे क्यों नाटा और काला बनाया। सहपाठी मुझे बदसूरत व भद्दा कहकर मेरी हँसी उड़ाते थे, इसलिए पढ़ भी नहीं

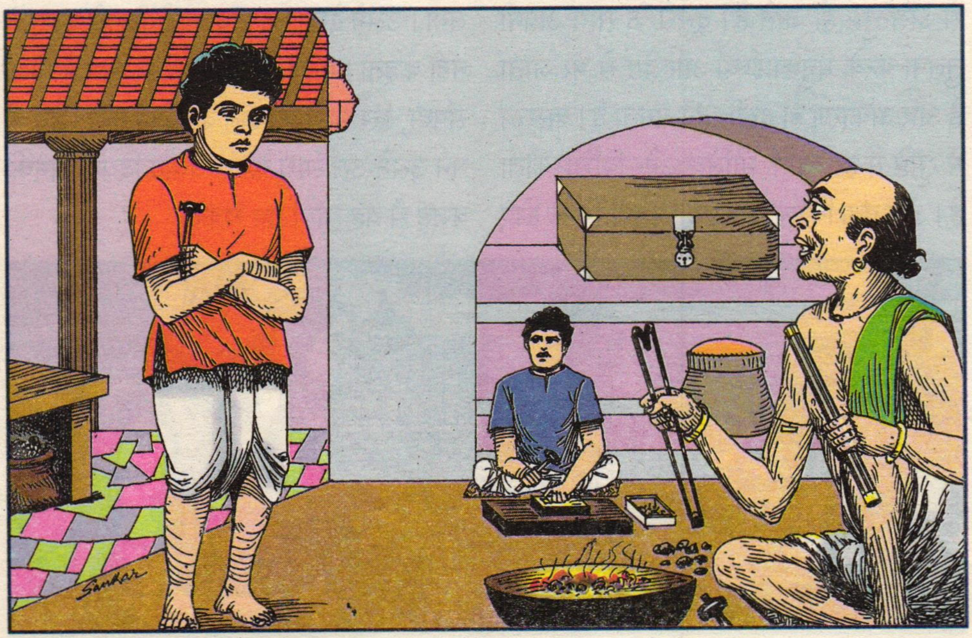

पाया। जीवन दूभर हो गया है। आप ही को मुझे राह दिखानी होगी।''

''पुत्र, तुम्हें किसने बदसूरत कहा? जिन्होंने तुम्हारा अपमान किया, वे ही मानसिक रूप से भद्दे हैं। तुममें आख़िर ऐसी क्या कमी है? दुनिया में ऐसे कई अंधे, लूले, लंगड़े हैं, जो कोई न कोई विद्या सीखकर जीवन सुखपूर्वक बिता रहे हैं। भगवान ने तुम्हें सब कुछ दिया है। तुम दूसरों से अपनी तुलना करके, अपने को हीन मानकर कष्ट झेल रहे हो।

''सृष्टि में कोई भी जंतु या पक्षी अपनी तुलना दूसरे से नहीं करता और दुखी नहीं होता। तुम जैसे मनुष्यों में ही ऐसे लक्षण दिखायी देते हैं। आराम से जीवन काटने भर साधन रहते हुए भी वे दूसरों की सम्पदा देख कर दुखी और अपने जीवन से असन्तुष्ट हो जाते हैं। दूसरों के साथ अपनी तुलना करके मनुष्य ईर्ष्या और द्वेष से भर जाता है और अकारण ही दुखी रहने लगता है। वास्तव में सृष्टि में हर व्यक्ति मौलिक और विशिष्ट होता है। और एक विशेष प्रयोजन सिद्ध करने के लिए उसकी रचना की जाती है। यह समझ लेने पर किसी के साथ अपनी तुलना करना व्यर्थ लगने लगता है। तुम्हारे दुख का यही कारण है। खूब पढ़ो, अपने अन्दर छिपी विशेष योग्यताओं का विकास करो और सुखी जीवन बिताओ। फिर से गुरुकुल में जाओ और एकाग्रतापूर्वक पढ़कर विद्या का अभ्यास करो। सभी संपदाएँ तुम्हें ढूँढ़ती हुई आयेंगी।''

मनोहर ने साधु को नमस्कार किया, अपने आँसुओं को पोंछ डाला और वह गुरुकुल की ओर चल पड़ा। बिना बताये जाने के लिए गुरु से क्षमा माँगी। अब वह मन लगाकर विद्या का अभ्यास करने लगा। सहपाठियों ने उसका अभिनंदन किया और गुरु ने उसे आशीर्वाद दिया।

अब योग्य व शिक्षित होकर बड़ी नौकरी करने लगा। उसने देखा कि अब कोई भी उसे बदसूरत नहीं कहता। मनुष्य की असली सुंदरता है विद्या संपदा, इस सत्य को अब वह जान गया। मन ही मन उसने उस साधु को धन्यवाद दिया, जिनकी वजह से वह योग्य बन सका।

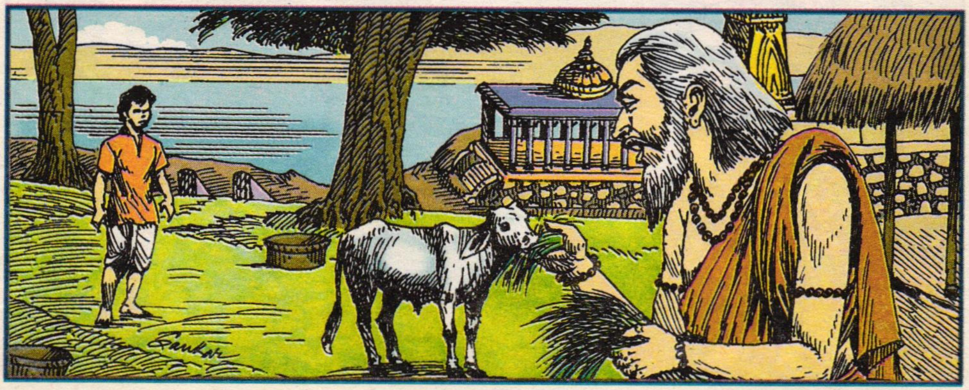

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-९

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

इस महीने में प्रश्नोत्तरी भारतीय संविधान पर आधारित है।

**यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।*

तुम्हें क्या करना चाहिये: १. एक कागज पर उत्तरों को लिखो; २. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो; ३. लिफाफे पर लिखो **चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-९**; ४. अपनी प्रविष्टि समय पर पोस्ट कर दो जो हमें ३० अक्तूबर २००८ तक तुम्हारी प्रविष्टि हमें मिलनी चाहिये। उत्तर दिसम्बर २००८ के अंक में प्रकाशित होंगे।

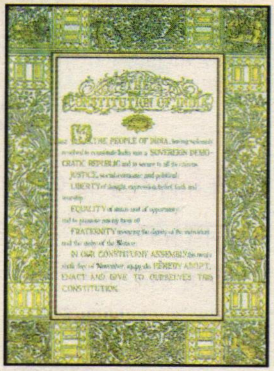

१. हमारे संविधान ने दूसरे देशों के संविधानों से कुछ विचारों का अनुकरण किया है। हमलोगों ने कहाँ से राष्ट्रपति के चुनाव की विधि अपनाई है?
२. हमलोगों ने शासन की संसदीय प्रणाली की नकल कहाँ से की है?
३. भारतीय संविधान की प्रकृति या स्वरूप क्या है?
४. राष्ट्रपति के लिए उम्मीदवार की निम्नतम आयु सीमा क्या है?
५. भारतीय संविधान तथा ब्रिटेन के संविधान में क्या अन्तर है?
६. क्या किसी अन्य देश का नागरिक भारत का राष्ट्रपति बन सकता है?
७. क्या राज्य सभा में वित्त विधेयक पेश किया जा सकता है?
८. कब जन-गण-मन को राष्ट्र गान के रूप में स्वीकृत किया गया?

बच्चे अख़बार की सुर्खियों में

नेशनल चैम्पियन

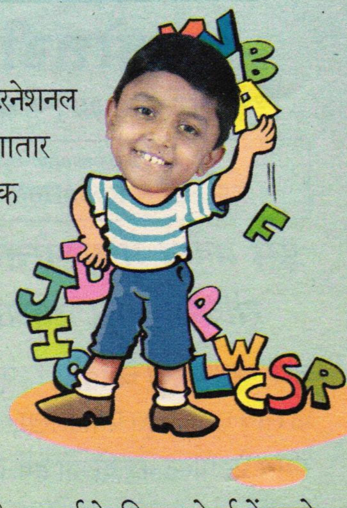

आठ वर्षीय निर्मल पलानी अप्पन ने चेन्नई में जून में आयोजित मार्स इण्टरनेशनल स्पेलिंग बी कण्टेस्ट के कैटेगरी २ (तीसरी और चौथी कक्षाएँ) में लगातार दूसरे वर्ष चैम्पियनशिप जीत ली। वह उड़ीसा में भुवनेश्वर के एक केन्द्रीय विद्यालय में चौथी कक्षा का छात्र है। पिछले वर्ष, जब वह तीसरी कक्षा में था, उसने गोवा में प्रतियोगिता में भाग लिया और कैटेगरी एक में चैम्पियनशिप जीती। वह स्कूल, जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में प्रथम आने के कारण अब मुम्बई में आयोजित होनेवाली अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेगा। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए उसे कम से कम ४,००० अंग्रेज़ी शब्दों की वर्तनी तथा उनके अर्थों को जानने की आवश्यकता पड़ेगी। मुम्बई के निकट पोवई में पढ़ते समय वह गणित का ज्ञान बढ़ाने के लिए सिप अकादमी में दाखिल हुआ। मुम्बई में आयोजित सिप प्रोडिजी २००७ प्रतियोगिता में पाँच मिनट में करीब १०० प्रश्नों को हल करके वह सेकेण्ड रनर-अप आया।

शतरंज की विलक्षण प्रतिभा

भारत में शतरंज की प्रतिभाएँ बहुत हैं, किन्तु ७ वर्ष की आयु में तीन विश्व-स्तरीय प्रतियोगिताओं में विजय प्राप्त करना सम्भवतः एक विशिष्ट उपलब्धि है। मुथयाल बंसी प्रतिमा से मिलिये जो देश की नवीनतम शतरंज विज़ किड मानी जाती है। आन्ध्र प्रदेश की इस बालिका ने केवल दो वर्ष पूर्व शतरंज खेलना शुरू किया। पिछले वर्ष, प्रतिमा ने आन्ध्र प्रदेश भर में ६ वर्ष से नीचे तथा ९ वर्ष से कम की कैटेगरी में पहला स्थान प्राप्त किया। इस सफलता के कारण उसे टर्की के अन्ताल्या में आयोजित वर्ल्ड यूथ चेस चैम्पियनशिप के लिए भेजा गया, जहाँ वह विश्व भर में (बालिका) २००७ की सर्वोत्तम प्रतिभा मानी गई। इस वर्ष के आरम्भ में उसने श्रीलंका के कैण्डी में आयोजित एशियन स्कूल्स चेस चैम्पियनशिप में सभी आठ राउण्ड्स में विजय हासिल की। प्रतिमा ने वर्ल्ड स्कूल्स चेस चैम्पियनशिप, सिंगापुर में ७ से कम की कैटेगरी में सभी ९ राउण्ड्स जीत लिये और स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

आप के पन्ने

तुम्हारा परिवेश

सूक्ष्म सर्दी का सुराग

तुम्हारे सारे बदन में दर्द है। तुम्हारी नाक बह रही है और लगातार छींकते जा रहे हो। दूसरे शब्दों में तुम्हें जुकाम है। दुनिया भर के डॉक्टरों के लिए वह साधारण सर्दी है। यद्यपि इसे साधारण सर्दी अथवा 'कॉमन कोल्ड' कहा जाता है, फिर भी इसकी असाधारण क्षमताओं के कारण इससे मुक्त होना या इससे बचना करीबन असम्भव हो जाता है। एक शोध के अनुसार कम से कम २० प्रकार के विषाणु होते हैं जिनसे सर्दी या जुकाम होता है।

सर्दी से बचने के लिए कोई टीका नहीं है और इसके लिए निर्धारित अधिकांश दवाइयाँ 'ऐण्टिहिस्टामाइन्स' होती हैं जो आक्रमणकारी विषाणु के प्रति शरीर की एलर्जिक प्रतिक्रिया को कम करती हैं। ये रसायन अवरोध तथा जुकाम से छुटकारा दिलाते हैं।

विज्ञान तुम्हारे लिए

फोटोकॉपियर कैसे काम करता है?

फोटोकॉपियर अथवा जिरोक्स छवि को स्थानान्तरित करने तथा इस प्रकार एक प्रति निकालने के लिए स्टेटिक विद्युत के सिद्धान्तों का प्रयोग करता है। किसी दस्तावेज़ की नकल निकालने के लिए पहले इसे जिरोक्स मशीन में रखा जाता है। ऐसा करने के लिए ढक्कन को उठाया जाता है और दस्तावेज को शीशे के स्वच्छ पटल पर मुँह के बल रखा जाता है। जब बत्ती जलाई जाती है, तो प्रकाश दस्तावेज़ से टकराता है और घूमते हुए ड्रम पर लेन्स से होकर वापस प्रतिबिम्बित होता है।

जब ड्रम छवि के साथ घूमता है तब निगेटिवली चार्ज्ड 'टोनर' अथवा ब्लैक ग्रेफाइट के चूर्ण से यह लेपित हो जाता है। यह ग्रेफाइट प्लास्टिक से लेपित कर दिया जाता है जिससे यह कागज से चिपक सके। जब लेपित ड्रम कागज से होकर गुजरता है, तब छवि कागज पर स्थान्तरित हो जाती है। छवि को कागज के साथ चिपकाने के लिए इसे गर्म रोलर्स से ले जाया जाता है जो प्लास्टिक लेपन को पिघलाते हैं और छवि को कागज पर अमिट बनाते हैं। जिस फोटो कॉपी में छवि को ठीक से बैठाया नहीं जाता, वह धब्बेदार हो जाती है और तुम्हारी उंगलियों पर काले दाग लग जाते हैं।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

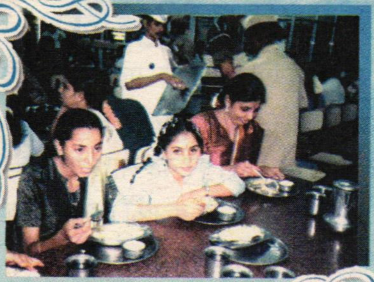

K.S. SIVARKKAMANI

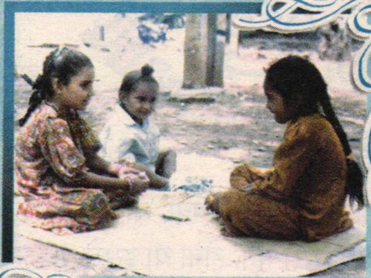

TATA NARAYANAMURTHY

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
जे वि एल प्लाज़ा, छठी मंजिल, नं. ६२६(पु.नं.५०१), अण्णा सालई, तेनाम्पेट, चेन्नई - ६०० ०१८.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

अनूप उत्तमराव चौधरी
C/o. श्री उ.रा. चौधरी
प्रधान डाकघर
औरंगाबाद-४३१००१
महाराष्ट्र

विजयी प्रविष्टि

छोटी सी बहना लगे प्यारी-प्यारी।
नटखट कन्हैया खाये माखन चोरी-चोरी॥

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तर:

१. रावण, कुम्भकर्ण तथा मेघनाद; २. कुम्भ मेला; हरद्वार, उज़जैन, प्रयाग तथा नासिक; ३. प्रह्लाद तथा होलिका जो प्रह्लाद के पिता हिरण्यकश्चप की बहन थी; ४. इसी दिन १६९९ में गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा की स्थापना की थी; ५. गणेश (गणेश चतुर्थी) तथा दुर्गा (दुर्गापूजा)।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited,
JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501), Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018. **Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)**

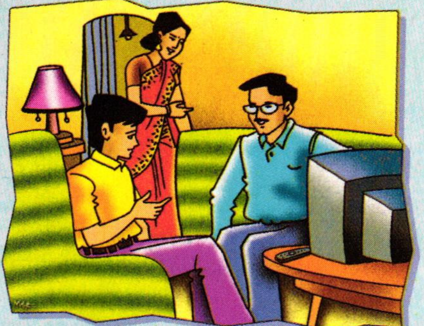

राज्य परिवहन के उपयोग के लाभ

शंकर अपने पिता के साथ समाचार देख रहा था। ''पेट्रोल के दाम फिर बढ़ गये। मैं समझता हूँ कि मुझे ऑफिस जाने के लिए कार की जगह पैदल जाना शुरू कर देना चाहिये!'' उसके पिता बुदबुदाये।

शंकर मुस्कुरा पड़ा और बोला ''इसमें आश्चर्य की बात क्या है? हमलोगों को अर्थशास्त्र की कक्षा में यह सिखाया गया कि जब माँग अधिक हो और आपूर्ति की मात्रा में वृद्धि न हो तब कीमतें बढ़ जाती हैं।''

''और तुमने क्या-क्या सीखा, मेरे प्यारे अमर्त्य सेन?'' उसके पिता हँस पड़े।

''और फिर पापा, आप की ऑफिस के पास तक जाने के लिए यहाँ से सीधी बस है, फिर भी आप कार से जाना पसन्द करते हैं। जरा सोचिये, यदि आप कल से बस द्वारा जाने का निश्चय करें तो आप कितना पेट्रोल और पैसा बचायेंगे?''

''परन्तु शंकर, मार्ग में वाहनों की भीड़भाड़ के कारण बस से ऑफिस तक जाने में बहुत समय लग जाता है!''

''वाहनों की भीड़भाड़ का कारण है निजी वाहनों की संख्या में वृद्धि। क्या आप जानते हैं कि सिर्फ दिल्ली में लाल बत्ती पर इन्तजार करने में प्रति वर्ष ९९४ करोड़ रुपये का इन्धन नष्ट हो जाता है? दिल्ली के पी सी आर ए तथा सी आर आर आई ने एक अध्ययन द्वारा यह पता लगाया है! अब आप अन्य भारतीय नगरों की स्थिति की कल्पना कर सकते हैं!'' शंकर ने बताया।

''तुम्हारे दादा राज्य परिवहन के पक्के समर्थक थे'', उसके पिता सोचकर बोले, ''जब मैं छोटा था, तब बस से जाया करता था। उस समय मेरा सपना था कि मेरी अपनी कार हो!''

''पापा, कार फैशन की चीज अवश्य है परन्तु इसमें स्वार्थ है, क्योंकि इसमें बिना जरूरत के हम पेट्रोल खर्च करते हैं। बस से जाने के लिए हर रोज के समय से थोड़ा पहले घर से निकलना होगा।'' शंकर ने कहा।

''तुम ठीक कहते हो। मैं कल से बस से जाना शुरू करूँगा और अपने सहकर्मियों को भी ऐसा ही करने के लिए उत्साहित करूँगा!'' पिता बोले।

आप भी अपने मित्रों तथा परिवार के सदस्यों को बताइये और इन्धन-संरक्षण के बारे में सन्देश का प्रसार कीजिए। दूरवर्ती क्षेत्रों में जहाँ बसं की सुविधा कीजिए। दूरवर्ती क्षेत्रों में जहाँ बसों की सुविधा उपलब्ध नहीं है, कुछ लोग मिलकर वाहन निकाय या पूलिंग की प्रणाली अपना सकते हैं।

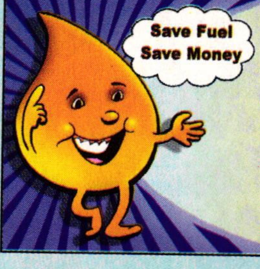

Dear Children,
Write your suggestions for using the public transport system in the best possible way at the PCRA address given alongside.
The best suggestions will win attractive prizes!

Name..

Age.................................Class..................

Address...

....

e-mail..

MINISTRY OF PETROLEUM AND NATURAL GAS

PCRA PETROLEUM CONSERVATION RESEARCH ASSOCIATION

Additional Director (EC),
Sanrakshan Bhawan, 10, Bhikaiji Cama Place,
New Delhi 110066.
E-mail : pcra@pcra.org

AMAMA (Hindi) October 2008 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
ised to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08